"सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते"

राजस्थानी भील-गीत

भाग-२

सम्पादक
गिरिधारीलाल शर्मा

प्रकाशक:—
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

प्रथम संस्करण

मूल्य २॥)

प्रकाशकः—

अध्यक्ष

साहित्य-संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

प्रथम संस्करण

अक्टूबर १६५६

मूल्य—२॥) दो रुपया आठ आना

मुद्रकः—

व्यवस्थापक

विद्यापीठ प्रेस, उदयपुर

राजस्थानी भीलों के लोक गीत

भाग २.

गीत परिचय

राजस्थान के लोक-कथा-काव्य में 'ढोला और मारुणी' की कहानी सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। इस कथा को दोहों और गीतों में बांधा गया है। कुछ विशेष अवसरों पर इसे बहुत अधिक गाया जाता है। जिस प्रकार राजस्थानी-साहित्य में इसका वर्णन मिलता है, उसी प्रकार कुछ भिन्न रूप में भीली-चैत्रों में गाया जाता है। भीली-बोली में जब इसे हम सुनते हैं तो मुग्ध हो जाते हैं। स्वर, ताल और लय भीलों का अपना है। सामूहिक रूप से गाते हुए भील-स्वयं तो तन्मय-हो ही जाते हैं किन्तु श्रोता भी रसानुभूति से भर जाता है।

सम्पूर्ण गीत हमें प्राप्त नहीं हो सका किन्तु जितना मिल सका है; उससे इसकी शैली और अभिव्यक्ति का परिचय मिल जाता है। मारुणी के अनुकरणीय प्रेम और ढोला की वीरता का दिग्दर्शन इस गीत से हो जाता है। सम्पूर्ण कथा गीत-रूप में प्राप्त नहीं हो सकी है, केवल इसका उत्तरार्ध ही हमें मिला है-इसलिये कथा का पूर्वार्ध जिस रूप में भीलों में प्रचलित है-उसे हम गद्य में यहाँ दे रहे हैं-उत्तरार्ध गीतों में है ही।

कथा का पूर्वार्ध इस प्रकार है:—

एक सुन्दर झील थी; वहाँ एक हँस रहता था। हँस की मित्रता बगुले से हो गई। बगुले ने हँस को अपने निवास-स्थान पर आने का निमंत्रण दिया। निमंत्रण के अनुसार हँस वहाँ पहुँचा। उस समय बगुला एक पैर के सहारे खड़ा हुआ पूर्व की ओर टक टकी लगाये देख रहा था। हँस ने बगुले को इस स्थिति में देखकर सोचा कि यह सदैव इसी प्रकार खड़ा रह कर ईश्वर-भजन करता होगा, इसलिये इसका ध्यान भंग नहीं करना चाहिये। वह चुपचाप एक ओर जाकर बैठ गया और बगुले के ध्यान भंग की प्रतीक्षा करने लगा।

जहाँ हँस बैठा था, उसके पास ही दो चूहे के बच्चे सर्दी से ठिठुर रहे थे। हँस को यह देख कर दया आगई और उन बच्चों को सर्दी से बचाने के लिये अपने पंखों के नीचे कर लिया। थोड़ी देर बाद जब हँस वहाँ से उड़ने लगा तो उड़ नहीं सका। चूहों ने अपने स्वभाव के अनुसार हँस के पङ्ख काट डाले। उसी समय बगुला एका एक मछली पर झपटा और उसे पकड़ कर खा गया। हँस ने यह देखा तो बगुले के प्रति उसका मन घृणा से भर गया और उसी समय उसने एक दोहा कहा—जिसका आशय इस प्रकार है:— "दीखने में भोले और स्वच्छ वर्णी बगुले को एक पांव पर सिद्धि के लिये खड़े हुए देख कर मैंने समझा कि यह राम का भक्त है, किन्तु यह तो कपटी और कुटिल निकला।"

इसी समय घूमता हुआ राजा नल उधर आ निकला। हँस को पङ्ख हीन पड़ा देख उसे करुणा आगई। उसने उसे उठा कर अपने हाथी पर बिठाया और घर ले आया। हँस ने कई दिनों तक कुछ नहीं खाया और कुछ नहीं पिया; इससे राजा अत्यन्त चिन्तित रहने लगा। एक बार हँस रानी के पलङ्ग पर पड़ा हुआ मोतियों का हार खा गया तब,

राजा ने समझा कि यह केवल मोती ही खाता है। उस दिन से वह उसे मोती खाने को देने लगा।

कुछ दिनों बाद हँस स्वस्थ होगया। तब उसने राजा से कहा कि आपने मेरे साथ जो उपकार किया है, उसके बदले में मैं आपको अपने पङ्खों पर बिठा कर सैर कराना चाहता हूँ। राजा हँस के पङ्खों पर बैठ गया। हँस उड़ता हुआ समुद्र के बीच एक टापू पर जा कर उतरा। टापू के राजा ने नल का बड़ा स्वागत किया। कुछ दिन रहने से टापू के राजा की कन्या नल पर मोहित होगई और उनका विवाह हो गया।

इस कन्या का सम्बन्ध पहले इन्द्र के साथ हो चुका था। जब इन्द्र को राजा नल का कन्या के साथ का सम्बन्ध ज्ञात हुआ तो वह अत्यन्त क्रुद्ध हुआ और उसने प्रतिज्ञा की कि एक युग तक–अर्थात् १२ वर्ष तक राजा नल के राज्य में नहीं बरसूंगा। परिणाम स्वरूप नल के राज्य में दुर्भिक्ष पड़ा। नल राज्य छोड़ कर राजा पिंगल के यहाँ चला गया। नल और पिंगल दोनों की रानियां गर्भवती थीं। दोनों ने निश्चय किया कि एक के लड़का और दूसरी के लड़की हुई तो दोनों का परस्पर विवाह करा देंगे। सौभाग्य से समय पर राजा नल की रानी ने 'ढोला' पुत्र को जन्म दिया और पिंगल की रानी ने 'मारूणी' नामक पुत्री। शिशु अवस्था में ही पूर्व निश्चयानुसार दोनों का विवाह-संस्कार थालियों में बिठा कर कर दिया गया। राजा नल के राज्य में जब सुकाल हुआ और वृष्टि होगई तो वह फिर अपने राज्य में रानी और पुत्र सहित आगया।

शिशु अवस्था में ही राजा नल और उसकी रानी का देहान्त होगया। उधर पिंगल और उसकी रानी भी चल बसे। दोनों के विवाह की बात विस्मृत होगई और ढोलाजी का विवाह दूसरी कन्या से होगया। 'मारूणी' के विवाह की भी उधर तयारियां होने लगी तब एक वृद्धा दासी, जो ढोला और मारूणी के विवाह की बात को

जानती थी, ने उसके पूर्व विवाह की बात बता दी। तब मारूणी ने ढोलाजो को पत्र लिखा—यहीं से गीत का आरम्भ होता है:—

गीत

ढोलाजी नानोरा परणाविया — सू. ढोला नेड़ी
ढोलाजी तल जतरा ढोलोजी — ,,
ढोलाजी मूंग जतरी मारुणी — ,,
पिंगलगढ़ परणाविया — ,,
नरवलगढ़ थारु राज — ,,
ढोलाजी रे परणी पीयर मेली — ,,
ढोलाजी रे थालियां मांये परणाविया— — ,,
ढोलाजी रे भर जोवनियां मांय — ,,
ढोलाजी रे कागदियां नो टोटो — ,,
ढोलाजी रे मूं मारुणी भर जोवनियां मांई— — ,,
ढोलाजी रे आणे वेला आवजो — ,,
ढोलाजी रे जोड़ी रे जोड़ीना — ,,
ढोलाजी रे असवारी ना ऊँटिया — ,,
ढोलाजी रे वेलुरां रे आवजो — ,,
ढोलाजी रे ऊँटिड़ा मंगाड़े रे — ,,
ढोलाजी रे राहे का तेड़ावे — ,,
ढोलाजी रे सपड़ासी मोकलावो — ,,
ढोलाजी रे देशां ने परदेशां — ,,
ढोलाजी रे रांहेका हांडा जोतो फरे — ,,

ढोलाजी रे सपड़ासी धामा दौड़े ढोला सनेड़ी
थो सपड़ासी आवे धामा दौड़े ,,
ढोलाजी रे राहेका धामादौड़े ,,
ढोलाजी ऊंटिज्या लेई ने आवे ,,
ढोलाजी रे आगियॉ ठेठा ठेठ ,,
ढोलाजी रे राई आंगणा वांधे ,,
ढोलाजी रे सोवे हरीखा ,,
ढोलाजी रे नहीं रे घड़ी री जेज ,,
ढोलाजी रे पीली रे परभातां ,,
ढोलाजी रे ऊँटिया बोलावो ,,
ढोलाजी रे काठियँा मंडावो ,,
ढोलाजी रे होई ने हरीखा ,,
ढोलाजी रे आणु लेवा जाए ,,
ढोलाजी रे पिंगलगढ़ रा राजे ,,
ढोलाजी रे वाग ढीली सोड़ो ,,
ढोलाजी रे पाग काठी बांधो ,,
ढोलाजी रे तीखा रालो ताजणां ,,
ढोलाजी रे जांईरे लांबा मारगां ,,
ढोलाजी रे दनरा डावाँ डूंगरा ,,
ढोलाजी रे सोवा सोवन मलिया ,,
ढोलाजी रे पिंगलगढ़ तो सेटी है ,,
ढोलाजी रे दन तो जातो रेग्यो ,,

ढोलाजी रे ताते नीचा उतरो हूला सूनेड़ी
ढोलाजी रे पग में खीला काड़ो ,,
ढोलाजी रे बीजू हारना खीला ,,
ढोलाजी रे काटा भीड़ो ओड़ा ,,
ढोलाजी रे ढीली मेलो नकेलां ,,
ढोलाजी रे तीखा रालो ताजणां ,,
ढोलाजी रे दनड़ो सतां मेलु ,,
ढोलाजी रे ऊंटड्यां धामा दौड़े ,,
ढोलाजी रे गीया ठेठा ठेठ ,,
ढोलाजी रे क्यां डेरा दियो ,,
ढोलाजी रे बागां री वावड़ियां ,,
ढोलाजी रे मेलां मालुम करावो ,,
ढोलाजी रे ढोला आणे आयो ,,
ढोलाजी रे कोरा ने कागदियां लखो ,,
ढोलाजी रे चीठी मेला मोकलो ,,
ढोलाजी रे मेला चीठी गई रे ,,
ढोलाजी रे हारो मलवा आवे ,,
ढोलाजी रे रामा कसनी करे ,,
ढोलाजी रे जीजाजी हांमलो मारी वातां ,,
ढोलाजी रे कसूंबो काढ़ो ,,
ढोलाजी रे जीजाजी कसूंबो वपरावो ,,
ढोलाजी रे ऊंटे कवड़ा लीमड़ा नाको ,,

ढोलाजी रे हांमलो मारी वातां.. ढोला सूनेड़ी
ढोलाजी रे ऊंटियां नहीं खावे रे कवड़ा लीमड़ा ,,
ढोलाजी रे लावो नागर वेल ,,
जीजाजी रे हांमलो मारी वातां.. ,,
जीजाजी रे हकार आपां जां ,,
रे हालाजी क्यां हकार आवे ,,
रे जीजाजी नार ते मानवी मारे ,,
रे हालाजी मू एकलो हकार जाउं ,,
रे हालाजी क्यां नार आवे ,,
रे जीजाजी गोयरां वाली सोकी नार आवे ,,
रे ढोलाजी विहुलाने हिड्यां ,,
रे ढोलाजी सोकी माथे आया ,,
रे ढोलाजी ओदी वैठा ,,
रे ढोलाजी डनड़ो डूबी गियो ,,
रे ढोलाजी आधी ने मजरातां ,,
रे ढोलाजी नार ते बोलतो आयो ,,
रे ढोलाजी ढीली गोली वाई रे ,,
रे ढोलाजी नार मरिगियो ,,
रे ढोलाजी साकर खबर आली ,,
रे ढोलाजी मारुणी नहीं जाणी ,,
रे ढोलाजी मारुणी खबर लागी ,,
रे ढोलाजी अड्डी नोकरी गिया ,,

रे वाईजी रे आवे जीजा पाछा नहीं ”
रे वाईजी रे घणां आगतां थाई गियां ”
रे वाइजी रे भोजनियां तैयार करो ”
रे वाईजी थालियां भोजन गालो ”
रे वाईजी फेटियां ने खोलो ”
रे वाईजी गेणुला ने पेरो ”
रे वाईजी रे पाका र मसरु ”
रे वाईजी पाका मसरु पेरो ”
रे वाईजी रे वेहला हिंडिया ”
रे वाईजी रे आघी ने मजरातां ”
रे वाईजी रे जाए रे धामा दौड़े ”
रे वाईजी रे गिया ठेठा ठेठ ”
रे वाईजी रे गोयरांवाली सोकी ”
ढोलाजी रे आवतड़ी ने देखी ”
ढोलाजी रे डाकण है के जोगण ”
ढोलाजी रे आणियें तो वतलावो ”
ढोलाजी रे कूंण आची रेशुं रे ”
ढोलाजी रे वाट मां कुतरु ”
ढोलाजी रे टाली ने आवजो ”
रे वाई रे क्यां जाए क्यां आवे ”
रे वाईरे गेला में कुतरू पड़्युं है ”
रे वाई रे तू वीही तो राके हके ”

ढोलाजी रे मूं तो मारुणी वाजूं ,,
ढोलाजी रे नई डाकरण नई जोगण ,,
ढोलाजी रे मारुणी आधी ने मज़राता ,,
ढोलाजी रे क्यूं आव्यां ,,
रे धणीजी मारा भोजन लेइने आवी ,,
रे धणीजी मारा भोजन जीमी लीजो ,,
रे ढोला जी हाथ सूण्डा धोजो ,,
ढोलाजी भोजन जीमी लीदा ,,
ढोलाजी जीमी ने करी ने ,,
रे मारूणी मनसोवा[२४] नी वातां ,,
रे मारूणी सोलो दलनी वातां ,,
रे मारूणी मूं तो आखै आयो ,,
रे मारूणी हालो ठगियो आयो ,,
रे मारूणी काले मू ते जऊँ रे ,,
रे मारुणी आवे के नी आवे ,,
रे धणी म्हांरा भला घरना मानवी ,,
रे धणी म्हांरा साना[२६] खज्ये जावां ,,
रे धणी म्हांरा राजी खुसी जावां ,,
रे धणी म्हांरा मेंलां वेला आवो ,,
मारूणी वेहु लीनी आवे ,,
रे ढोला जी रे पीली ने परभातां ,,
रे ढोला जी रे नार नी मूंछां वाड़ो ,,

रे ढोलाजी मूंछां खल्ये मेलो ,,
रे ढोलाजी वागां नी वावड़ियाँ ,,
रे ढोलाजी ऊँटिड़ो संभाल्यो ,,
रे ढोलाजी राई आंगणा मांई जाय रे ,,
रे ढोलाजी ऊँटीड़ो ने वांधो ,,
रे हाराजी रे रामा कसनी करे ,,
रे ढोलाजी रे जाजम नखावो[६०] ,,
रे हाराजी जाजमां बेहो[६१] ,,
रे जीजाजी तमां[६२] जाजमां बेहो ,,
रे हारोजी वंद बोतलां लावो ,,
हारोजी परदा वारी बोतलां लाव्यो ,,
रे ढोलाजी दारू हारू पीवे ,,
ढोलाजी रे जेर[६३] पावे ,,
ढोलाजी सक्या[६४] थाज्या[६५] ,,
रे मारूणी गोखड़े वैठ ,,
रे मारूणीए खबर लागी ,,
रे मारूणी पोतायें[६७] जेर पाज्यो ,,
रे मारूणी मरदानो सरपाव[६८] पेरे ,,
मारूणी धोलां कपड़ा पेरे ,,
मारूणी विहुलिनी रूणेगी ,,
रे मारूणी ऊँटिया संभालो ,,
रे मारूणी काठी अड़ावी ,,

मारूणी सोरौ[70] वुलावे ”
मारूणी सांभलो म्हारी वातां ”
रे सोरौँ तमाएँ पईसा आलूं ”
रे सोरा तमां हाको[71] करो ”
रे सोरा ऊँट तो छूटियो ”
रे ढोलाजी सोरौँ हाका करे ”
रे ढोलाजी ऊँट तो जातो रेग्यो ”
रे ढोलाजी बेहुला ने ऊठिया ”
रे ढोला जरमर[72] जोता आव्या ”
रे ढोलाजी पड़तो दड़तो आवे ”
रे ढोलाजी ऊटीड़ो हंभाले ”
रे मारूणी ऊँटीड़ा झखवे[73] ”
रे मारूणी संसूवो ने करे ”
रे ढोलाजी खज्ये साथै वेहे ”
रे ढोलाजी ते पक्का सकिया वेग्या ”
रे मारूणी गलाकी हांसली ”
रे मारूणी होना री वाड़ली[74] ”
रे मारूणी ऊँट ने गोड़े[75] गाले[76] ”
रे मारूणी ढोलाजी नें माथे वेहाड़े ”
रे मारूणी मोरले[77] होदे मारूणी वैठे ”
रे मारूणी फांहलो[78] होदे ढोलाजी वेवाड़े ”
रे मारूणी तीखा राले ताजणा ”

रे ऊँटियो जाए रे धामा दौड़े ”
रे ऊँटियो नरवल गढ़ आवी लागूं “
रे ढोलाजी रे मेलां मालम करावी “
रे ढोलाजी रे वइरू[७९] बुलावे ”
रे ढोलाजी रे मोएतें मलवे आवजे ”
वइरी वेहुली ने आवे ”
ढोलाजी अतुवारे[८०] हंभाले ”
रे वइरा खीला हँई कुटाव्या ”
रे वइरा ऊँट रे पगां मँाई ”
रे वइरे म्हारे ऊँट वगाड़ी दीदो ”
रे ढोलाजी रे वइराए गोली वाई ”
रे वइरी थारो[८१] कसूर तोए[८२] मारूं ”
रे ढोलाजी गीत जातो मेलो ”

ढोलाजी का बाल्यावस्था में ही विवाह कर दिया—
(उस समय) ढोला तिल के बराबर थे,
(और) मारुणी (मारवणी) मूंग के समान थी।
(ढोलाजी की) पिंगलगढ़ में शादी हुई,
(और) नरवलगढ़ में इनका राज्य है।
ढोलाजी की विवाहिता पितृ गृह भेज दी गई।
ढोलाजी की शादी थाली में बैठा कर की गई।
ढोलाजी (अब) अब यौवन–सम्पन्न हैं।
(मारुणी कहती है)–ढोलाजी के यहाँ कागज़ की कमी है।
मैं अब यौवनावस्था में हूँ।
गौना लेने के लिये जल्दी आना,

अपने जोड़ीदारों (साथियों) सहित।
सवारी के ऊँटों पर- (बैठ कर)
जल्दी आना।
(ढोलाजी) ऊँट मंगवाते हैं-
(ढोलाजी) ऊँटों के चरवाहे को बुलाते हैं।
(ढोलाजी आज्ञा देते हैं) पत्र वाहक (चपरासी) भेजो !
देश-विदेशों में (जाओ)
ऊँटों के चरवाहों और ऊँटों को खोजो !
दौड़ता हुआ जाता है,
दौड़ता हुआ वापस आता है।
चरवाहे भी दौड़ते हैं (और)
ऊँट लेकर आते हैं।
निश्चित् स्थान पर आजाते हैं
(और ऊँटो को) राजा के आंगण में बांधते हैं।
ढोलाजी के सभी साथी समान शोभित हैं।
घड़ी भर की भी देर नहीं है।
स्वर्णिम प्रभात में,
ऊँटों को मंगवाओ !
(उन पर) काठियां कसाओ।
सभी समान बन कर,
गौना लेने जाते हैं।
पिंगलगढ़ के राज्य में जाते हैं,
वाग (लगाम) ढीली छोड़ देते हैं,
पगड़ी मजबूत बांधते हैं,
तेज चाबुक मारते हैं,
(और) लम्बे मार्ग पर जाते हैं।

सूर्य पर्वतों की ओट होता है,
मिलते हैं,
पिंगलगढ़ अभी दूर है,
(और) दिन अस्त हो गया है।
इसलिये नीचे उतर जाओ।
(ऊंटों के) पैरों में से कीलें निकालो
विप-बूझे कीलें (निकालो)।
(काठी का) बंधन मजबूत कसदो।
नकेलें ढीली करदो।
(और) तेज चाबुक मारो
(इससे) सूर्यास्त के पूर्व पहुँच जायँ।
ऊँट दौड़ने लगे
(और) गन्तव्य स्थान पर पहुँच गये।
पड़ाव कहाँ किया जाय ?
बाग में बावड़ियों पर।
महलों में समाचार पहुँचा दो
(कि) ढोलाजी गौना लेने आये हैं।
खाली कागज़ पर लिखो,
(और) पत्र महलों में पहुँचाओ।
पत्र महलों में पहुँच गया।
(और) ढोलाजी का साला मिलने आया
परस्पर नमस्कार किया।
हे बहनोईजी ! मेरी बात सुनो !
कसूम्बा तैयार किया।
हे बहनोईजी ! कसूम्बा बांटो-
(उपयोग करो)
ऊंटों को नीम के कड़वे पत्ते डाला।

हे सालाजी ! मेरी बात सुनो,
ऊँट कड़वे नीम के पत्ते नहीं खाते
(इसलिये) नागर वेल के पत्ते लाओ।
हे बहनोईजी, मेरी बात सुनो !
हम लोग शिकार के लिये चले,
(ढोलाजी ने कहा)-शिकार को कहाँ चले ?
हे जीजाजी, एक शेर मनुष्यों को मारता है।
सालाजी, मैं अकेला शिकार को जाऊंगा।
शेर कहाँ पर आता है ?
जीजाजी, गोह वाली चौकी पर शेर आता है,
ढोलाजी शीघ्रता से चले
(और) चौकी पर पहुँच गये।
औदी (शिकार-स्थान) पर जा बैठे,
सूर्य अस्ताचल गामी हुए।
ठीक अर्ध रात्रि में-
शेर गर्जता हुआ आया
ढोलाजी ने कपाल पर गोली चलाई
(और) शेर मर गया।
ढोलाजी ने सेवक को खबर दी
मारुणी को ज्ञात नहीं था,
मारुणी को समाचार मिले
(कि) कठिन काम पर गये हैं।
(किसी ने कहा-) हे बाईजी ! जीजाजी वापस नहीं आयेंगे
(इसलिये) मारुणी ने शीघ्रता की (व्याकुल हुई)
भोजन तैयार करो
(और) थालियों में भोजन परोसो।
(दासी ने कहा) सन्दूकें खोलो

(और) आभूषण पहनो ।
बढ़िया (सुन्दर) वस्त्र निकालो,
(और) उनको पहनो !
मारुणी शीघ्रता पूर्वक चली,
ठीक अर्ध रात्रि के समय
दौड़ती हुई चली ।
(और) निश्चित स्थान पर पहुँची
गौह वाली चौकी पर ।
(ढोलाजी ने) आने वाली को देखा,
(और सोचा) यह चुड़ैल है अथवा योगिनी !
इससे बात करनी चाहिये-
कौन आरहा है ?
रास्ते में कुत्ता है-
(इसलिये) बचा कर आना ।
(तुम) कहाँ से आरही और कहाँ जारही हो ?
मार्ग में कुत्ता पड़ा हुआ है
हे बाई ! तुम भय मत रखना ।
(मारुणी कहती है:-) मैं तो मारुणी (कहलाती) हूँ-
न चुड़ैल हूँ और न योगिनी ।
(ढोलाजी ने कहा-) मारुणी ! ठीक अर्ध रात्रि में !
क्यों आई हो ?
हे पतिदेव ! भोजन लेकर आई हूँ,
आप भोजन कर लीजिये !
ढोलाजी ने हाथ मुँह साफ कर लिये,
(और) भोजन कर लिया ।
भोजन करने के बाद-
आपस में विचार (बात) करने लगे ।

(ढोलाजी ने कहाः-) हे मारुणी, दिल की बातें कहो !
मैं तो गौना लेने आया हूँ,
(लेकिन) सालाजी, ठगना चाहते हैं ।
मैं कल चला जाऊँगा ।
तुम्हें आना है या नहीं ?
(मारुणी उत्तर में कहती हैः-) हे पति ! हम उच्च वंश-
के हैं (कुलीन हैं)
(इसलिये) गुप्त रूप से कैसे जावें ?
हमें प्रसन्न मन से जाना चाहिये-
(अतः) आप महलों में जल्दी आइये !
(कह कर) मारुणी शीघ्र (महलों में) पहुँच गई ।
प्रातः काल के स्वर्णिम समय मे-
(ढोलाजी ने) शेर की मूंछे काटली
(और) जेब में रखली ।
बाग की बावड़ियों पर
(जाकर) अपना ऊँट संभाला
(और) राजाङ्गन में जा पहुँचे ।
ऊंट को बांध दिया ।
(और) सालाजी से नमस्कार किया ।
(सालाजी ने दासों से कहाः-) जाजमें बिछाओ !
जाजमों पर बैठिये ।
बहनोईजी ! आप जाजम पर बैठिये ।
(सालाजी ने कहाः-) बन्द बोतलें लाओ ।
(फिर) सालाजी परदे वाली बोतलें लाये ।
(और) ढोलाजी दारु (शराब) वगैरह पीने लगे ।
(ढोलाजी को) जहर पिला दिया ।
(ढोलाजी) मस्त बन गये ।

मारुणी, झरोखे में बैठी थी,
उसे पता लगा
(कि) अपने सम्बन्धी को जहर पिला दिया है,
(तो) उसने पुरुष वेश बनाया
(और) सफेद कपड़े पहने।
(वह) उठ खड़ी हुई
(और) ऊंट को संभाला।
(उसपर) बैठने की झीण (काठी) कसी
(और) लड़कों को बुलाया।
(मारुणी ने लड़कों से कहा:-) मेरी बात सुनो,
मैं, तुम्हें पैसे दूँगी
(इसलिये) तुम यह हल्ला करो
(कि) ऊंट छूट गया है।
लड़के हल्ला करने लगे
(कि) हे ढोलाजी ! ऊँट भाग रहा है।
ढोलाजी, शीघ्रता से उठे
(और) लड़खड़ाते हुए देखने आये।
गिरते पड़ते (वहाँ) आ पहुँचे
(और) ऊँट को संभालने लगे।
मारुणी ने ऊँट को बिठाया
(एवं) विचार करने लगी
(कि) ढोलाजी को कैसे ऊपर बिठाया जाय ?
ढोलाजी तो एक दम शराब में चूर थे।
मारुणी ने गले की हांसुली,
जो सोने की थी।
(उसको) ऊँट के घुटने में पहनादी
(और) ढोलाजी को ऊपर बिठाया।
मारुणी आगे के स्थान पर बैठी

(और) पीछे के स्थान पर ढोलाजी को बिठाया।
उसने तेज चाबुक लगाया,
ऊँट तेजी से दौड़ने लगा
(और) नरवलगढ़ आ पहुँचे।
महलों में समाचार पहुँचाये
(और) पूर्व-पत्नी को बुलाया।
पहली पत्नी शीघ्रता से आई।
ढोलाजी ने अस्त्र संभाले
(और कहा:-) कीलें क्यों कुटवाई
ऊँट के पावों में ?
मेरा ऊँट बिगाड़ दिया
(और) पहली पत्नी पर गोली चलादी
(तथा कहा कि:-) तेरे अपराध ने तुझे मारा है।
यहाँ गीत समाप्त होजाता है।

गीत परिचय:—

प्रस्तुत गीत में सामाजिक रीतियों का सुन्दर परिचय मिलता है गांगा नाम का भील अपने पुत्र के लिये कन्या ढूँढने जाता है। स्वाभाविक है कन्याएँ पनघट पर अधिक आती हैं। वह उनमें से एक कन्या को योग्य समझता है। सामाजिक नियमानुसार रुपया स्वीकृत हो जाता है और कन्या का पिता दोला बरात शीघ्र लाने का अनुरोध करता है। बरात आने पर गांव के गमेती नियमानुसार सामाजिक कर नहीं देते हैं जिसके कारण झगड़ा हो जाता है और बरात लुट जाती है। परन्तु स्वाभिमानी दुल्हा उस झगड़े में से दुल्हिन को बड़ी कुशलता से भगा ले जाता है। कन्या का पिता कहता है कि "उसकी बात चली गई" और झगड़ा समाप्त हो जाता है। इस गीत में भीलों के सामाजिक जीवन का तथा उनकी चतुरता का अच्छा परिचय मिलता है।

गीत

रइ ने केवां बोले दोलिया कलवेरा नी जान कुटाणी
कलवेरियाँ वाजी रेइयाँ रे ,,
कीनुं कीनुं जाजुं रे ,,
वलाड़ां नुं जाजुं रे ,,
कुण वलेड़ो वाजे रे ,,
गांगलो वाजी रेइयो रे ,,
गांगला वालो सोरो रे ,,
वीने लाड़ी जोवा जावुं रे ,,
पीली के परवातां रे ,,
लाड़ी जोवे जाए रे ,,
हक नीया वसीयारे रे ,,
खेर जेरूवां है हक निचा रे ,,
जाए रे धामा दौड़े रे ,,
फरतां फरतां जाए रे ,,
पोगरूं ने पलासियुं ,,
गांगलो वे वाई कुआ ने वावड़ी रे ,,
हुकलो भांग पीये रे ,,
पोगरा नी पणियारे पाणी आवे रे ,,
कुंवारियों ना ज़ोला पाणी आवे रे ,,
ज़ोला वाव जाइ उतरिया रे ,,
पावटां वेड़लां मेले रे ,,

दातण कुल्ला करे रे	कलवेरा नी जान कुटाणी
गांगलो लाड़ी जोए रे	,,
दोलिया वारी सोरी रे	,,
सोरी है रूपाली रे	,,
लाड़ी नर की लीदी रे	,,
वाँहे वॅाहे जाए रे	,,
दोला नी पंटाल रे	,,
हाथ मलणिया करे रे	,,
आवो आवो करे रे	,,
गांगलो मनसीवा नी वातां रे	,,
तारे सोरी नो वेरो वालवो रे	,,
दोलो रेई ने वोले रे	,,
वणतु रे आवहे तो रूपियों जेल हारे	,,
दोलो काका वावां तीरे रे	,,
वेठा जालो जाल रे	,,
दोलानी है सोरी रे	,,
करुवाँ ने कोले करी रे	,,
आड़ो वेरो वालो रे	,,
मनसीवां नी वाताँ रे	,,
जानते वेली लावजो रे	,,
गांगलु पासु जाए रे	,,
कलवरे जाई लागो रे	,,

गांगलो लाड़ी-जोइ आइयो रे दोलिया कलदेरां नी जान कुटाणी

कणेरी नी पाल रे ,,

पोगरूँ ने पलासियुँ रे ,,

दोलिया रे गमेतीनी है सोरी रे ,,

कडु लीनी कोल कीदी रे ,,

कोले लगती आज्जी रे ,,

दस ने पन्दरे दाड़ा रे ,,

हल्दी पीटी करे रे ,,

जाने तैयार करे रे ,,

पीली ने परवातां रे ,,

जाने धामा दौड़े रे ,,

पोगरे आवी लागी- रे ,,

गोयरे टीलुं करे रे ,,

टीलुं रे करे ने भाणु मांगे रे ,,

टीले वगरो लागो रे ,,

रीती थाली फेरवे रे ,,

थारी रे फरी ने धागड़ो लागो रे ,,

गामनां गमेती धागड़ो करे रे ,,

जाने ना जानिया धागड़ो करे रे । ,,

फोरा फोरा हथियार हाथमारियों रे । ,,

आधी ने मझ राते संगी वाजे. रे ,,

संगीरा ने हम से लड़ाई थाए रे ,,

अरे रे रे जान ते लुटाई गी रे दो०कल वेरा नी जान कुटाणी
पंडलु लुटाई गीयु रे ,,
जानड़ी लुटाई गई रे ,,
गांगजी भाई ते वांता नो मसुन्दी रे ,,
गांगजीड़ो लाड़ाये लवरां कड़ड़ावे रे ,,
कांरे लाड़ा एवां हूँ जोयरे ,,
जान ते लूटी लीदी रे ,,
दवतु दवतु लाड़ी ठावी कीदी रे ,,
आदी ने मभरातां रे ,,
मसके सांगी वाजे रे ,,
अड़दी रे सोरी ने अड़दा सोरा रे ,,
मसके रोलु लागु रे ,,
यो लाड़ो सानी लाड़ी भाड़े रे ,,
ईते लाड़ी सीवलायत करे रे ,,
धागड़ा मोंहे कुणे हामरे ,,
ई ते लाड़ा वालों लाड़ी लड़ने नाटो रे ,,
आदी ने मभरातां रे ,,
चांहे दोलिया खवर लागी रे ,,
दोलों रेई ने वोले रे ,,
आपाँ जान लूटीते वेलाड़ी लेगियों रे ,,
लाड़ी रे लेगीयाँ ने वात गई रे ,,
आदी ने मभरातां रे ,,
गीत जातु मेलो रे ,,

अर्थः—

सब एक साथ मिलकर कहते हैं कि—दोला कलबेरा की बरात लुट गई है।

कलवेरिया कहलाते हैं—
किसका बहुमत है ?
बलाड़ों (गौत्र) का बहुमत है।
बलाड़ा कौन कहलाता है ?
गांगला बलाड़ा मे प्रसिद्ध है।
गांगले का लड़का हैं,
उसके लिए लिये बहू देखने जाना है।
प्रभात के पीले समय में,
बहू देखने जाते हैं,
(तो) शकुन विचारते हैं,
शकुन खराब होते हैं,
(फिर) दौड़ते-धामते जाते हैं,
घूमते फिरते जाते हैं।
पोगर तथा फलासिया,
(में) गांगला ब्याही के कूए और बावड़ी पर
सूखी तम्बाखू पीता है।
पोगरा की पनिहारिनें पानी भरने आती हैं,
कुमारी कन्याओं का समूह पानी भरने आता है,
समूह बावड़ी में उतरता है,
सीढ़ी पर बेवड़े (बर्तन) रखती हैं,
और दातुन कुल्ला करती हैं।
गांगला लड़की देखता है,
(यह) दोले की लड़की है,
लड़की बड़ी सुन्दर है,

लड़की को पसन्द कर लिया।
पीछे २ जाता है,
दोला की चौपाल में,
हाथ मिलाकर नमस्कार करते हैं।
(दोला) आओ ! आओ !! कहता है,
गांगा अपने मतलब की बात कहता है—
तेरी लड़की से संबंध करना है।
दोला ने उत्तर दिया—
समझ में आजायगा तो रूपैया ले लूंगा [सम्बन्ध निश्चित होने पर वर पक्ष का ओर से कन्या के पिता को एक रूपैया दिया जाता है, जिसे स्वीकार कर लेने से सम्बन्ध बिल्कुल निश्चित हो जाता है]
दोला अपने भाई-बन्धुओं के पास जाता है,
सब मिलकर बैठते हैं।
दोला की लड़की है,
शर्त और वादा करते हैं
और बात पक्की कर लेते हैं।
विचार कर के कहते हैं—
बारात जल्दी लाना।
गांगा वापस रवाना होता है,
और कळमेरा जा पहुँचता है।
गांगला बहू देख आया है,
कनेरी की पाल में,
पोगर तथा फळासिया में,
दोला गमेती की लड़की है,
कड़ूली देने का वादा किया है।
निर्धारित दिन समीप आ गया है।
दस, पन्द्रह दिन हैं,

हल्दी तथा उबटन लगाते हैं (और)
बराती तैयार करते हैं।
पीले प्रातः काल के समय
बरात दौड़ती–धामती,
पोगरा आ पहुँची।
गांव के गोरमें (समीप) पर तिलक करते हैं (गांव में बस्ती के बाहर एक स्थान होता है, जहाँ मवेशी इकट्ठी होती हैं और आने जाने वाले वहाँ ठहरते हैं)
तिलक लगाकर (जाति प्रथानुसार) पैसे मांगते हैं,
तिलक पर झगड़ा आरम्भ हुआ।
खाली थाली लौटाते हैं,
थाली के लौटाते ही झगड़ा आरंभ हो गया।
गांव के गमेती (पंच) झगड़ा करने लगे,
बरात के बराती भी झगड़ने लगे।
छोटे मोटे हथियार हाथ में लेने लगे।
ठीक मध्य रात्रि में ढोल बजने लगा,
ढ़ोल के सहारे लड़ाई होने लगी।
इतने में अचानक बरात लुट गई,
विवाह का सब सामान लुट गया!
बरात में आई स्त्रियाँ भी लुट गई।
गांगजी भाई तो बहुत बातुनी है,
गांगजी दुल्हे से कपड़े खुलवाता है,
क्यों दुल्हे! अब क्या देखता है?
बरात तो लुट गई है।
दुल्हे ने छिप कर दुल्हिन को ढूंढ़ा–
ठीक मध्य रात्रि में।
आधे पुरुष और आधी महिलाएँ,

भयंकर लड़ाई होती है।
दुल्हा छिपकर दुल्हिन को ले जाता है,
इससे दुल्हन चिल्लाती है,
किन्तु लड़ाई में कौन सुनता है?
दुल्हा दुल्हिन को लेकर भाग निकला।
ठीक अर्धरात्रि में।
बाद में दोले को खबर मिली
दोला ने कहा—
हमने बारात लूटी और वह दुल्हन ले गया है।
दुल्हिन लेगये हैं, इसलिये हमारी इज्जत चली गई है।
आधीरात के समय,
गीत समाप्त करते हैं।

कठिन शब्दः —

कूटाणी=लुट गई, पीटी गई। जाजुं=बहुमत। खेर जेरूवाँ=अपशकुन। जोला=झुण्ड, समूह। नरकी लीदी=निहार ली। बाँहे—बाँहे=पीछे पीछे। करुवां ने-कोले=वादा; शर्त या इकरार। टीलुं=तिलक। भाणुं=तिलक लगाया हो, वह कुछ पैसे डालता है, उन पैसों को 'भाणुं' कहते हैं। गोयरे=गोरमा (विशेष व्याख्या अर्थ में देखे)। वगारो=झगड़ा—लड़ाई। संगी=खतरे का ढोल। हमसे=सहारे, बहाने। बाताँ नो मसुन्दी=बहुत बातुनी, वाचाल। एत्रां=अत्र। रोलुं=युद्ध। सीवलापत=रोना, चिल्लाना। हामरे=सुने। वात=ईज्जत, शान, प्रतिष्ठा।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में भीलों के सामाजिक जीवन की एक झलक का परिचय मिलता है। गीत में वर्णित घटना का संबंध प्रतिवर्ष सामाजिक उत्सव के रूप में चैत्र मास में लगने वाले प्रसिद्ध जावरमाता के मेले से है। स्पष्ट है कि ऐसे मेलों का उद्भव ऊनालू साख के अन्त में

सामूहिक उल्लास को व्यक्त करने की प्रेरणा से हुआ होगा। जिस प्रकार खेती से बढ़कर किसान के लिए और कोई महत्व की वस्तु नहीं है, उसी प्रकार कृषि-सम्बन्धी इन मेलों का महत्व भी उनके लिए सबसे अधिक है। अपने खून और पसीने से पैदा किये हुए धान के दानों को जब वह अपनी आँखों से देखता है; तब इससे अधिक खुशी उसके लिए क्या होगी ? खुशी में बावले होकर किसान मेलों में आकर सामुहिक रूप से नाचते हैं, गाते हैं और बजाते हैं। डँडियों की ताल पर गैर रमते हैं और शरीर की सुध-बुध भुलाकर मेले में एक रस हो जाते हैं। औरतें भी सामुहिक रूप से घूमर खेलती हैं। ऐसे कार्यक्रमों में कभी-कभी संयोग वश किसी छैले की नजर किसी नवयुवती से मिल जाती है और तब उसकी परिणति होती है-प्रेम-विवाह में। इसी प्रकार की एक घटना का वर्णन प्रस्तुत गीत में मिलेगा—

गीत

पारगियाँ नी सोरी है	अलरी अमरी वैनण
हराड़ां नी सोरी है	"
नानपण ने पड़जी है	"
मुआँ माऊ बाप है	"
नानपण कुण पाल् है	"
मामां नानां पाल् है	"
कियाँ थारा मामां है	"
वारा पाड़ां पहूनूं है	"
वियाँ मारा मामां है	"
वे ते मामां ने याँ आवें है	"
आवे धामा दौड़े है	"

आवे ठेठा ठेठ है	अलरी अमरी वैवण
मामां कोने भाई है	,,
मामां पूमणां पूसे है	,,
सोरी हणे कांमे आवी है	,,
मांमा नानपण ने पड़जी है	,,
मोए कुण कमाई ने आले हैं	,,
भाई ते नानो वालक है	,,
सार सै वरे मोटो थाई गियो	,,
धोल्यां नो गुंवाल	,,
पीली ने परवातां है	,,
वारे वाड़ां धोली है	,,
हूँ धोलियाँ नुँ नामे है	,,
सालर ने मोगर	,,
नामे लेई वोलाडो	,,
हियो हियो करे	,,
जीणा वासुर मेलो	,,
पागली सागली जुओ	,,
जउड़ा मउड़ा दुआओ	,,
दोई रे करी ने	,,
कुण जाहे गुंवाले	,,
धोलियाँ मोहूँ थाए	,,
रावे साए खोड़ा	,,

ढुंवाड़लां हमजावो	अलरी अमरी वैवण
कुण जाहे गुंवाले.	,,
अमरी जाहे गुंवाले.	,,
वीजो कुण जाहे गुंवाले.	,,
भाई रगला. नो हारो	,,
वो जाही गुंवाले.	,,
रगला ने वोली हांपत	,,
कुण जाहे गुंवाले.	,,
अमरी जाहे गुंवाले.	,,
हांकड़लियारी हेरी	,,
गुगरयाला ज़ापा	,,
ठोकरां जांपा ठोरो	,,
हियो दियो करे	,,
धोली धीरे हांको	,,
धोली मगरे वारो	,,
वारी रे करी ने	,,
गेरी रोहण नो सांड्लो	,,
सांड्ले जाणु वेहो	,,
होलो की आमेली	,,
वारे ढ़ोल तेरे कुण्डी वाजे	,,
क्याँते ढ़ोल कुण्डी नो भड़को	,,
ज़ावर ढोल वाजे	,,

जावर माता नो मेलो	अलरी अमरी वैवण
वीयाँ ने ढोल वाजे	"
होम आटम नो मेलो	"
वीयाँ ने कुण्डी वाजे	"
अमरी मर जोवनियाँ मांई	"
जोवनां कापड़ी मींजे	"
वर्णाए हुरपण सइज्युं	"
आपणे कमिया वेवाई	"
वेवाई ने वैवण	"
जोड़ी रे जोड़ीना	"
मेला ना ममड़ाटिया	"
मन में वसार करे	"
आपणे मेले जावुँ	"
जावर माता नो मेलो	"
राने आपां जां	"
अला कमिया वेवाई	"
आपां सानां सानां जां	"
हाको बोली हाको	"
लागी माया लागी	"
कदी न मोड़ा माया	"
आवे घामा ढोड़	"
वड़ा वड़ा ना हेरा	"

आया ठेठा ठेठ	अलरी अमरी वैवण
अमरी सोल माय	,,
कमियो सोल मांय	,,
हेरियाँ आमा पीसे	,,
धोली ने धीरे हाको	,,
धोली वाड़े वागे	,,
वारी रे करी ने	,,
जीणा वासुर मेलो	,,
आधी ने मजरातां	,,
मोटे ने परोड़े	,,
वेलुं कूकडुं बोले	,,
सानी सानी निकले	,,
विहुलो ने हिंडज्यो	,,
परोड़िया नी वेलां	,,
जापानी टूल नो गागरो	,,
बम्बई वारी हाड़ी	,,
सानी सानी हवाए	,,
हाड़ी जाणुं ओड़े	,,
विहुली ने हिंडजे	,,
सानी सानी निकले	,,
वेवाई ने वैवण	,,
लउदरा नां हेरा	,,

सड़के सड़के आवे	अलरी अमरी चैवण
वातां सोलता आवे	,,
गदेड़ा घाटी आवे	,,
मेरीया तलाई आज्जी	,,
जावर लगती आज्जी	,,
आज्जी ठेठा ठेठ	,,
वारे ढोल ने तेरे कुण्डी	,,
मसके ढ़ोल वाजे	,,
दोवड़ गैर रमे	,,
नागी ने तरवारां	,,
अमरी फरी हरी ने जुए	,,
तमां गैर रमो कमिया वेवाई	,,
कमियो रेई ने वोले	,,
थारे हूँ पेरवुँ	,,
अमरी पीजणी पेरे है	,,
पावली रोकड़ी लागे है	,,
कांटली मोलावे है	,,
फुंदियाँ मोलावे है	,,
लेई रे करी ने	,,
फरी हरी ने जुए है	,,
नेजो सटवा वालो है	,,
नेजो सटवा नी वेलां	,,

आपां नाही जाहाँ ,,
साना साना जाहाँ ,,
विहुलांने हिंडज्या ,,
वेवाई ने वैवण ,,
दवतां दवतां नाटां ,,
उबी जावर नाटां ,,
जाए रे धामा दौड़े ,,
गोज्यां वाले हेरे ,,
फाइल् मोरे जाए है ,,
वोरीकुड़ा ने हेरे है ,,
जाए रे धामा दौड़े ,,
गीयां ठेठा ठेठ ,,
वारेगाल् ने हेरे ,,
अमरी ने कमियो ,,
वै जणां कुंवारा है ,,
अणाएँ परणावों ,,
गांम मां तेड्डूँ फेरवो ,,
परणावी रे करी ने ,,
वणाएँ घर मां गालो ,,
गीत जातुं मेलो ,,

अर्थः—

पारगियों (गौत्र) की लड़की है। (अलरी और अमरी दोनों

सखियाँ परस्पर बातें करती हैं। निम्न पंक्तियाँ केवल ढ़ाल के लिये है। ग त के साथ इस का कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है।)

सराड़ा (गांव) की लड़की है।

नानपण (बचपन में माता पिता का देहान्त हो जाता है तो उसे 'नानपण' कहते हैं) पड़गई है।

(क्यों कि) माता पिता मर गये हैं।

बच्चों का भरण-पोषण कौन करेगा ?

मामा और नाना पालन-पोषण करेंगे।

तुम्हारे मामा कहाँ हैं ?

बारह फलों वाले पड़ूना गांव में हैं।

वहाँ मेरे मामा हैं।

वे मामा के यहाँ आते हैं।

दौड़ते धामते आते हैं।

आखिर ठेठ (गन्तव्यथान) आ पहुँचते हैं।

मामा का भाई है।

मामा प्रश्न पूछता है।

बाई ! किस काम से आई हो ?

हे मामा ! नानपण पड़गई है।

मुझे कौन कमा कर देगा ?

भाई तो छोटा बच्चा है।

चार छः वर्ष बाद बड़ा हो जायगा।

गौओं की ग्वाली करते हैं।

स्वर्णिम प्रातः काल है।

बारह बाड़ों में गोएँ हैं।

गौओं का क्या नाम है ?

सालर और मोगरा।

नाम लेकर पुकारो !

हियो-हियो (पशुओं की बोली में) कहता है।
बछड़ों को शान्ति के साथ रक्खो।
स्थनों में दूध देखो।
झड़मड़ झड़मड़ (दूध निकालने की आवाज) दूध-दुआरी करने के बाद।
गायें चराने कौन जायेगा ?
गौओं को देर हो रही है।
राव (खाद्य) तथा छाछ लाओ।
ग्वालों को समझाओ।
कौन ग्वाल जायेगा ?
अमरी ग्वालिन चराने जायेगी।
रगला भाई का साला (जायेगा)
वह ग्वाली में जायेगा।
रगला के स्वयं के बहुत पशु हैं।
(उसके) ग्वाली में कौन जायेगा ?
अमरी गाँएँ चराने जायेगी।
तंग रास्ता है।
दरवाजे पर घूंघरू बंधे हैं।
ठोकर (लात) मारकर दरवाजा खोलो।
हियो हियो कहकर पुकारता है।
गौओं को धीरे धीरे चलाओ।
गौओं को पहाड़ी पर रवाना करदो।
उनको पहाड़ पर छोड़ कर
गांइन की घनी छाया में-
दोनों बैठ गये।
होली के दिन हैं।
ढोल नगारों की आवाज कहाँ से आरही है ?

जावर (गाँव) में ढ़ोल बज रहे हैं।
जावर माता का मेला है।
वहाँ ढ़ोल बज रहा है।
होम-अष्टमी का मेला (त्यौहार) है।
वहाँ कुण्डियाँ (नागर) बज रही हैं।
अमरी सम्पूर्ण युवावस्था में है।
यौवन की गर्मी से उसके कपड़े भींग गये हैं।
उसको मस्ती चढ़ गई है (उसका मन मस्ती से भर गया)
उसने अपने समधी कमिया से कहा—
ब्याही और ब्याहिए—
दोनों ने जोड़ी बनाकर-
मेले में जाने के लिए-
मन में विचार किया
(कि) हमें मेले में चलना है।
जावर माता का मेला है।
रात्रि में हम जायेंगे।
(अमरी ने कहा) हे कमिया ब्याही
हम चुप चाप चलेंगे।
चलाओ गौओं को चलाओ।
अच्छा अवसर आया है।
अवसर हाथ से नहीं जाने देंगे।
दौड़ते भागते आपहुंचे।
बड़े बड़े रास्तों को पार करते हुए।
निश्चित स्थान पर आ पहुँचे।
अमरी मस्ती में थी,
कमिया भी मस्त था।
रास्ते में इधर उधर होने लगे।

(तो) गौत्रों को धीरे चलाओ।
गौत्रों को बाड़े में जाने दो-
(और) धीरे से बछड़ों को छोड़ो।
मध्य रात्रि में—
(उस समय) चुपचाप निकले।
शीघ्रता पूर्वक चले
प्रातः काल के समय—
जापानी ट्रल का घाघरा,
बम्बई की साड़ी,
(लेकर) गुप्त रूप से तैयार होती है।
साड़ी पहनती है,
(और) जल्दी चलती है।
चुपचाप निकलती है।
व्याही और व्याहिण,
लउदरे के रास्ते से
सड़क-सड़क आते हैं।
वाते करते हुए आते हैं।
गदेड़ा-घाटी पहुँचते हैं।
मोरिया तलाई पर आये
जावर नजदीक आगई है
ठेठ (गन्तव्य स्थान पर) आ पहुँचे।
बारह ढ़ोल और तेरह नगारे।
जोरों से बजते हैं।
डबल गैर खेलते हैं—
नंगी तलवारों से,
अमरी चारों ओर घूम कर देखती है।
तुम भी गैर खेलो कमिया व्याही !

तुम भी गैर खेलो कमिया ब्याही !
कमिया शान्ति से बोला:—
तुम्हारे क्या पहनना है ?
अमरी, पैरों की पीजण पहनती है।
चार-आने रोकड़ लगते हैं।
गले के हार का तोल मोल करती है;
(झूमकें) फून्द्रियों के मोल भाव करती है;
खरीद लेने के पश्चात्
घूम फिर कर देखती है
नेजा (ध्वजा) छूटने वाला है।
नेजा छूटते समय,
हमें भाग जाना चाहिये।
चुपचाप चले जायेंगे।
जल्दी चलते हैं।
ब्याही और ब्याहिण,
छिपकर भागे।
जावर के मध्य में होकर।
दौड़ते थामते जाते हैं।
गोज्यां (गांव) के रास्ते से होकर
आगे-पीछे जाते हैं।
बोरीकूड़ा के रास्ते से
दौड़ थाम करते हुए जाते हैं।
ठेठ निश्चित स्थान पर आगये,
बारापाल के रास्ते से।
अमरी और कमिया
दोनों कुँवारे हैं।
इनकी शादी करादो,

शादी करा लेने के पश्चात्
उनको घर में बन्द कर दो।
गीत समाप्त करो!

कठिन शब्दः—

नानपण=बचपन। बारापाड़ा=बारह पालें, (भीली क्षेत्रों में थोड़े थोड़े फासले पर गांव होते हैं, उसे पाल कहते हैं)। सार सै वरे=चार, छै वर्ष में। बारे वाड़ा=बारह वाड़े, गौओं के रहने की जगह। मोटू=देर। वाछुर=बछड़े। पागली–सागली=स्तनों में दूध का उतर आना। बोली=काफी, बहुत। हांगत=मवेशी। सांइलो=छाया। जाणं=जान कर। कुण्डी=नगारे। मड़ भड़ाटिया=उत्सुक। सोल=मस्ती। सानी-सानी=चुपचाप। हुरपण=मस्ती, जोश, मद। माया=अवसर। मसके=जोरों से। दो वड़=डबल। पींजणीं=पैरों में पहनने की पीतल की कड़ियाँ। कांटली=कंठला। नेजो=ध्वजा। नाही जांहा=भाग जावें। दवतां दवतां=छिप छिप कर। फाइले=पीछे। मोरे=आगे। तेडूं=निमंत्रण। गालो=बुसादो, बन्द करदो।

गीत परिचयः–

इस गीत में वीरजी नामक एक भील युवक और हरना नामक युवती की प्रेम कथा का वर्णन है। हरना के कृपि कार्य में वीरजी सहायता करता है दोनों में प्रेम हो जाता है और भाग जाने का विचार करते हैं। एक दिन मोका देखकर सचमुच ही दोनों प्रातःकाल जल्दी से भाग निकलते हैं और विवाह कर लेते हैं। भील-समाज में इस प्रकार के विवाह नये नहीं हैं–बराबर जमाने से चले आरहे हैं।

गीत

हरना रई ने केवां बोले रे हरनारी वैवण
हरना पड ज्यों कोड़ी काल रे हरनारी वैवण
हरना वाजिया हुकल वायरा रे ,,
हरना मगरे खुटो सारो रे ,,

हरना नीर टूटो नवांखे रे　　　　हर नारी वैवण
हरना लसमी मरवे लगी रे　　　　,,
हरणा मरीने खोले चली रे　　　　,,
हरना धान खूंटा कोटारां रे　　　　,,
हरना खानां खूटां माउड़ां रे　　　　,,
हरना रांडी डगवे लगी रे　　　　,,
हरना सोरां मरवे लागां रे　　　　,,
हरना थोड़िक दनिया खूटी रे　　　　,,
हरना देस मांये पड़ ज्यो कोडी काल रे　　　　,,
हरना जेठ असाड़ी नां दाड़ा रे　　　　,,
धर मांये आवु निकलो रे　　　　,,
हरना साणी जेवु आवु रे　　　　,,
हरना फोरी वींजु समके रे　　　　,,
हरना जोती रेई रे　　　　,,
हरना फोरूं मेड्लु धधमे रे　　　　,,
हरना मगरे मोर वोले रे　　　　,,
हरना भाई ते वालरूं वालो रे　　　　,,
हरना माल वावे रे　　　　,,
हरना झांकड़ं गांहडो रे　　　　,,
हरना वेते माल भेलवे रे　　　　,,
हरना मेड्लु गरजे रे　　　　,,
हरना मेड्लु वरवे लागुं रे　　　　,,

हरना माल डगी गइयो रे　　　　हर नारी वैवण
हरना मोटौ मोटो थाइयो रे　　　　"
हरना माल ते निगलाई गइयो रे　　　　"
हरना हूड़ला पेदां थइयां रे　　　　"
हरना मोरियां पेदां थाइयां रे　　　　"
हरना कुणों जाय रखवाल रे　　　　"
हरना भाई ते नानु बाल करे　　　　"
हरना जाए रखवाली रे　　　　"
हरना हुड़ा हुड़ा करे रे　　　　"
हरना मोर मोर करे रे　　　　"
हरना गोफणियो फटकारे रे　　　　"
हरना वेते डोलरियो मसकावे रे　　　　"
हरना डोलरियो हींसे ने गीत गावे रे　　　　"
हरना वीरजोड़ी वेवाइ रे　　　　"
हरना वेवाई वारी हरियानी कोली रे　　　　"
हरना वेवाई गात रंमे रे　　　　"
हरना वेवाई फोणे लागी रे　　　　"
हरना वेवाई ठगियो आइयो रे　　　　"
हरना वेवाई अलफणिया दड़े रे　　　　"
अरीरी हरना कोड़े सार हाथ नी गोफण रे　　　　"
हरना गुगरियाली गोफण रे　　　　"
हरना भरी गोफण ने फटकारे रे　　　　"

हरना वीरजीड़ो वेग्राई रे हर नारी वैवण
हरना वोते रड़ने वोले रे ,,
हरना वैवण कांगड़ी लागी जाही रे ,,
हर । रड़ने वोले रे ,,
हरना लागे है तो पाके न खाजो रे ,,
हरना पड़ी हारां—जीते रे ,,
हरना वैवाइ ने वैवण रे ,,
हरना हरकी रे हरकी जोड़ी ना ,,
हरना वेवाई दनकी आड़यो आवे रे ,,
हरना वैवण दनकी रकवाल़ आवे रे ,,
हरना पेदां पेदां आवे रे ,,
हरना गोफण नी हहिगे रे ,,
हरना हरिया घूणी नोहहि रे ,,
हरना वाल़ी-वाल़ी ने रंमें रे ,,
हरना लागी माया लागी रे ,,
हरना वेवाई रड़ने वोले रे ,,
हरना वैवण थारे मारे घेरवाहो रे ,,
हरना वैवण थूं तो मारे आवज़े रे ,,
हरना वैण वैवण थूं ते मारे आवजे रे ,,
हरना माल ते घेर क़ूड़ो जहाँ रे ,,
हरना माल ते खल़े दड़ो रे ,,
हरना गावी रे करी ने ,,

हरना खले. भूरेई करो रे हर नारी वैवण
हरना लाहरियाँ लाहरियाँ रे ,,
हरना माल ते घेर करो रे ,,
हरना भाई ते मोटुं थाइयूं रे ,,
हरना वीरजीड़ो वेवाई मतुं बाँदे रे ,,
हरना वेड़ मांये वगलां थाहां रे रे ,,
हरना पीली ने परबाते रे ,,
हरना जाए रे धामा दोड़े रे ,,
हरना डोल मांये जाती रेई रे ,,
हरना वीरजोड़ी वेवाई आवे रे ,,
हरना वीरजी वार करे रे ,,
हरना वार करे ने गात रंमे रे ,,
हरना गीत गावे रे ,,
हरना गीत रे हमसे हादे रे ,,
हरना वेते वगलां थाइयां रे ,,
हरना वोते रमणे आइयो रे ,,
हरना करे दल नी वातां रे ,,
हरना वेते जातां रेइयाँ रे ,,
गीत जातुं मेलो रे ,,

अर्थः —

सब एक साथ मिलकर कहते हैं:—
बड़ा भयंकर अकाल पड़ गया है,
गरम हवा चलती है,

पहाड़ों पर घास समाप्त हो गई है,
कूओं में जल भी समाप्त हो गया है,
पशुओं की मृत्यु होने लग-गई है,
मरकर काल के मुँह में चली गई हैं।
भण्डार नाज से खाली हो गये हैं,
खाई में महुवे (फल) भी समाप्त हो गये हैं।
विधवाएँ व्याकुल होने लगी हैं।
बच्चों की मृत्यु होने लगी है।
थोड़ी २ करके दुनियाँ नष्ट होने लगी है।
देश में बड़ा भयंकर अकाल है।
ज्येष्ठ-आषाढ़ के दिनों में—
उत्तर दिशा से बादल निकला
छलनी के बराबर छोटा बादल का टुकड़ा,
मामूली बिजली चमकती है,
हरना ने उसे (बिजली) देखी है।
थोड़े बादल गरजने लगे हैं,
पर्वत पर मोर बोलने लगा है,
हरना का भाई "वालरू बाळता है (नई जमीन को कृषि योग्य बनाने के लिए उस पर लकड़ियाँ एकत्रित कर आग जलाते हैं, जिससे राख की खाद हो जाती है और भूमि उपजाउ बन जाती है। इस क्रिया को "वालरू वाल्‌ना" कहते हैं।)
माल (एक नाज) बोता है,
(ऊपर) झांकड़ा घसीटता है (माल को मिट्टी के नीचे करने के लिये चावर फिराते हैं।)
वह बीज को मिट्टी में डालता है।
वर्षा गरजती है,

वर्षा होने लगती है
बीज ऊगने लग गया है,
बीज अब उग कर बड़ा पौधा बन गया है।
फूल लगने लगे हैं।
तोते (सुए) आने लग गये हैं।
मयूर भी परिचित होने लगे हैं।
रखवाली करने के लिये कौन जायगा ?
भाई तो छोटा बालक है,
(अत:) हरना स्वयं रखवाली के लिये जाती है।
वह तोतों को शोर मचा कर भगाती है,
"मोर-मोर" कह कहकर मयूरों को भगाती है।
गोफन (दूर तक पत्थर फेंकने की एक जाली) का फटकारालगाती है,
डोलर में झूला झूलती है,
डोलर में झूलती हुई गीत गाती है।
वीरजी नामक समधी
(और) समधी का धनुत बाण,
समधी निशानां लगाता है,
(हरना ने कहा) समधी ! नाक पर लग जावेगी,
व्याही ठगने के लिए आया है !
व्याही पत्थर फेंकता है।
हरना के पास चार हाथ लम्बी गोफण है,
गोफण के घुंघरू बंधे हुए हैं।
घोफन भरकर फटकारती है।
वीरजी व्याही ने,
रुक कर कहा—
व्याहिण पत्थर की लग जायेगी,

हरना रुक कर बोली—
लगे तो पकने पर खाना अर्थात् फल लगे तो पक जावें तब
खाना (हँसी में कहा जाता है)।
दोनों में शर्त हुई,
ब्याही और ब्याहिण,
दोनों की की बराबरी की जोड़ी है।
ब्याही प्रतिदिन वहाँ आता है,
ब्याहिण भी प्रतिदिन वहाँ रखवाली करती है।
घनिष्टता के कारण निरन्तर आता है,
प्रति दिन वह आता है।
गोफन की फटकार,
और धनुष-बाण का निशाना,
प्रसन्नता से खेलते हैं,
(इस प्रकार) दोनों में घनिष्ट प्रेम हो गया।
ब्याही ने धीरे से कहा—
ब्याहिण ! तुम्हारा-मेरा प्रेम बढ़ गया है,
अतः तू मेरे यहाँ आना (मुझ से शादी कर ले)
माल (नाज) पहुँचा देंगे,
माल खलिहान में डाल दो।
गाह करके (बैलों से कुचलवा कर भूसी बनाना)
खलिहान में ढेर करो,
(तत्पश्चात्) लाहरीयाँ (टोकरियाँ) भरकर
माल घर पहुँचा दो।
हरना का भाई बड़ा हो गया है।
बीरजी ब्याही योजना बनाता है, (विचार करता है)
जंगल में हम दोनों मिलेंगे,

प्रातःकाल के स्वर्णिम समय में,
शीघ्र रवाना होती है,
डोल में पहुँच गई है।
वीरजी व्याही भी आता है,
किल्कारियाँ करता है, (हर्ष प्रकट करता है)
हर्ष पूर्वक निशाना लगाता है,
गीत गाता है,
गीत के सहारे बुलाता है,
वे दोनों मिल गये।
वह तो खेलने आता है।
दोनों ने दिल खोल कर बातें की,
वे दोनों चले गये

कठिन शब्द

कोड़ीकाल=भयानक अकाल। हुकल=शुष्क, गर्म। रांडी=विधवाएँ। वालरू=नो तोड़ जमीन को उपजाऊ बनाने के लिये उस पर लकड़ियाँ एकत्रित कर जलाना। भांकड़ू=पेड़ की कांटेदार शाखा। मेलवे=मिट्टी में मिलाना। हूड़लां=तोते। पेदां=परिचित। गात=निशान। फोएणे=नाक। माया=प्रेम। घेरवाहे=घनिष्ट संबंध। मतु=योजना (मन्तव्य)। वेड़=जंगल। वगलां=इकट्ठे। हमसे=बहाने, सहारे।

गीत–परिचयः—

प्रस्तुत गीत में भील कन्या ने अपने माता पिता को सूचित किया है कि "मैं अपने एक वचपन के मित्र से प्रेम करती हूँ और उसी के साथ विवाह करूंगी। इसलिये ऐसा न हो कि कहीं आप मेरा सम्बन्ध अन्य अन्न किसी पुरुष से तय करलें। भील समाज में लड़का और लड़की अगर पहले परिचित होजाते हैं तो वे वाद में विवाह कर लेते हैं। इस दृष्टि से भील समाज में प्रेम विवाह की प्रथा न जाने कितने वर्षों से प्रचलित है। आज हम प्रेम-विवाह को अच्छी निगाह से नहीं देखते

हैं। माता पिता अपनी इच्छानुसार बिना लड़की और लड़के से पूछे विवाह- सम्बन्ध तय कर देते हैं और बाद में उसके दुष्परिणाम सामने आते हैं। पहले तो लड़का और लड़की अपनी इच्छा व्यक्त ही नहीं कर सकते और कभी कर भी देते हैं परिजन हिकारत की निगाह से देखते हैं और बेशर्म आदि की उपाधि से विभूषित करते हैं। इस दृष्टि से भील-समाज कथित सभ्य समाज से अधिक उदार और प्रगतिशील है !

गीत

बापा जाणिये हगाई कर जो मूं ते वेलियाजी ने जाई
माता मारी जाणिये हगाई कर जो मूं ते ,,
भाई म्हारा जाणिये हगाई करजो ,,
बापू म्हांरो बालपणा नो गोठियो ,,
भाई म्हांरा रमतां थूला ढगली ,,
बापा म्हांरा दनकां गुवाल जातां ,,
भाई म्हांरा दाड़ं घोली सारता ,,
भाई म्हांरा मगरे गीत गातां ,,
भाई म्हारा दनकी साली सारतां खवियूं करतां ,,
माता म्हांरी दनकी कांकरी रमतां ,,
बाबा मनसा हवे जो करजो मूं ते ,,
बापा जाई तिम जाई ,,
बापू मूं ने जाती रेई ,,

अर्थः—

पिता ! मेरा सम्बन्ध (सगाई) सोच समझ कर करना, मैं (तो) वेलियाजी के साथ जाऊंगी।

मां ! मेरी सगाई सोच समझ कर करना, मैं (तो) वेलियाजी के साथ जाऊंगी।

भाई ! मेरा वागदान सारी वात जान कर करना, मैं (तो) वेलियाजी के साथ जाउंगी ।

भाई ! मेरा वागदान सारी वात जान कर करना, मैं (तो) वेलियाजी के साथ जाउंगी ।

वापू ! (यह) मेरा वचपन का साथी है; (इसलिये) मैं इसके साथ जाउंगी ।

भाई ! (यह) धूल ओर मिट्टी में मेरे साथ खेलने वाला है; (इसलिये) मैं इसके साथ जाउंगी ।

पिता ! (यह) मेरा प्रतिदिन का ग्वाल साथी रहा है (अतः) मैं इसके साथ जाउंगी ।

भाई ! (यह) मेरे साथ प्रतिदिन गौएँ चराता था, मैं इसके साथ जाउंगी ।

भाई ! मेरे साथ (यह) पहाड़ पर गीत गाता था; मैं इसके साथ जाउंगी ।

भाई ! प्रतिदिन (हम) वकरियां चराते थे और खवियुं (दूध निकाल कर उसमें खन्नी के पेड़ की छाल डाल ने से तत्काल दूध जम कर दही वन जाता है) वनाते थे; मैं इसके साथ जाउंगी ।

मां ! हम दिन भर कंकरियों से खेलते थे; (इसलिये) मैं वेलियाजी के साथ जाउंगी ।

पिता ! इच्छा हो वह करना, मैं (तो) वेलियाजी के साथ जाउंगी ।

पिता ! जाउंगी और उनके साथ जाउंगी पिता ! मैं (तो) निश्चय ही उसके साथ (वेलियाजी साथ) जाउंगी ।

कठिन शब्दः—

१. ने=के । २. गोठियो=साथी । ३. ढ़गली=ढेर । ४. दनका=प्रतिदिन । ५. धोली=गौएँ । ६. सारता=चराना । साली=बकरी । खवियुं=विशेष प्रकार से जमाया हुआ दही ।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में इन्द्र और मयूर की प्रतिस्पर्धा बड़े रोचक ढंग से वर्णित है। इस गीत से हमें यह ज्ञात होता है कि अशिक्षित जातियों के साहित्य में कथानक प्रकृति के उपकरण के रूप में कितनी सुन्दरता से व्यक्त किये गये हैं मोर ने इन्द्र को बड़ी विनम्रता तथा आत्माभिमान के साथ परास्त किया। जब कि इन्द्र अपनी गुरुता के अभिमान में सृष्टि पर अकाल की स्थिति उत्पन्न कर चुका था।

इस प्रकार के कथानकों को देखने से लगता है कि प्रकृति की गोद में पलने वाली जाति की कल्पना शक्ति कितनी सुन्दर और विस्तृत है। यही जातियों की सभ्यता और शक्ति की प्रतीक है।

गीत

हांसु रइ ने केवां बोले	मोरिया थई थई रे
हांसु कुण वडूँ कुण लोडुँ	,,
मेइलुं के मूं वडूं	,,
मोरू कै मूँ वडूं	,,
पड़ी हारा जीते	,,
बारे हिन्दु काले	,,
मेइलुं रइ ने बोले	,,
मुंते काल पाडूँ	,,
तूँ, हूँ खाइ ने जीवी	,,
मोरूं, रइ ने बोले	,,
हांमल मारी वातां	,,
धोली सग्गो कांगड़ी	,,
हीला भकी वायरा	,,

मे आओ मे आओ बोली मोरिया थाई थाई रे
कदी नहीं मरे मोरू ,,
मेड़लु काल पाड़े ,,
बारे हिन्दुड़ा काले ,,
तेरमा हूकल बायरा ,,
मगरे खूटो नारो ,,
नीर टूटां नवाणे ,,
लसमी डोलवे लागी ,,
लसमी मरवे लागी ,,
मरी ने खोलां वरी ,,
धान खूटां कोटारां ,,
करवल खूटा कोदरा ,,
सोरां मरवे लागां ,,
मरे कल नां मानवी ,,
दनिया मरी खूटी ,,
घर में आबू निकले ,,
साणी तेवु आबू ,,
फोरी वीजली समके ,,
मोरू हांमली रेयु ,,
मे आओ मे आओ बोले ,,
मेड़लु वसार करे ,,
मोरू नहीं मुउँ रे ,,

ऐवाँ हूँ करी ने मांरू मोरिया थई थई रे
धरू तारे पाणी है ,,
मोरू पाणी मांय डूबी मरे ,,
मेड्लु वरवे लागूं ,,
धरू तारे पाणी सोडज्यूं ,,
मेड्लु वसार करे ,,
मोरू मरी गियु ,,
मेड्लु गाजवे लागु ,,
पाणी माते मोरू बोले ,,
मोरु लाकड़ां माते ,,
मोरू बेटूं बैटूं बोले ,,
मेड्लु वसार करे ,,
दनिया मारी दड़ी ,,
एक मोरू नहीं मुउँ रे ,,
मोरू जीती गियुं रे ,,
मेड्लुं हारी गियु रे ,,
गीत जातु मेलो रे ,,

अर्थः—

सब मिलकर शान्ति के साथ कहते हैं। (ढाल)
वास्तव में कौन बड़ा और कौन छोटा है ?
इन्द्र ने कहा मैं बड़ा हूँ।
मोर ने कहा मैं बड़ा हूँ।

दोनों में (हार-जीत दांव लगा।
बड़ा भयंकर दुर्भिक्ष होगा।
इन्द्र ने रूक कर कहा—
मैं तो दुष्काल करूंगा अर्थात् मैं नहीं बरसूंगा।
तूं क्या खाकर जीवित रहेगा?
मोर ने बड़ी शान्ति से उत्तर दिया—
मेरी बात सुन!
सफेद कंकर खाऊँगा,
(और) शीतल वायु का पान करूंगा,
(तथा) वर्षा आओ! वर्षा आओ ! बोलूंगा,
मोर कभी नहीं मर सकता।
इन्द्र ने दुर्भिक्ष डाला,
अत्यन्त भयंकर अकाल
साथ ही शुष्क पवन,
पहाडों की घास समाप्त हो गई
कूओं में जल सूख गया,
मवेशी व्याकुल होने लगी, (परिणाम स्वरूप)
मवेशियों की मृत्यु शुरु हुई,
मरकर कराल काल के मुख में गई।
कोठार (भंडार) में नाज समाप्त हो गया,
कोठियों का कोदरा भी समाप्त हो गया,
बच्चे मरने लगे,
कष्ट से मनुष्य मरने लगे.
दुनियाँ मरकर समाप्त होगई।
उत्तर दिशा में बादल निकला,
छलनी के समान छोटा बादल का टुकड़ा था.
मामूली बिजली चमकी।

थोड़ी वर्षा हुई।
उत्तर में फिर बादल गरजता है,
ोर सुनता रहा,
वर्षा आओ वर्षा आओ बोलने लगा।
इन्द्र विचार करने लगा,
मार तो नहीं मरा,
अब किस प्रकार मारूं ?
ध्रुव तारे तक पानी है,
(इतने जोर से बरसूं कि) मोर पानी में डूब कर मर जाय।
इन्द्र बरस लगा,
ध्रुव तारे तक पानी बढ़ा दिया।
इन्द्र ने सोचा–
मोर मर गया है।
इन्द्र गरजने लगा,
तब पानी के ऊपर मोर बोल उठा।
लकड़ी पर,
बैठा-बैठा बोल रहा था।
इन्द्र (गंभीरता से) विचार करने लगा,
सारी दुनिया को मार डाली
(किन्तु) एक मोर नहीं मरा
मोर जीत गया
इन्द्र हार गया।
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

वड़ूं=बड़ा, श्रेष्ठ। लोड़ूँ=छोटा। हारा–जीते=हार–जीत, प्रतिस्पर्धा। सगी=खाऊँगा। हीला=शीतल। भकी=भक्षण करना। लसमी=मवेशी। कजे=क्लेश, कष्ट। धर=उत्तर दिशा। आबू=बादल। घघमे=गरजना। सोड़्‌यु=चढ़ाया। मारीदट्टी=मार डाली।

गीत–परिचयः—

प्रस्तुत गीत में ऋषभदेव के मेले में जाने का वर्णन है। भील युवक–युवतियों के अन्दर मेले में जाने के लिये बहुत उत्साह रहता है और ऐसे ही अवसरों पर इन में परस्पर विवाह की बातचित होती है तथा वे शादी करने का निर्णय ले लेते हैं। कभी २ परिवार वाले असहमत होते हैं तो वे चुपचाप या जबरन विवाह सूत्र में बंध जाते हैं।

गीत

बीजली ने दमाणुं	नन्दी हंई हुती है
धलोवियो है मेलो	,,
मेलो है हूँसिलो	,,
भारी मेलो भारी	,,
वेलुं कुकडूं बोले	,,
थाणे दीवलुं मेले	,,
हीनी करहां पोटली	,,
हूतर हार नां सोकला	,,
हट करो उतावल	,,
रूग रूग मेलो नेरो आइयो	,,
काल ते मेलो थाहे	,,
आपणे मेले जावुं	,,
जावूं तीते जावूं	,,
हायराजी सानां जहां	,,
परणा सानां जहां	,,

भावी हांमल मारी वात	नन्दी हंई हुती है
वापा सानी जहां	,,
भाई सानी जहां	,,
अणाएँ हूता मेलहां	,,
सीन्डिये नीकली जहां	,,
सानी सानी नीकले	,,
उँसा गुंटियां निकले	,,
खांख मांय पोटली गाले	,,
जाए रे धामा दोंड़े	,,
हात पूसती पूसती जाए	,,
हगवाड़ा नो हेरो	,,
परेड़ां न कोजावाड़ं	,,
भूदर ने पादेड़ी	,,
जाए रे धामा दोड़े	,,
धूलेव आवी लागी	,,
गेला मांय ओड़ानी	,,
मसके मेलो मसके	,,
खूनड़ी नो मसोल	,,
घाघरा नो गमरोल	,,
चूड़ली नो समको	,,
फरी हरी ने जोवो	,,
भावी हाँवल मारी वात	,,

दायमा नां है सोरा नन्दी हंती हुती है
हगवाड़ा नां है दायमा ,,
वणां हाथे आपां जहाँ ,,
मेलो वेरावा लागो ,,
दायमा नां सोरा ठगणी करे ,,
फलोटियाँ नी सोरी सूंसी करे ,,
मसके मेला मांय ,,
वे ते जाता रइयां ,,
वीजली ने दमाणां नी सोरी ,,
हगवाड़ा ना सोरा ,,
वे ते लांबा ने मारग रे ,,
गीत रे जातु मेलो ,,

अर्थः—

बीजली और दमाणा गांव है, (भावज कहती है) हे-नणंद ! क्यों सोई हुई हो ?
भूळेव वाला मेला है,
बड़ा उत्साह प्रद मेला है,
बड़ा भारी मेला है।
जल्दी मुर्गा बोलता है,
(स्थान) कोठी पर दीपक रक्खा,
गंठड़ी किसकी बांधेगे (सामान क्या क्या बांधना है ?
'हूतर' साल के चाँवलों की।
जल्दी करो, जल्दी करो,
मेला बिल्कुल समीप आगया है,

कल मेला भरने वाला है,
और हमें मेले में जाना है,
जाना तो है ही ।
श्वसुर जी से छिप कर जायेंगे,
पति से भी बिना कहे जायेंगे,
हे भावज, मेरी बात सुन ?
पिता को बिना बताये जायेंगे,
भाई से छिपकर जायेंगे,
इनको सोते रहने देंगे ।
हे भावज साथ चला गया है,
'सिन्डी' के रास्ते से निकलती हैं,
चुपके से निकलती हैं,
ऊँचीएडियाँ उठाकर चलती हैं (जिससे पैरों की आहट नहीं हो) ।
काँख (कक्ष) में गंठड़ी दबाती हैं ।
दौड़ती-थामती जाती हैं,
साथ के लिए पूछती-पूछती जाती हैं;
सागवाड़ा का रास्ता,
परेड़ा और को जावाड़ा,
भूदर तथा पादेड़ी (के रास्ते से),
दौड़ती-थामती जाती हैं,
धूलेव आ पहुँचती हैं ।
मेले में रुक जाती हैं,
मेला खूब भरा है ।
(वे मेले में) चूनड़ियों की आभा,
घाघरों का घेरा,
तथा चूड़ियों की चमक,

घूम-फिर करके देखती हैं।
हे भावज, मेरी बात सुन,
दायमा (गौत्र) के लड़के हैं,
सागवाड़ा के दायमे हैं,
उनके साथ हम जायेंगी।
मेला बिखरने लगता है,
दायमा के लड़के छेड़छाड़ करते हैं,
फसोटियों की लड़कियाँ छेड़छाड़ करती हैं,
मेले में खूब घूमती हैं,
वे तो चले गये।
बीजली और दमाणा की लड़कियाँ,
सागवाड़ा के लड़के,
वे लम्बे मार्ग पर (चले जाते हैं),
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

नन्दी=नणंद। हँूसीलो=उत्साह वर्धक। वेलुं=जल्दी। कुकंडूं=मुर्गा। थाणे=निश्चित स्थान। दीवलुं=दीपक। हीनी=किसकी। हुतरहाल=एक प्रकार की साली धान। सोकला=चाँवल। उतावल्=जल्दी। हाएरा=श्वसुर। परणा=पति। सांन्डी=मकान में प्रमुख प्रवेश द्वार के अतिरिक्त भी एक और पीछे की तरफ या अन्य किसी जगह द्वार होता है उसे सीन्डी कहते हैं। गुंटियाँ=,डियाँ। वेराबा=बिखरना। ठगणी=छेड़खानी। सूसी=छेड़खानी।

गीत परिचयः—

पुत्री पाणीग्रहण के पश्चात् अपने शसुरालय वालों द्वारा स्वयं की परीक्षा लिए जाने तथा कष्ट दिए जाने की बात कहती है तो पिता तथा माता बुद्धि पूर्वक प्रत्येक कार्य को समझ कर तत्क्षण कर लेने की शिक्षा देते हैं। माता उसके सामने उन समस्याओं का विवरण रखती

है कि जिनके द्वारा इसकी परीक्षा की जायगी। पितृकुल को श्वसुरालय में बदनाम न होने देने की माता द्वारा पुत्री को शिक्षा कितनी स्वाभाविक एवं प्रचलित है। पुत्री का सदा के लिए पराई हो जाना तथा उसी समय वात्सल्य पूर्ण वातावरण में कैसा अद्भुत दृश्य उपस्थित हो जाता है। यही इस गीत में देखने को मिलेगा।

गीत

आपा पारकु लोक ते दक देही रे हेली बाजरियु
आपा पारकु देवर ते दक देही रे ''
आपा पारकी नन्दी पारजोहे रे ''
बाई पार जोहे तो जाणी जाजो रे ''
जाणी जाई ने करी लेजो रे ''
माता पारकी जेठाणी पार जोहे रे ''
माता पारकी हाहू पार जोहे रे ''
बाई चुल्हे, आग अलोवी ने पार जोहे रे ''
बाई पणियार वेडुँ मेली ने पारजोहे रे ''
बाई पोइटो मेली ने पार जोहे रे ''
बाई बारवो मेली ने पार जोहे रे ''
बाई खुणे हेरणो मेली ने पार जोहे रे ''
बाई वट्टी माते दरणु मेलीने पार जोहे रे ''
बाई हारणु अलुणु मेली ने पार जोहे रे ''
बाई थाली ईंटाली मेली ने पार जोहे रे ''
बाई बाथणु मेली ने पारजोहे रे ''
बाई पार जोहे तो जाणी जाजो रे ''

जाणी जाई ने तमां करी लेजो रे ”
वाई पारकां लोक ते आपणु नाम काढ़है रे ”
वाई पारकां लोकते बापनु नाम काढ़ है रे ”
वाई नाम काढ़ है तो पीयर लाजी जाई रे ”
वाई गीत जातु मेलो रे ”

अर्थः—

हे पिता ! श्वसुरालय में पराया पुरुष अर्थात मेरा पति मुझे दुःख देगा।

हे पिता, मेरा देवर जो पराया है; वह मुझे दुःख देगा।

हे पिता, मेरी नणँद जो पराई है; वह मुझे दुःख देगी।

हे बेटी, यदि परीक्षा ले तो पहले समझ लेना और समझ कर उसे पूरा कर लेना।

हे मां, जेठाणी, जो पराई है, वह परीक्षा लेगी।

हे मां सास जो पराई है, वह परीक्षा लेगी।

हे बेटी, चूल्हे की आग बुझा कर तेरी परीक्षा ली जायगी।

हे बेटी पणिहारे पर खाली बर्तन (बेड़ा) रख कर तेरी परीक्षा ली जायगी।

हे बेटी घास का गट्ठर लाने के लिये खूंटिया कोने में रखा जाकर तेरा जांच की जायगी।

हे पुत्री, पशुओं के गोबर को उसके स्थान से नहीं हटा कर तुम्हारी जांच होगी।

हे बेटी, घर के कूड़े-करकट को नहीं बुहार कर तेरी परीक्षा होगी।

हे पुत्री, घट्टी (चक्की) पर दलने के लिये नाज रख कर के तुझे देखा जायगा।

हे पुत्री, शाक-तरकारी अलोनी (बिना नमक) रख कर तेरी परीक्षा ली जायगी।

हे पुत्री, भोजन करने की थाली और बर्तन झूंठी छोड़ी जाकर तेरी जांच होगी।

हे बेटी, बिस्तरों को बिछे हुए छोड़ कर तुम्हारी परीक्षा ली जायगी।

हे पुत्री, इस प्रकार अगर तेरी परीक्षा लीजाय तो तू समझ कर तत्काल काम कर लेना।

हे बेटी, पराये लोग अपना नाम बदनाम करना चाहेंगे।

हे बेटी, पराये लोग तेरे पिता का नाम बदनाम करना चाहेंगे।

हे बेटी, नाम के बदनाम होने पर तेरा पितृ गृह लजाएगा।

हे बेटी, नाम के बदनाम होने पर तेरा परिवार लजाएगा

गीत समाप्त करते हैं।

कठिन शब्दः—

पारकु लोक=(पराया पुरुष) पति। बापा=पिता। दक=दुःख। हेली=सखी। बाजरियु=नाम, सहेली का नाम। हेली बाजरियु=सहेली बाजरी को सम्बोधन करके गीत कहा गया है—वैसे इस गीत में इस पद का प्रयोजन केवल ढाल से ही है। नन्दी=नेणद, पति की बहन। पारजोहे=पैंदे तक देखना, परीक्षा लेना। जानी जाजो=जान लेना, समझ लेना। अलोवी=आग बुझाकर। पानीयरी=परेंडी, पानी के बर्तन रखने का विशेष स्थान। बेड़ं=बेहड़ा, पानी लाने के बर्तन। मेली=रखकर। कौले=कौने में। हेन्गो=घास का गट्ठर उठाने का बांस का खूंटिया। पोइटो=गोबर। वारवो=कुड़ा करकट साफ करना। दन्नु=दलना, पीसना। हातुँ=शाक। अलुणु=बिना नमक का। ओंटाली=ऐंठी, झूठी। बाघणु=सोने के बिस्तर। तमा=तू, तुम। नाम काड़ है=नाम बदनाम करना। पीयर=पितृ गृह। लाजी जाहें=लजाएगा, शर्मिन्दा होगा। जातु मेलो=समाप्ति।

गीत-परिचयः—

इस गीत में भील युवक रतना का सम्बन्ध बचपन में ही एक भील बाला से कर दिया था। जब दोनों बड़े हो गये तो एक मेले में दोनों आये। वहाँ लड़की को रतना के परिजनों ने देखा और महुओं की शीतल छाया में विवाह-मण्डप बना कर विवाह करा दिया, उसे घर भी नहीं जाने दिया। भील-समाज में इस प्रकार के विवाह आज भी होते हैं।

राइ ने केवां बोले मुआल[1]	हर वरण मांये रे
बोली मुआल बोली	,,
खैर मुआल खैर[2]	,,
खूब मानवी आवे	,,
मऊड़ा विणने आवे	,,
मानवियां नो मेलो	,,
दाड़े मउर वीणे	,,
राते राते[3] ठेके गीत गावे	,,
गीत गाए ने मानवी ठेके	,,
वेवाई[4] ने वेवाण[5]	,,
पेले[6] हगाई कीदी	,,
आज मेल[7] मलियूं	,,
रतना थारे लाडी आवी	,,
मऊड़ा वीणवा आवी	,,
आपणे हाई[8] लेवो	,,
रतना लाडी हाई लोजे	,,

लाडी हाई लीदी ,,
लाडी नो गेरलो लागो ,,
मानवियां नो मेलो ,,
रतना नी लाडी नो कादिरू ,,
मुंआल मांई कादिरू जोडानुं ,,
रतना नी है लाडी ,,
नानो हो ने हगाई कीदी ,,
रतनाए मुंआल मांई परणाओ ,,
मुआल मांय वीवा मांडियो ,,
रतना ने हाथ पोगां दोय रो ,,
हाथां माये तलवार ,,
वींदे ते तेड़ फेखे ,,
खलां खलां फरे ,,
मऊड़ां मऊड़ां फरे ,,
दरिये दरिये फरे ,,
मुआल में वीवा ,,
ठेकवे तमें आवजो ,,
लाडी वोर परणावा ,,
मुआल मांये मांडवा ,,
गीत रे गाजो ने कल्की करजो ,,
रतनो परणी गियो ,,
लाडी 'जुमली' परणी गई ,,
गीत जातुं मेलो ,,

सब मिल कर कहने लगे- 'हरवण में महुए के पेड़ हैं'
(उसमें) महुए ही महुए हैं- ,,
महुए (फल) पक गये हैं- ,,
बहुत से मनुष्य आते हैं- ,,
महुए बीनने आते हैं- ,,
मनुष्यों का मेला (जमघट) लगा है- ,,
दिन में महुए बीनते हैं- ,,
रात्रि में गीत गाते हैं और नाचते हैं- ,,
मनुष्य नाचते हैं और गीत गाते हैं- ,,
ब्याही (समधी) और ब्याहिण (समधिन) मिले- ,,
सम्बन्ध पहले किया हुआ था- ,,
आज सयोग से मिलना होगया- ,,
(लोग कहते हैं) रतना तेरी लाड़ी (वाग्दत्ता) आई है- ,,
महुए बीनने (एकत्र) आई है- ,,
अपने पास रोकलो (रखलो)- ,,
(अन्य कहते हैं) रतना लाड़ी को (वागदत्ता को) रोक ले ,,
रतना ने लाड़ी को रोक लिया ,,
लाड़ी के आस पास जमघट लग गया- ,,
बहुत लोग इकट्ठे हो गये- ,,
रतना की लाड़ी का झगड़ा है-मामला है- ,,
महुओं में ही मामला निपटाया जाने लगा- ,,
(पंचों ने कहा) रतना की यह लाड़ी है- ,,
(पंचों ने कहा) बच्चा था तभी सम्बन्ध कर दिया था- ,,
(पंचों ने कहा) रतना का विवाह महुओं में ही करवादो- ,,
महुओं में ही विवाह रचा गया- ,,
रतना के मांगलिक धागा बांधा- ,,
हाथों में तलवार दी- ,,
दुल्हा निमन्त्रण देने लगा- ,,

खलिहान-खलिहान में जाता है- ,,
महुओं-महुओं में फिरता है ,,
दर्रों २ (घाटियों) में घूमता है- ,,
(वह कहता है) महुओं में विवाह है- ,,
(वह कहता है) तुम नाचने के लिए आना— ,,
,, वधू और वर का विवाह कराओ- ,,
,, महुओं में ही विवाह-मण्डप है- ,,
,, गीत गाना और कल्की करना- ,,
रतना का विवाह होगया- ,,
वधू भूमली (नाम) का विवाह होगया- ,,
गीत समाप्त होगया- ,,

कठिन शब्दः—

१. मुआलु=महुए। २. खैर=पकना। ३. ठेके=नृत्य करते हैं। ४. वेवाई=व्याही (समधी)। ५. वेवण=समधिन। ६. पेले=पूर्व, पहले। ७. मेलु=संयोग। ८. हाई=रोकना, पकड़ना। ९. गेरलो=जमघट, घेरलिया। १०. कादिरूं=मामला, झगड़ा। ११. दोयरो=मांगलिक सूत्र। १२. वीन्द=दुल्हा। १३ तेड़ु=निमन्त्रण। १४. खला=खलिहान। १५. दरिये=दर्रे-घाटी। १६. वोर=वर। १७. कल्की=आवाज, नाद (नाचते हुए गाते हैं तब बीच में जोर से आवाज करते हैं)।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में ऋषभदेव मेले में होने वाली युवक और युवतियों के विवाह संबंधी वार्ता है। युवक और युवतियाँ मेले में आती हैं किंतु उनके इच्छित युवक दूसरी ओर चले जाते हैं। अतः विवाह की बात पुनः एक वर्ष के लिये टल जाती है। भील-समाज में इस प्रकार से विवाह अधिक होते हैं।

गीत

राई ने केवां बोले मारी हेली रे
थलोवियो है मेलो ,,
खराड़ियाँ नी सोरी है मेला मांय ,,
खराड़ियाँ नी सोरी हैसोल मांय ,,
आहरियाँ ना सोरा है मेला मांय ,,
आहरिया ना सोरा रोल करे ,,
कलाउँआ नां सोरा मेलुं मले ,,
हेरा रे हैरे ने हानी करे ,,
हाथ रे जोड़ी न सोरी फरे ,,
वजार वजार गीत गाए ,,
सोरी मेलो रे जोए ने मोसर मांडे ,,
मेलो रे जोए ने सला वांदे ,,
मेलो रे जाए ने आपां जहाँ ,,
थलोवियो भारी मेलो वाजे ,,
मेला मांय सोरी भूली पड्जी ,,
मेला मांय सोरा भूला पड्ज्या ,,
आहरियाँ ना सोरा पूंसना पूसे ,,
खराड़ियां नी सोरी पुसणा पुसे ,,
आहरियां ना सोरा किमना गीया ,,
वगलां थहां ते जाता रेहां ,,
वे ते वगलां नहीं थाइयां ,,

ई ते केसरिया नी कला ,,
बारे महीनाउँ वगलां थहॉ ,,
जीवतां रेहां ते वगलां थहॉ ,,
गीत जातुं मेलो ,,

अर्थः –

सब मिलकर एक साथ कहतेहैं—हे सहेली,
'धुलेव' (ऋषभदेव) में मेला है।
खराड़िये (गौत्र) की लड़कियां मेले में आई हैं।
खराड़ियों की लड़कियाँ खूब उमंग में हैं।
आहरियों (गौत्र) के लड़के मेले में आये हैं।
आहरियों के लड़के हँसी-मजाक करते हैं।
कलाउँओं (गौत्र) के लड़कों से मेल मिलाप हो जाता है।
वे मौका देखकर संकेत करते हैं।
हाथ मिलाकर नवयुवतियाँ घूमती हैं .
बाजार में गीत गाती हैं ,
लड़कियाँ मेला देखती हुई अवसर ढूंढती हैं।
मेला देखती हुई सलाह करती हैं,
मेला समाप्त होने पर हम जायेंगी।
धूलेव का बहुत बड़ा मेला कहलाता है,
मेले में लड़कियाँ भूल गईं।
मेले में लड़के भी भूल गये।
आहरियों के लड़के प्रश्न पूछते हैं ?
खराड़ियों की लड़कियाँ प्रश्न पूछती हैं ?
आहरियों के लड़के किस ओर गये हैं ?
मिलते ही रवाना हो जावेंगे,
वे नहीं मिल सके।

यह तो श्री केसरियाजी की इच्छा है,
बारह महीनों बाद मिलेंगे,
जीवित रहेंगे तो मिलेंगे ही।
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्द:—

हेली=सहेली। धलोवियो=धूलेव वाला। खराड़ी, आहरी तथा कलाउँआ=यह सब भीलों के अलग २ गौत्र हैं। रौलु=हंसी—मजाक, विनोद। मेलुं मले=संयोग वश मिलन हो जाना हेरा=मौका, अवसर। हैरे=ढूंढना। हानी=इशारा, संकेत। मोसर= अवसर। पूसंना=प्रश्न। किमना=किस तरफ। वगलां=मिलना, इकट्ठे होना। कला=चाल बाजी, इच्छा।

—❀—

गीत परिचय:—

इस गीत में विवाह के बाद जब बारात वापस दुलहिन को लेकर दुल्हे के घर जाती है तो दुल्हे की मां और भौजाई बारातियों से तथा दुल्हे से कुछ प्रश्न करती हैं। वे प्रश्न इस गीत में गाये गये हैं। बारात के लौट आने पर यह गीत गाया जाता है।

गीत

रे वरजी भाई माता पूंसणां पूसे ढोला सूनेड़ी
रे वरजी भाई हकिया हो के दकिया ,,
रे माता म्हांरा दकिया नी पण हकिया ,,
रे माता म्हांरी पूसी ने हूँ कामें ,,
रे वरजी भाई थारे हाहरियां है थूतारां ,,
रे माता म्हांरी जाणिये पूसणा पूसे ,,
रे जाणिया म्हांरा भाइये हकिया हो के दकियां ,,
रे माता म्हांरी दुक्खी ने पण हक्खी ,,
रे कुटम्ब म्हारो हकियो है के दकियो ,,

रे माता म्हारी पूसी ने हूँ कामें ,,
रे वरजी भाई भावी पूसणां पूसे ,,
रे देवर म्हारा हकिया हो के दकिया ,,
रे भोजाई म्हांरी पूसी ने हूँ कामें ,,
रे देवर म्हांरा थांरी हारी है धूंतारी ,,
रे भोजाई म्हांरी म्हांरा घोड़िला भूखां मरे ,,
रे भोजाई म्हारी म्हांरा ऊँटीड़ा भूखा मरे ,,
रे भोजाई म्हांरी म्हांरा घोड़िला सोड़ो हरिया पूंगे ,,
रे ऊँटीड़ा नीरो कड़दा लींवे ,,
रे भोजाई म्हांरी जाणिया थाका आया ,,
रे भाई म्हांरा जाणियां फूले दारू मांगे ,,
रे भोजाई म्हांरी जानड़िया ने पावो ठंडा पाणी ,,
रे बापा म्हारां जानेड़ा नवरत आलो ,,
रे बापा म्हांरा आलो बादर बोकड़ा ,,
रे बापा म्हांरा एक भाटी नोहरो ,,
रे वरजी भाई परणी पाती गिया ,,
रे वरजी भाई परणी गढ़ जीतिया ,,

—:-※-:—

माता, वरजी भाई से प्रश्न पूछती है— टेर
हे वरजी भाई ! सुखी हो या दुखी ? ,,
(वरजी उत्तर देताहै) हे मां दुःखी नहीं किन्तु सुखी हूँ । ,,
(,, मां से प्रश्न करता है) हे मां, (यह)किसलिये पूछती है ? ,,
(मां उत्तर देती है) हे वरजी भाई, तेरे सुसराल के व्यक्ति
बड़े दुष्ट हैं ,,

(वरजी कहता है) मेरी मां बरातियों से प्रश्न पूछती है:— "
(प्रश्न) हे बराती भाइयों ! (आप) सुखी रहे अथवा दुखो ? "
(बराती उत्तर देते हैं) हे माता, (हम) दुखी नहीं किंतु सुखी रहे ? "
(मां फिर पूछती है) मेरा परिवार सुखी रहा अथवा दुखी ? "
(वरजी कहता है) हे मां (यह) किसलिये पूछती हो ? "
भौजाई, वरजी भाई से प्रश्न पूछती है कि "
(प्रश्न) हे देवरजी, (आप) सुखी रहे अथवा दुखी ? "
(वरजी उत्तर देता है) हे भावज, यह बात क्यों पूछती है ? "
(उत्तर) हे देवरजा, तुम्हारे सुसराल के व्यक्ति बड़े दुष्ट हैं "
(देवर भावज से कहता है) हे भाभी, मेरे घोड़े भूखे हैं "
मेरे ऊँट भूख से मरते हैं "
हे भाभी, मेरे घोड़ों को चरने के लिये हरे मूगों में छोड़ दें
ऊंटों को नीम के पत्ते डाल दो।
हे भाभी, मेरे वराती थके हुए आये हैं—
(अपने भाई से कहताहै) हे भाई, मेरे वराती वढ़िया शराब मांगते हैं-
(फिर अपनी भाभी से ") हे भाभी, वरातियों को ठंडा पानी पिलाओ
(अपने पिता से ") हे पिता, बरातियों को जीमण जिमाओ (भोज-खिलाओ, दो)
(") हे पिता, अच्छा वकरा दो,
(") " एक भट्टी का शराव दो।
वरजी भाई की शादी हो गई।
वरजी भाई ने विवाह का गढ़ जीत लिया।

कठिन शब्द:—

पूसणा=प्रश्न। पूसे=पूछा। हकियां=सुखी। दकियां=दुःखी। हाहरियां=सुसराल वाले। धुतारा=दुष्ट। जानिये=बराती। भाबी=भावज। हारी=सुसराल, साली। सोड़ो=छोड़ो। फूले=वढ़िया। नवरत=जीमण, प्रीतिभोज। बोकड़ा=बकरा। हरो=शराब।

गीत–परिचयः—

प्रस्तुत गीत में एक लड़की को राजा द्वारा पकड़ कर लेजाया गया बताया है। गांव बड़े बूढ़े राजा की प्रकृति जानते हैं; इसलिये वे लड़की से अधिक शृंगार न करने का अनुरोध करते हैं; किन्तु वह नहीं मानती और शृंगार अधिकाधिक करती है। एक दिन उसे पकड़ कर ले जाता है। यही इस गीत का सार है।

गीत

रई ने केवां बोले तोए	लई जांहे सोरी नानुड़ी
ईडर वालुं राजा तोए	,,
घणी सैल नके कर तोए	,,
घणां गीत नके गाव	,,
राजा जाण है तो	,,
राकड़ी माते राकड़ी तूं मत पेर	,,
नतड़ी माते नतडी तूं मत पेर	,,
राजा है अलोढुं	,,
टोटियाँ माते टोटियां तूं मत पेर	,,
हाएड़ा माते हाएड़ो तूं मत पेर	,,
हांड़ली माते हांड़ली तूं मत पेर	,,
वाडली माते वाड़ली तूं मत पेर	,,
ईडर वालुं राजा	,,
दनकुं राजा आवे	,,
डनकुं दारे आवे	,,
के रांक देखी काड़है	,,

ओरणी माते ओरणी तूं मत पेर ,,
घाघरा माते घाघरो तूं मत पेर ,,
नानुड़ी ते दनकी ढाही सारे ,,
नानुड़ी ते दनकी साली सारे ,,
राजा ते घोडिलु दौड़ावे ,,
राजा ते हाई लीदी ,,
सोरी रोवे लागी ,,
रोती रोती जाए ,,
आहुँआ हारली भीगे ,,
मानवी जोई रइयाँ ,,
मां ते दनकां ना केतां ,,
मत कर अलोटाई ,,
तोए ते राजा लई गियो ,,
तूँ ते एकली पड़ी गई ,,
गीत जातु मेलो ,,

अर्थः—

सब मिल कर कहते हैं–हे लड़की नानुड़ी, तुझे (राजा) ले जायेगा।
ईडर वाला राजा तुझे ले जायगा– ,,
अधिक शृंगार मत कर– ,,
अधिक गीत मत गा– ,,
राजा को मालूम होगा तो तुझे पकड़ ले जायगा– ,,
रखड़ी के ऊपर रखड़ी मत पहन– ,,
नथ के ऊपर नथ मत पहन– ,,

(क्योंकि) राजा बड़ा दुष्ट है— तुझे (राजा) ले जायेगा ।
कर्ण फूल के ऊपर कर्ण फूल मत पहन ,,
साड़ी के ऊपर साड़ी मत पहन— ,,
हाँसली के ऊपर हांसली मत पहन— ,,
बाडली के ऊपर बाडली मत पहन— ,,
ईडर का राजा— ,,
प्रति दिन शिकार करने आता है— ,,
कभी न कभी तुझे देख लेगा— ,,
साड़ी के ऊपर साड़ी— ,,
घाघरा के ऊपर घाघरा मत पहन— ,,
नानुड़ी प्रतिदिन गौएँ चराती है— ,,
राजा घोड़ा दौड़ाता है— ,,
राजा ने उसे पकड़ लिया— ,,
लड़की रोने लगी— ,,
रोती रोती जाने लगी— ,,
आँसुओं से साड़ी भीग जाती है— ,,
लोग देखते रहे— ,,
(लोगों ने कहा—) हम तो सदैव मना करते थे— ,,
कि शैतानी मत कर— ,,
(अब) तुझे राजा पकड़ लेगया है— ,,
और तू अकेली पड़ गई है— ,,
गीत समाप्त करो ।

कठिन शब्दः—

वणी=बहुत । मेलु=शृंगार । नके=मत । डागड़ा=साड़ी । थलोइ=दुष्ट । टोटियाँ=कर्णफूल । हांइली=हाँसली । केरांक=कभी न कभी, किसी दिन ।

—:-※-:—

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में भील कन्या लदे हुए बैलों को देख कर जिज्ञासा पूर्वक अपने अपने पिता से प्रश्न पूछती है और पिता उसकी जिज्ञासा का समाधान करता है। इस गीत को भील-स्त्रियाँ चक्की चलाते समय गाती हैं। इसे प्रभातियाँ अर्थात् सवेरे के समय गाया जाने वाला गीत कहते हैं।

गीत

राइ ने केवां बोलेरे
केवड़ा नी नाले हूरज उगोरे।
जागो म्हांरी माता हूरज उगोरे।
बापा म्हांरा पाँस पोटिड़ा आवे रे।
बापा म्हांरा हिना पोटी भरिया रे?
डिगरी म्हांरी ई लगनां ना भरिया रे।
बापा म्हांरा ई लगनां हिने कामे आवे रे?
डिकरो म्हांरी नानरियो परणो रे।
केवड़ा नी नाले हूरज उगो रे।
डिकरी म्हांरी ए लगनां विने कामे आवे रे।
बापा म्हांरा पांस पोटिड़ा भरिया रे।
बापा म्हांरां हुँए माल भरिया रे?
डिकरी म्हांरी पीटोली ना भरिया रे।
डिकरी म्हांरी पड़ला ना भरिया रे।
बापा म्हांरा ए पीटोली हिने कामे आवे रे?
बापा म्हांरा ए पडला हिने कामे आवे?

डिकरी म्हांरी कलजुग में नानरियो परणे रे।
डिकरी म्हांरी वीने कामे आवे रे ?

—·——

अर्थः –

सब मिल कर कहते हैं:-
केवड़ा की नाल में सूर्योदय हुआ है
मेरी माता अब जागो ।
हे पिता, पांच पोठियां भरी आरही हैं,
हे पिता, ये पोठियां किससे भरी हैं ?
हे बेटी, ये विवाह की सामग्री से भरी हैं।
पिताजी ! यह सामग्री किस काम में आती है ?
बेटी ! इस सामग्री से लड़के-बच्चे विवाह करते हैं।
केवड़ा की नाल में सूर्योदय होगया है।
हे बेटी, यह विवाह–सामग्री उसके काम आती है।
हे पिताजी ! पांच पोठियां भरी हुई है।
इनमें क्या माल (सामग्री) भरा है ?
हे बेटी, इनमें पीठी (उबटन) का सामान भरा है,
पड़ला का सामान भी भरा है।
हे पिता; यह पीठी किस काम आती है ?
और पड़ला किस काम आता है ?
हे बेटी, कलियुग में बच्चों की शादी में काम आती है–

कठिनः—

पोटिड़ा=सामान लादे हुए बैल । हिना=किससे । लगनां=विवाह–सामग्री । नानरियों=बालकों । पिटोली=उबटन की सामग्री, पीठी–विवाह के पूर्व शरीर पर मलने की सामग्री को पाठी कहते हैं। पडला=शादी के पूर्व दूल्हा की ओर से पहनने के लिये कपड़े भेजे जाते हैं उसे 'पड़ला' कहते हैं

तारी वाइरी ते किंगरा तोड़ी खादा ,,
तारी वाइरी ते फोरगु तोड़ी खादूं ,,
तारी वाइरी ते किंगरा तोड़ी खादा ,,
का वेवाइ दवियुं दवियुं फरजे ,,
का वेवाई गीत जानुं मेलो ,,

हे मेरी सखी ! व्याही (समधी) आया है, वह क्या लाया है ?
हे सखी ! समधी आया है और तूंबा बांध कर लाया है।
हे सखी ! व्याही आया है और तूंबी बांध कर लाया है।

हे व्याही, तूं बूचा होकर कैसे आया है ?
हे व्याही, तू ने अपना नाक किसको दिया है ?
हे व्याही, तेरे पुट्ठे किसने काटे हैं ?
हे व्याही, तू लंगड़ा क्यों चलता है ?
हे व्याहिन, तेरे पूछने से क्या काम है ?
हे व्याही, तुम्हे तो बहुत बुरा लगता है !
हे व्याही, तू तो बहुत खराब दिखाई देता है।
मेरी गौएं देख लेगी तो तुम्हें मारेगी।
हे व्याही गांव के व्यक्ति तुमसे मजाक करेंगे।
हे व्याहीजी, तुम छिप छिप कर फिरना।
क्यों व्याहीजी ? क्या तुम रींछड़ी व्याह लाये हो ?
हे व्याहीजी, क्या जंगल की रींछड़ी है ?
वही रींछड़ी क्या तुम्हारी स्त्री है ?
तुम्हारी स्त्री ने तो नाक तोड़ कर खा लिया है।
तेरी स्त्री ने पुट्ठे तोड़ कर खा लिये हैं।
हे व्याही, इसलिये तुम छिप छिप कर फिरना।
गीत समाप्त करते हैं।

कठिन शब्द:—

बतकुं=तुम्बा। वुंसुं=बूचा। फोएणु=नाक। किंगरा=पुट्ठे। वाड़िया=काट लिया। खोडं२=लंगड़ा। भूंड=खराब, बुरा। रोल=मजाक। दबिया२=छिपे-छिपे। वेड़=जंगल।

गीत परिचय:—

इस गीत में विवाह की सामग्री का वर्णन किया गया है। विवाह के पूर्व उबटन (पीठी) करने के बाद झूला झुलाते समय इस गीत को सामूहिक रूप से गाया जाता है। इस गीत में शब्दों का माधुर्य उल्लेखनीय है।

गीत

हे मउदरा में हीलो पवन वाजे रे केसरिया लाल
हे हीलो रे हीलो पवनियो वाजे रे ,,
हाँसु पवनिया ने हमसे वालद साले रे ,,
हाँसु अणी वालदड़ी में हुं ए माल भरियो रे ,,
या वालदड़ी लगनां नी भरी रे ,,
हीलो रे हीलो पवनियो वाजे रे ,,
अणी वालदड़ी में हूँ ए माल भरियो रे ,,
या वालदड़ी पड़ला नी भरी रे ,,
या वालदड़ी पीटोली नी भरी रे ,,
या वालदड़ी मोरीला नी भरी रे ,,
ई लगनां हणे कांमे आवें रे ,,
या पीटोली हणे कांमे आवे रे ,,
यो पड़लूँ हणे कांमे आवे रे ,,

कलजुग में नानरियो परणे रे ,,
ई लगनां वीने कांमे आवे रे ,,
यो पड़लू वीने कांमे आवे रे ,,
या पीटोली वीने कांमे आवे रे ,,
यो मोरीलु ·वीने कांमे आवे रे ,,
गीत जातु मेलो रे ,,

हे केसरियालाल, मऊदरा में शीतल वायु वह रही है।
ठंडी ठंडी हवा चल रही है।
इस पवन के साथ तेजी से वालद चल रही है।
इस वालद में क्या माल भरा हुआ है ?
यह वालद लग्नों (विवाह–सामग्री) से भरी हुई है।
शीतल शीतल पवन चल रहा है।
इस वालद में क्या माल (सामग्री) भरा हुआ है ?
वह वालद पडले से भरी हुई है।
यह वालद उबटन सामग्री से भरी है।
यह वालद तुर्रा कलंगी से भरी है।
यह सामग्री इसी काम में आती है ?
यह पीठी इसी (विवाह के) काम में आती है।
यह पड़ला इसी काम में आता है।
कलयुग में बच्चों की शादियाँ होती है।
यह सामग्री उसी के काम आती है।
यह पड़ला भी उसी के काम में आता है।
यह उबटन भी उसी काम की है।
यह तुर्रा कलंगी भी उसी काम की है।
गीत समाप्त करते हैं।

कठिन शब्दः—

हीलो=शीतल। बाजे रे=चल रहा है। बालद=खाना बदोश बालदिये बैलों पर सामान लाद कर व्यापार करते हैं और इसके लिये स्थान २ पर फिरते रहते हैं। भरे हुए बैलों को लेकर चलते हैं; इसलिए इसे बालद कहते हैं। हूँए=क्या। मोरीला=तुर्रा कलंगी आदि सामान। वीने=उसके।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में भील बाला पहाड़ी पर खड़ी होकर आने वाली बरात की ओर देख रही है। उसे इस प्रकार देखती हुई देखकर उसके श्वसुर ने पूछा कि क्या है? उत्तर में बहू बरात का वर्णन करती है। *इस प्रकार के संवाद भील-गीतों में पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं।*

गीत

रे लाड़ी टूंकड़े रे सड़ी ने लाड़ी तू हूँ जुए है?
हे बापा जोउँ नानड़िया वरनी वाट रे जोउँ।
हे बापा जोउँ रे हल्दी रो भरियो क्याँ आवे है?
हे बापा जोउँ रे हल्दी रो भीनो पालो आवे है।
हे डीकरी टूंकड़े सड़ी ने डीकरी तू हूँ जुए है?
हे बापा जोउँ रे नानड़िया वर नी जान क्याँ आवे रे?
हे बापा जोउँ रे नानड़िया वरनां वाजां क्याँ वाजे?
हे बापा जोउँ रे नानरिया वरनो घोड़िलो क्याँ घूमे?
हे बापा जोउँ रे धूँधली खेदरली।
हे बापा तरसे मरे नानरिया वर नी जानड़ली।
हे बापा मोकलो पाणी रा भरिया बेडलां।
हे बापा जोउँ रे नानडिया वर नी जान पाली आवे रे।

हे बापा मोकलो घोड़ा-गाड़ी रे।

हे बापा नानड़िया वर नी जान पाली आवे रे।

—:-&-:—

अर्थ:—

श्वसुर कहता है:—हे वधु! तू पहाड़ी की चोटी पर चढ़कर क्या देखती है?

हे पिताजी (श्वसुर)! मैं छोटे दुल्हे की प्रतीक्षा कर रही हूँ।

हे पिताजी मैं देख रही हूँ कि हल्दी (उबटन) से भरा हुआ (वर) किधर आ रहा है?

हे पिताजी! मैं देख रही हूँ कि हल्दी से भरा हुआ (दुल्हा) पैदल आ रहा है।

हे बेटी (वधु)! चोटी पर चढ़ कर तू क्या देखती है?

हे पिताजी! मैं देख रही हूँ कि छोटे दुल्हे की बरात किधर आ रही है।

हे पिताजी मैं देख रही हूँ कि छोटे दुल्हे के बाजे किधर बज रहे हैं!

हे पिताजी! मैं देख रही हूँ कि छोटे दुल्हे का घोड़ा कहाँ नृत्य कर रहा है?

हे पिताजी! मैं उड़ती हुई धूल की धुंधलाहट भी देख रही हूँ।

हे पिताजी! छोटे दुल्हे की बरात प्यास से मर रही है।

हे पिताजी! पानी के भरे हुए बेवड़े (बर्तन) भेजिये।

हे पिताजी! मैं देख रही हूँ कि छोटे दुल्हे की बरात पैदल आ रही है।

हे पिताजी! घोड़ा-गाड़ी (तांगा) भेजिये।

कठिन शब्द:—

डूंगरे=पहाड़ी। बाट=रास्ता, प्रतीक्षा। पाली=पैदल। खेहरली=उड़ती हुई धूल। नानड़ली=[illegible]।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत एक प्रकार की आधुनिक लौरियों की समानता में आता है। पिता-माता भाई इत्यादि परिवार के सदस्य छोटे शिशु को बड़े प्रेम से झूले में तथा घर के आंगन में खेलाते हैं। कठोर जीवन व्यस्त वातावरण में भी भील जाति आनन्द लूटती है।

गीत

र ई ने केवां भोले लीम्बा हिंडोलो गाल्यो
वीलक ने पीपलेटी वड़ी — लीम्बा हिंडोलो गाल्यो
वड़ी वीलक ने सोरे, — ,,
वेटल्या ने सोरे, — ,,
थेय्यां थेय्यां रमे, — ,,
हूँस करी ने रंमे, — ,,
सोकड़ियाँ में रंमे, — ,,
कंकुडियाँ में रंमे, — ,,
हलदियाँ में रंमे — ,,
किनां किनां राज में रंमे ? — ,,
बापाजी नां राज मां रंमे। — ,,
फेर किनां किनां राज में रंमे ? — ,,
माताजी नां राजमां रंमाँय। — ,,
माता जी रंमाड़े, — ,,
हूँस करी ने रंमाड़े। — ,,
फेरकिनां किनां राज मांय ? — ,,
भाई जी नां राज मांय। — ,,

मार्मीजी नां राज मां — लीम्बा हिंडोलो गाल्यो
मार्मीजी रंमाड़े, — "
सोकड़ियाँ में रंमाड़े, — "
कंकुड़ा में रंमाड़े — "
थालियाँ मां रंमाड़े, — "
गीत जातो मेलो। — "

—:※:—

अर्थः—

सब मिलकर कहते हैं—लीम्बा को झूले में रक्खा
बीलक और पीपली
बड़ी बीलक के चौरे (चबूतरा) पर,
बेटल्या के चौरे पर,
थय्यां थय्यां खेलता है,
उमंग से खेलता है।
चौकड़ियों में खेलता है,
कुंकुम में खेलता है,
हल्दी में खेलता है।
किस की देख रेख (नेतृत्व) में ?
पिताजी की देख रेख में,
और किसकी देख रेख में ?
माताजी की देख रेख में,
माताजी खेलाती हैं,
उमंग के साथ खेलाती हैं।
और किसकी देख-रेख ?
भाई साहब की देख रेख में

भाई साहब खैलाते हैं।
भाभी जी की देख-रेख में,
भाभी जी खैलाती हैं।
चौकड़ियों में खैलाती है,
कुंकुंम में खैलाती है;
थालियो में खैलाती हैं,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

हिंडोलो=झूला। सोरे=चौरा, सार्वजनिक चबूतरा जहाँ गाँव को पंचायतें होती हैं। हूँस=उत्साह, उमंग। कंकुड़ा=कुंकुंम।

—:❀:—

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में प्रश्नोत्तर के रूप में विवाह सामग्री का वर्णन है। विवाह के समय वातावरण को प्रफुल्लित करने के लिये आवश्यक वस्तुओं को स्मरण करना आनन्द का द्योतक माना जाता है।

गीत

(किसी पुरुष का नाम)।

हाँसु आँबा पेली आमली बालद ढली रे
हाँसु ई पोटिड़ा हीना भरीया रे,
हाँसु ई पोटिड़ा लेगनां ना भरिया रे,
हाँसु ई लगेनां हीने कामे आवे रे?
हाँसु कलजुग में नानेरो परणे रे।
हाँसु ई लगनां वीने कांमे आवे रे।
हाँसु आँबा पेली आमली बालद ढली रे,
हाँसु ई पोटिड़ा हीना भरिया रे,

हँसु ई पोटिड़ा मोरिलाा ना भरिया रे ।
हँसु ई पोटिड़ा पीटोली ना भरिया रे ।
हँसु या पीटोली ही ने कांमे आवे रे ।
हांसु ई मोरिलां हीने कांमे आवे रे ?
हांसु ई पोटिला पड़लां नां भरिया रे ।
हांसु ई पड़लां ही ने कांमे आवे रे ?
हांसु कलजुग में नानरियो परणे रे ।
हांसु ई वीने कांमे आवे रे

—:❀:—

अर्थ—

आम के पेड़ के पूर्व वाली इमली के नीचे 'वालद' का डेरा है।
इन सामान से लदे हुए वैलों में क्या क्या भरा है ?
इन पोठियों में विवाह-सामग्री भरी है।
यह विवाह-सामग्री किस काम में आती है ?
कलयुग में छोटे वालकों की शादी है,
यह विवाह-सामग्री उसके काम में आती है।
आम के पूर्व इमली के नीचे वालद का डेरा है।
इन पोठियों में क्या भरा है ?
इन पोठियों में विवाह के मोड़ इत्यादि भरे हैं।
इन पोठियों में पीठी का सामान भरा है।
यह पीठी किसके काम आती है ?
यह मोड़ इत्यादि किसके काम आते हैं ?
ये पोठी पड़ले (वधु को दिये जाने वाले वस्त्र एवं अलंकारादि, से भरी है।
यह पड़ला किस काम आता है ?

कलयुग में छोटे बच्चे शादी करते हैं,
यह सब सामान उनके काम आता है।

कठिन शब्दः —

पोटीड़ा=पोठी, भारवहन करने वाले बैल जिन पर सामान भर कर लादा जाता है। लगेनां=विवाह की सामग्री। नानेरो बालक =छोटा बालक। वीने=उसके। मोरीला=मोड़ आदि सामग्री। पीटोली=पीटी, उबटन! पड़ला=वर पक्ष की ओर से वधु को दिये जाने वाले वस्त्र एवं अलंकारादि सामग्री।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में खेती के काम के लिये सावधानी दी गई है। क्योंकि आषाढ़ का महीना है और सफल बोने का यही समय है। साथ ही इसमें यह भी बताया गया है कि भील-किसान बिना साधनों के किसी प्रकार फसल पैदा करता है किन्तु देना देने के बाद उसके पास नाम मात्र का नाज शेष रहता है और वह गरीबी में अपने दिन व्यतीत करता है। भील की आर्थिक स्थिति का परिचय इस गीत से मिलता है।

गीत

पीली के परबाते एवां जागो रे।
समियों के उगमणो ”
आलस निंदर छोड़ा ”
जागी ने समकेर जुओ ”
टापरी टूटी भागे ”
माथे नथी थापड़ा ”
खड़बड़ खड़बड़ आंगुणु ”
मेंह नी भांके लागी ”
भरमर भरमर मेड़लो ”

जेठ असाड़ी नो दाड़ो एवां जागो रे।
वीज दाहो कुण आले ,,
वमणु आलवु कीदूं ,,
भाई भागिया ना दाहा ,,
जेम तेम खेती कीदी ,,
जवार बटी ने कोदरा ,,
नोव पोठी दाणा थाज्या ,,
वीज भरो ने हूँकड़ी ,,
पोठी दाणा रेज्या ,,
गीत जातु मेलो

अर्थ:—

पीला प्रातः काल है, अब जागो।
सूर्योदय का शुभ समय है— ,,
निद्रा और आलस्य छोड़ो ,,
जागो और चारों तरफ़ देखो ,,
झोंपड़ी टूटी फूटी है ,,
ऊपर (छत पर) केलु नहीं है— ,,
उबड़ खाबड़ आंगण है— ,,
वर्षा के झोंके लगते हैं— ,,
निरन्तर बूंदा बांदी होती है— ,,
ज्येष्ठ और आषाढ़ के दिन है— ,,
बीज और बैल कौन देगा ? ,,
दुगुना देने का तय किया है— ,,
भाई बन्धुओं के बैल लिये— ,,

जैसे तैसे फसल पैदा की-   अब जागो रे
ज्वार, बटी और कोद्रा पैदा हुआ- ”
नौ पौठी अनाज पैदा हुआ   ”
बीज और हूँकड़ी देदी   ”
बाद में एक पोठी नाज बचा   ”
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

एबा=अब। सुमियो=समय। समकेर=चारों तरफ। टापरी=झोपड़ी। थापड़ा=केलु। खड़बड़-खड़बड़=उबड़ खाबड़। मेइलो=वर्षा। ढाहो=बैल। आले=देगा। बमणु=दुगुना। ज्वार=नाज। बटी=एक प्रकार का नाज। कोदरा=एक प्रकार का नाज पोठी=नाप, तोल-तीन मन पांच सेर। हूंकड़ी=श्रम करने वालों को फसल अन्त में बन्धा हुआ नाज लुहार, सुथार, आदि को देते हैं—उसे हूंकडी कहते हैं।

गीत परिचयः—

गवरी (गौरी) नृत्य भीलों का प्रमुख नृत्य है। सामूहिक रूप से नृत्य किया जाता है। गवरी नृत्य केवल एक स्थान पर नहीं होता बल्कि विभिन्न स्थानों पर जा जा कर किया है। सैंकड़ों व्यक्ति गवरी नृत्य देखने के लिये आस पास के गांवों से आ आकर एकत्रित हो जाते हैं। भीलों में इस नृत्य के लिये बड़ा उत्साह होता है। घर के कामों को छोड़ कर ये गवरी खेलने जाते हैं।:—

पलासिया नी गवरी भेरिया बायेती
राते गवरी रमे
घेरी मांदल बाजे
जीणी थाली बाजे
मसके गवरी रमे
घणी रूपाली रमे

आपणे गवरी जोवे जावुं
जावुं तीम ते जावुं
हरकी रे हरकी जोडी ना
राते गवरी रंमे
आपणे गवरी जोवी
भेरिया हुरपण सड़ियुं
भेरियो धोलियां नो गुंवाल
भेरियो रमणे लागो
भेरियो आवे धामा दौड़े
भेरियो पलासिया नी हीमे
भेरियो रमतो रमतो आवे
भेरियो ठेकी ठेकी ने रंमे
भेरियो गवरी भेलो थाइयो
भेरियो रमणानों हुँसयार
वेरी मांदल वाजे
जीणी थाली वाजे
मसके गवरी रंमे
घणी गवरी में धाम
खूब मानवी आवे
कोक ते मूठ वाए
मांदल बन्द थाए
गवरी ऊँसी सड़वे लागी

अड़द उगी गइया
वे पानड़ियां थाई गइयाँ
भेरियाए खबर पड़ी
भेरियो उन्दू खाइं मते रे
भेरियो उन्दू खाडूं उड़ाड़े रे
खाडूं अंका भमने लागुं
वलतुं पासुं पड़े
वलतुं मसलाए लागे
मसलुं हाई लीदुं
बांदी ने कूटो
लोइयां नी झलक दड़ावो
एक वे दाड़ा बांदियो फरवो
गीत जातुं मेलो

—:-❀-:—

अर्थः—

फलासिया की गवरी* है, हे ! भेरिया वायेती
रात में गवरी खेलती है,
मंद गति से मांदल (ढोलकी) वजती है.

---

* राजस्थान के भीलों में गौरी नृत्य (गवरी) बहुत प्रचलित है । इसके केन्द्रीय कथानक में शिव-पार्वती या गौरी की एक दैत्य रत्ता करता है परन्तु इस कथानक के साथ ही अनेक नृत्य नाटिकाएं गूंथी रहती है जिसमें सृष्टि के आदि से लेकर सभ्यता के उदय, कृषि के आरम्भ तक की कथाओं का नाट्य किया जाता है । वर्षा के बाद आसोज-कार्तिक में इस नृत्य की धूम से, वातावरण में एक उल्लास और आनन्द की ध्वनि गुंजा करती है !

रात में गवरी खेलते हैं,
हमें गवरी देखनी है।
धीमी आवाज से थाली वजती है,
खूब जोर से गवरी खेलते हैं।
वहुत सुन्दर खेलते हैं।
हमें गवरी देखने जाना है,
जाना है तो जाओ;
सब समवयस्क साथी,
भेरिया को जोश चढ़ आया,
भेरिया गौओं का ग्वाल,
भेरिया खेलने लगा,
भेरिया दौड़ता धामता आता है,
फलासिया के समीप,
भेरिया खेलता खेलता आता है,
भेरिया उछल-उछल कर खेलता है.
भेरिया गवरी में शामिल हो गया है।
वह खेलने में निपुण है,
गूंजती हुई मांदल (ढोलकी) वजती है,
धीमी-आवाज में थाली वजती है,
खूब जोर से गवरी खेलते हैं;
गवरी में वहुत उत्साह है।
वहुत मनुष्य देखने आते हैं।
कोई मूठ (मंत्र) मारता है,
मांदल रूक जाती है,
गवरी ऊपर चढ़ने लगती है,
उड़द ऊग गये हैं,

दो पत्तों के हो गये हैं।
भेरिया को मा'लुम हुआ,
भेरिया जूते को उल्टा करके कुचलता है,
भेरिया उल्टा जूता उड़ाता है,
जूता आसमान में घूमता है।
वापस गिरता है,
वापस (गिरते समय) एक मुसलमान को लगता है,
मुसलमान को पकड़ लिया,
बांधकर पीटाई करो,
खून की धार बहा दो,
एक दो दिन बांधकर फिराओ।
गीत समाप्त करो।

—:※:—

गीत परिचयः—

यह गीत, समारोह में नृत्य के साथ २ स्त्री-पुरुषों द्वारा सम्मिलित रूप से गाया जाता है। इस गीत में द्वितीय महायुद्ध के छिड़ने के कारण तथा युद्ध के वातावरण का रोचक वर्णन किया गया है। भील जाति सामान्यतः शिक्षा से कोसों दूर है किन्तु इस गीत से स्पष्ट होगा कि वह भी आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों को सुन-सुनाकर भी अपने मौखिक साहित्य में स्थान देने को कितनी उत्सुक रहती है और इस गीत की आत्मा का अध्ययन करने पर हमें इस निर्णय पर पहुँचना पड़ता है कि किसी देश के इतिहास-लेखन में उसके लोक साहित्य की अवहेलना नहीं की जा सकती। वर्षों बाद इस गीत को पढ़कर आज भी परिस्थिति का सही २ अनुमान लगाया जा सकता है तो क्यों नहीं हम हमारे प्राचीन काल से प्रचलित लोक साहित्य के आधार पर तत्कालीन इतिहास की रूप रेखा निश्चित करें।

गीत

हँसु रई ने केवां बोले ई दनिया वेवे थाई रे
हँसु देसां ने परदेसां ये ,,
हँसु जरमर लड़ाई थाए ये ,,
हँसु नवी लड़ाई नवी ये ,,
हँसु कुणे लड़ाई करे ये ,,
हँसु जरमरी लड़ाई करे ये ,,
हँसु हीने कारणे लड़ाई है ये ,,
हँसु अंगरेज दूणो मासु.ल लिए ये ,,
हँसु जीनो कजियो लागो ये ,,
हँसु जरमर मासु.ल नहीं आले ये ,,
हँसु जरमर नो माल रोको ये ,,
हँसु अंगरेज माल रोके ये ,,
हँसु जरमर रई ने बोले ये ,,
हँसु मारो माल हंई रोकियो ये ,,
हँसु मुंते लड़वे आवु ये ,,
हँसु अंकागाड़ी लावे ,,
हँसु जरमर अका गोला दड़े ये ,,
हँसु जरमर गोला दड़े न धरती तोड़े ,,
हँसु भारी २ सेर तोड़तु आवे ,,
हँसु खारू राजा खारू है ये ,,
हँसु अलोटाई करतु आवे ये ,,

हाँसु भारी २ मलक लेतुं आवे ये ,,
हाँसु भारी २ मील तोड़तुं आवे ये ,,
हाँसु राते राते लड़वे आवे ये ,,
हाँसु राते अंकागाड़ी लावे ये ,,
हाँसु राते गोला दड़े ये ,,
हाँसु झंडा रोपतुं आवे ये ,,
हाँसु जमी लेतुं आवे ये ,,
हाँसु समदरिया पेले ढाले ये ,,
हाँसु वियाँ आवी लागां ये ,,
हाँसु एवाँ किमनुं हूँ थाए ये ,,
हाँसु थाधुं होही तीम थाहे ये ,,
हाँसु गीत जातुं मेलो ये ,,

कठिन शब्द:—

वेवे=दुःखी, संतप्त । होने=किसके । मासुल=कर, टैक्स । कजियो=झगड़ा, युद्ध । अंकागाड़ी=आसमान-गाड़ी अर्थात् वायुयान । अंका=आसमान । खारूं=दुष्ट । अज़ोटाई=दुष्टता । मलक=मुल्क, देश । किमनुं=किस प्रकर । थाधुं होही=जैसा होनहार होगा । तीम=तैसा, वैसा ।

अर्थ:—

सब मिल कर कहते हैं—यह संसार बड़ा दुःखी हो रहा है ।
देश और विदेशों के लोग संतप्त हैं ,, ,, ,,
(क्योंकि) जर्मनी में युद्ध हो रहा है । ,, ,, ,,
(यह एक) नई २ लड़ाई (छिड़ गई) है । ,, ,,
कौन युद्ध करता है ? ,, ,, ,,

जर्मनी युद्ध कर रहा है।
किसके कारण यह-लड़ाई हो रही है ?
अंग्रेज दूना कर लेते हैं।
इसी कारण से यह झगड़ा हो गया है।
जर्मनी कर नहीं देता है।
जर्मनी का सामान रोक दो।
अंग्रेजों ने माल रोक दिया।
जर्मनी ने कहा—
मेरा माल क्यों रोका गया ?
मैं युद्ध के लिए आता हूँ।
आसमान की गाड़ी (वायुयान) लाता है।
जर्मनी आसमान से गोले बरसाता है।
जर्मनी गोले डाल कर पृथ्वी को नष्ट करता है।
बड़े २ नगरों को नष्ट करता हुआ आरहा है।
राजा बहुत खारा है (क्रुद्ध है)।
(क्योंकि) प्रलय मचाता हुआ आरहा है।
(यह तो) बड़े २ राष्ट्रों को हस्तगत करता आरहा है।
बड़े २ कल कारखानों को नष्ट करता आरहा है।
रात के समय में लड़ने के लिए आता है।
रात में आसमान-गाड़ी (वायुयान) लाता है।
रात में ही गोले बरसाता है।
(अपने) झंडे (विजय के प्रतीक) गाड़ता हुआ आता है।
पृथ्वी को हस्तगत करता हुआ आता है।
समुद्र के उस पार (तीर)
वहाँ आ पहुँचा है।
अब क्या होगा ?
जो होनहार होगा वैसा ही होगा।
गीत समाप्त करते हैं।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में लगान सम्बन्धी वर्णन किया गया है। आज से कुछ वर्ष पूर्व तक सामन्ती व्यवस्था से भील-समाज अत्यन्त प्रताड़ित और शोषित था। जागीरदार खड़ी फसल का कूंता करते थे और मन माना वसूल कर लेते थे। एक समय तक इस 'कूंते' की प्रथा के खिलाफ भयंकर बगावत रही और धीरे २ वह बन्द की गई। उक्त गीत में 'कूंता' के के खिलाफ भील-समाज का असन्तोष व्यक्त किया गया है और विद्रोह कर कूंता करने वाले को मौत के घाट उतारा गया है।

गीत

हांसु रई ने केवां बोले ई — भोगे वान्दे पड़ियो
हांसु काड़ वालो भोगे ई — ,,
हांसु केडं कूंतू करे ई — ,,
हांसु काटा गंउंनुं काटा ई — ,,
हांसु भोग ठेके लेवे ने ई — ,,
हांसु कुण कोटारी वाजे ई — ,,
हांसु कुजंर लाल कोटारी है ई — ,,
हांसु वो ते नामेदार है ई — ,,
हांसु वो ते वातां नु परूणी है ई — ,,
हांसु दूणू कूंतू कीदूं ई — ,,
हांसु धामेलुं है ई — ,,
हांसु धामेला नी कोटड़ी भोगे भराये है ई — ,,
हांसु उन्दे मारो भोगे ई — ,,
हांसु भाई धूला नो भोगे ई — ,,

हांसु धूलाए कोटड़ी हादे ई   भोगे बान्दे पड़ियो रे
हांसु धूलूं थामा दौड़े ई   ,,
हांसु कुंजेर लाल कोठारी है ई   ,,
हांसु धूलाए पूमणां पूसे ई   ,,
हांसु मोये मरवो के नी मरवो   ,,
थानजी कूंतु गणु केहूं है   ,,
थानजी मारा कूंतू कमनी करजो   ,,
हांसु धूंलूं खोड़े गाले   ,,
हांसु धूलूं खोड़ा मांय दौड़ु   ,,
हांसु नीजे कान नीजे ई   ,,
हांसु वे न सार दाड़ा   ,,
हांसु थाम्लां नीं लोक पूमणां पूमे   ,,
हांसु धूलो थाणे काड़ो   ,,
हांसु कुंजेरलाल कोठारी ने नहीं माने   ,,
हांसु कुंजेरलाल काले भोगे मर हां   ,,
उन्दे मांके भोगे मर हां   ,,
थामेलां ने सोरे   ,,
हांसु पालो ने परवानां   ,,
मोरे मांगी ढोल देवाणो   ,,
मोरे वागे ढोल देवाणो   ,,
हांसु. मोरे साइला मेला   ,,
ननमाना नी याने   ,,

हांसु धूलो खोड़ा सांय है   मोगे वान्दे पड़ियो रे
हांसु भाइयां तीजे काने तीजे   ,,
भाइयां मारा नहीं रइयां नो जोगे   ,,
हांसु धाडू तियांर करो   ,,
हांसु सोरी सोरां हारां   ,,
भाइयां मारा ढालां ने तलवारां   ,,
पीली ने परवातां है   ,,
धाडूं धामा दौड़े है   ,,
धामेला नी कोटड़ी है   ,,
गीयुं ठेठा ठेठ है   ,,
कुजेरलाल वाजी रइयुं है   ,,
कोटारियां मजरो करो   ,,
भाइयां मारा तलवारां नी अणीयां   ,,
धूणियें न हांरिये मजरो करो   ,,
तोड़ादार वन्दूकें है   ,,
वन्दूकांनी मोरिये मजरो करो   ,,
धामेला नी कोटड़ी कुजेरलाल मरांणु   ,,
भाइयां मारा जीवतुं नही मेलियुं   ,,
भाइयां मारा धूलूं खोड़ेडं काड़ो   ,,
हांसु कुजेरलाल कोटारी मरांणु   ,,
गीत जातुं मेलो   ,,

—:※:—

अर्थः—

सब मिलकर कहते हैं–कि यह कूंता (लगान) झगड़े में पड़ गया है।
यह 'काड़ वाल' कूंता,
ज्यादा कूंता करता है,
'कट्ठे गेहुँ' का कूंता,
कूंता का ठेका लेते हैं।
कौन कोठारी (कूंता वसुल कर्ता) कहलाता है ?
कुर्जर लाल कोठारी है,
वह तो नामेदार (लेखक)भी है,
वह बड़ा बातूनी है,
उसने दुगुनां कूंता लिख दिया है।
धामेला गाँव है,
धामेला की कचहरी में कूंता भर रहा है,
अधिक कूंता लेते हैं।
धूले का कूंता,
धूले को कचहरी बुलाते हैं,
धूला दौड़ता-धामता जाता है,
कुर्जरलाल कोठारी है,
धूले से प्रश्न पूछता है।
कूंता देना है या नहीं
(धूला ने कहा) श्रीमान ! कूंता बहुत ज्यादा है,
श्रीमान ! मेरा कूंता थोड़ा कर दीजिये,
धूले को खोड़े में डालते हैं (खोड़ा, काठ का एक फंदा होता था जिसमें अपराधी को बन्द कर देते थे)
धूले को खोड़े में डाल दिया।
बिल्कुल चुप–चाप,
दो–चार दिन पश्चात्,

धामेला के लोग पूछते हैं,
[लोगों ने कहा–] धूले को मुक्त करो,
कुर्जरलाल कोठारी नहीं मानता है।
लोगों ने व्यंगात्मक स्वर में कहा–कल भोग भर देंगे,
बेहिसाब कूंता देंगे।
धामेला के चोराहे पर,
प्रभात के स्वर्णिम समय में,
चौराहे पर बहुत जोर से ढोल बजता है,
चौराहे पर खतरे का ढोल बजता है,
चौराहे पर सब भाई बन्धु एकत्रित होते हैं।
विचार विमर्श करते हैं।
धूला खोड़े के अन्दर है,
भाइयों चुप–चाप,
जीवित रहने के योग्य नहीं हैं
लूटने के लिए दल तैयार करते हैं।
लड़के तथा लड़कियाँ सब,
ढालें और तलवारें
प्रभात के शुभ समय में,
दल दौड़ता–धामता है,
धामेला की कचहरी पर,
पहुँच जाता हैं।
कुर्जरलाल कोठारी कहलाता है,
कोठारी को प्रणाम करो,
तलवार की नोकों से।
धनुष–बाण द्वारा प्रणाम करो।
तोड़ादार बन्दूके हैं,
बन्दूक की नालों से प्रणाम करो।
धामेला की कचहरी में कुर्जर लाल मारा गया,

भाइयों, जीवित मत छोड़ो,
भाइयों, भूल् को खोड़े से निकालो,
कुर्जर लाल कोठारी मारा गया,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्द:—

भोग=कूंता, नाज के रुप में ही लगान। वान्दे पड़ियो=झगड़े में पड़जाना। केडुं=अधिक, कठोर। कोटड़ी =कचहरी। खोड़े=बन्दी बनाने के लिए एक काष्ट यंत्र। अणीयां=नोकें। मोरिये=नालें।

गीत परिचय:—

उक्त गीत, सत्य घटना के आधार पर रचा गया है। कुछ वर्षों पूर्व भीलों से लगान वसूल करने के लिये सरकार की ओर से जोर जबरदस्ती की गई तो उसके खिलाफ भीलों में बगावत खड़ी हो गई। उसको दबाने के लिये सेना भेजो गई। विद्रोह दबा दिया गया और गीत की रचना करली गई। इस प्रकार के गीत भील-क्षेत्र में तत्काल प्रचलित और प्रसिद्ध हो जाते हैं।

गीत

रड़ ने केवां बोले रे मानगढ़ माते धूमाल् करे
हांसु मानगढ़ वाजे रे ,,
हांसु एक गरू ने सेला ,,
हांसु जूनी धूणी जूनी ,,
हांसु धूणिये पूजा करो ,,
हांसु दनकां जातरी आवे ,,
हांसु गणां जातरी आवे ,,
हांसु मानवियां नो मेलो ,,
हांसु भारी मेलो भारी ,,

हांसु मानवी एके करे मानगढ़ माते भूयाल करे
हांसु बावां सेला करे ,,
हांसु भारी हास सलावे ,,
हांसु भारी दुकणां काटे ,,
हांसु भारी मानता सोड़े ,,
हांसु बावां उल्टी मत भाले ,,
हांसु राजानो भोगे बन्द करावे ,,
हांसु आपां भोगे नहीं आलं ा ,,
हांसु राजाए खबर लागी ,,
हांसु कूणे-कूणे राजा ,,
हांसु डूँगरपुर नु राजा ,,
हांसु बांसवाड़ा नु राजा ,,
हांसु राजा एके थाइयां ,,
हांसु बावाएँ हम जावो ,,
हांसु बावां ते नहीं हमजे ,,
हांसु खेरवाड़ा नी कपणी हादो ,,
हांसु धामती कपणी हादो ,,
हांसु बीडियुँ ने कागदियु ,,
हांसु ाके धामा-दौड़े ,,
हांसु खेरवाड़ा नी सावणी ,,
हांसु बंगले भूरियु बैठु ,,
हांसु भूरियूँ बीड़ियु कागद खोले ,,

हांसु टपर टपर वांसे	मानगढ़ माते धूमाल करे
हांसु मानवी पल्टी गियां	,,
हांसु भोगे नहीं आले	,,
हांसु रूपणी वेगी मोकलो	,,
हांसु धामती बुगलू वाजे	,,
हांसु बुगलां ने हमसे	,,
हांसु फौजां त्यांर थाव्जी	,,
हांसु फौजां धामा-दौड़े	,,
हांसु डूंगरपर ने हेरे	,,
हांसु गीयां ठेठा ठेठ	,,
हांसु भावांएँ हमजावे	,,
हांसु मानवी हम जावे	,,
हांसु बावां हम जावियाँ नी माने	,,
हांसु मसिनां मांडो	,,
हांसु बन्दूकां सलावो	,,
हांसु बन्दूकां नी सूाले	,,
हांसु हुँए कला थाव्जी	,,
हांसु बावां नी तो कला है	,,
हांसु भूणी नी तो कला है	,,
हांसु बावां ते नी माने	,,
हांसु रूपणी हारी गई	,,
हांसु रूपणी मतु बांदे	,,

हांसु कोइक वैरी मलियो मानगढ़ माते धूमाल करे
हांसु एक ते कला भाले ,,
हांसु ढाई नु लोई ,,
हांसु धूणी मांही दड़ो ,,
हांसु बवां हारी जाहे ,,
हांसु भूरियु नारेल मंगावे ,,
हांसु भूरियु ढाई ते मंगावे ,,
हांसु नारेल मांही लोई गाले ,,
हांसु नारेल लई ने मोकले ,,
हांसु जातरी गीयु ठेठा ठेठ ,,
हांसु जातरी धूणी मांही नारेल दड़े ,,
हांसु देवता नांही गीयु ,,
हांसु धूणी अली गई ,,
हांसु भुरियाए खबर लागे ,,
हांसु भूरियो मशिन सलावे ,,
हांसु रूकडां भागवे लागां ,,
हांसु मानवी मराई गियां ,,
हांसु हिंकड़ां आदमी मूआं ,,
हँसु मानवियां गरणां लुटाई गियां ,,
हँसु बावाँ नाई गियाँ ,,
गीत जातुँ मेलो । ,,

—:*:—

अर्थः—

सब मिल कर कहते हैं—मानगढ़ पर झगड़ा होता है।
मानगढ़ प्रसिद्ध है,
एक गुरु और दो शिष्य हैं,
बहुत प्राचीन धूणी है,
धूणी की पूजा करो।
प्रतिदिन यात्री आते हैं,
अनेक यात्री आते हैं,
मनुष्यों का मेला है,
बड़ा भारी मेला है,
लोगों को इकट्ठा करते हैं,
साधु उनको शिष्य बनाते हैं।
बड़े प्रसिद्ध हो गये हैं
बड़े बड़े कष्टों को दूर कर देते हैं
बड़ी बड़ी मनौती चढ़ती है।
साधु लोग उल्टी सलाह देते हैं,
राजा का लगान बन्द कराते हैं,
हमें भोग नहीं देना है।
राजा को पता लगा,
कौन राजा ?
डूंगरपुर का राजा,
बाँसवाड़ा का राजा,
राजा एकत्रित हुए।
साधुओं को समझाते हैं,
साधु नहीं मानते हैं।
खेरवाड़ा की कंपनी (पुलिस दल) बुलवाते हैं,
बड़ी तेजी से कंपनी बुलाई जाती है।

बंद लिफाफे में पत्र है;
डाकिया धामता-दौड़ता है।
खेरवाड़ा की छावनी के,
बंगले में अंग्रेज बैठा है,
अंग्रेज बंद लिफाफा खोलता है,
टपर-टपर (ध्वनि में) पत्र पढ़ता है।
लोग बदल गये हैं,
लगान नहीं देते हैं,
सेना जल्दी भेजो।
तेज बिगुल बजती है,
बिगुल के सहारे,
सेना तैयार होती है,
सेना दौड़ती धामती,
डूँगरपुर के मार्ग पर,
गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाती है।
साधुओं को समझाते हैं,
मनुष्यों को समझाने से नहीं मानते हैं,
साधु समझाने से नहीं मानते हैं,
मशीन गनें लगाओ,
बन्दूकें चलाओ,
बन्दूकें नहीं चलतीं हैं,
क्या बात हो गई ?
साधुओं का प्रभाव है,
धूणी का प्रभाव है,
साधु नहीं मानते हैं,
सेना भी हार गई।
सेना में सलाह करते हैं,

एक शत्रु (विरोधी पक्ष का व्यक्ति) मिल जाता है।
और एक उपाय सुझाता है,
गाय का रक्त,
धूणी में डाल दो,
धूणी का प्रभाव नष्ट हो जायगा,
साधु पराजित हो जायेंगे।
अंग्रेज नारियल मंगवाता है,
अंग्रेज गाय मंगवाता है,
नारियल में गो-रक्त भरता है,
नारियल देकर भेजता है।
एक यात्रि नारियल लेकर जाता है,
यात्रि गन्तव्य स्थान पर पहुँचता है,
यात्रि धूणी में नारियल डाल देता है।
धूणी का देवत्व नष्ट हो जाता है
धूणी बुझ जाती है।
अंग्रेज को समाचार मिलता है,
वह मशीनगन चलाता है,
वृक्ष गिरने लगते हैं,
मनुष्य मारे जाते हैं,
सैंकड़ों व्यक्ति मारे गये।
मनुष्यों के आभूषण लुट गये,
साधु भाग गये,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

धूमाल़=झगड़ा, उधम मचाना। स्ेला=शिष्य। दुकणां=दुःख, कष्ट, रोग आदि। मानता=मनौती। कला=प्रभाव, चमत्कार। ढाही=गाय। लोई=रक्त। अली गई=बुझ गई। हिंकड़ां=सैंकड़ों। गरणां=आभूषण।

गीत परिचयः—

सर्व प्रथम जब अंग्रेज राजस्थान में आये तो विभिन्न प्रकार की अनेकों अफ़वाहें फैली, उन अफ़वाहों के आधार पर अनेक लोक गीतों का उस समय निर्माण हुआ। भील क्षेत्र में ऐसी कई अफ़वाहें आये दिन फैलती रहती हैं; जिनके कारण भील-समाज शंकित हो जाता है। उक्त गीत भी इसी प्रकार की निराधार अफ़वाहों के आधार पर रचा गया है। भील क्षेत्र में समय समय पर पुराने गीतों का स्थान नये गीत ले लेते हैं और पुराने विस्मृति के गर्भ में खो जाते हैं।

गीत

रई ने केवां बोले रे	पूरबिया राजा
पुरब नो है भुरियो रे	,,
भुरियो कोरट करे रे	,,
दरियाव पेले ढ़ाल् रे	,,
जोड़ी रे जोड़ी ना रे	,,
हूँ मनसोवो ने बांधो रे	,,
सोले दल नी वातां रे	,,
हामरो मारी वातां रे	,,
मगरो जोवे जाऊँ रे	,,
फौजे त्यांर करो रे	,,
पांडुवड़े बोलावो रे	,,
गोड़िलां पलाणो रे	,,
मावतड़ो बोलाड़ो रे	,,
हामरो मारी वातां रे	,,

	पूरबिया राजा
हाथिड़ां अम्बा बाड़ी रे	
अम्बा बाड़ी सोड़ो रे	"
रायकां ने बोलावे रे	"
ऊँटिया काठी मांडो रे	"
फौज त्यांर करो रे	"
बारे तोपां करो रे	"
फौजें त्यांर थाव्जी रे	"
जोदा भरती करो रे	"
अदा भूरिया ने आदा बीजा रे	"
बुडोलां ने हमसे रे	"
फौज सालवा लागी रे	"
धूंधली खेह उड़े रे	"
सूरज झांका जांके रे	"
पुरब नो है राजा रे	"
दरियाव पेले हाले रे	"
आवे धामा दौड़ रे	"
आयो दरिया माथे रे	"
नावां गे नावड़ियो रे	"
हणे कांमें बैठो रे	"
नाव त्यांर करो रे	"
पुरबिया नी फौज रे	"
आधी नाव आधी जाजे रे	"

नावां नां तो हूँ पइसा लिये रे पूरबिया राजा
नावां नां तो नवसे पइसा लिये रे ,,
जाज़ा ना हजार पइसा लियु' रे ,,
हजार लिये तो हजार आलु' रे ,,
नावां नो नावड़ियो रे ,,
वेहुलोने हिंडजे रे ,,
जाज़े त्यांर कीदा रे ,,
थोड़ी २ फोजड़ली उतारो रे ,,
हाथीड़ा उतारो रे ,,
थोड़ा २ घोड़िला उतारो रे ,,
थोड़ा २ ऊंटिड़ा उतारो रे ,,
थोड़ा २ नोकरिया उतारो रे ,,
थोड़ां २ भूरियां उतारो रे ,,
भूरिञ्या वारी फौज़े रे ,,
पवनिया ने हमस् रे ,,
हमसे जहाज़ साले रे ,,
समंद धामा दौड़े रे ,,
जाज़े धामा दौड़े रे ,,
आजी ओले ढ़ाले रे ,,
आगई ठेठां ठेठ रे ,,
हाथिड़ा उतारो रे ,,
ऊंटिड़ा उतारो रे ,,

घोड़िलां उतारो रे — पूरविया राजा

गौरां लोक उतारो रे — ,,

नोकरियां उतारो रे — ,,

उतारी रे करीने रे — ,,

दरिया ओले ढाले रे — ,,

वियाँ मकाम दियाँ रे — ,,

तम्बुडां तणावे रे — ,,

खु ंटियाँ घमकावो रे — ,,

धोला नीला तम्बु रे — ,,

हाथिड़ाँ ने बांधो रे — ,,

घोड़िलां ने पायगां बांधो रे — ,,

बांधी रे करी ने रे — ,,

हाथी वडला ने डारां रे — ,,

वडले जाणु नाको रे — ,,

ऊ ंटाएँ कड़वा लीम्बड़ा रे, — ,,

घोड़ाएँ हरमा मूँगे रे — ,,

सपाहियांने पाकां पेटियाँ रे — ,,

आलो रे करी ने रे — ,,

हुता घोरां घोरे रे — ,,

आदी ने मझरातां रे — ,,

परवातां ने पोरे रे — ,,

पीली ने परवातां रे — ,,

राई ने केवां बोले रे पूरबिया राजा

भूरिज्यो रई ने बोले रे ,,

फौजे त्यांर करो रे ,,

बुगेलां ने हमसे रे ,,

भूरज्यो दरपण दिये रे ,,

दरपण देतो आवे रे ,,

हाथिड़ा मोकलावो रे ,,

वलते हाथिड़ा घूमे रे ,,

मावतड़ा लड़े रे ,,

घोड़िलां नी घूमर रमती आवे रे ,,

घोड़िलां घूमे न माला झमके रे ,,

ऊँटियांरी लसकर लादी आवे रे ,,

धुंधली रे खेहे उड़े रे ,,

पड़ावां पड़ावां भूरिया आवे रे ,,

भूरियो साव दगा माते आवे रे ,,

भूरियो साव मेवाड़ आवी लागो रे ,,

भूरियो साव दरपण देतो आवे रे ,,

मेवाड़ ना महाराजाए खबर लागी रे ,,

कल्ला माते दोवड़ पौरां मेलो रे ,,

मेवाड़ ना राजा धुजवे लागा रे ,,

पूरबनो तो कोक राजा आवे रे ,,

यो तो राजा दग्गा माते आवे रे ,,

सि़तौड़ माते महाराणोजी है् रे — पूरबिया राजा
महाराणोजी ने धायती खबर मांगी है् रे ,,
कोक राजा आवे है् रे ,,
सि़तौड़ में भरियां दरीखानां रे ,,
कल्ला मांये भरियाँ ने दरीखानां रे ,,
दरीखानां मांये होल़ बत्ती उमरावे रे ,,
होल़ बत्ती हामरो मारी वातां रे ,,
होल़ बत्ती मरवे रखे हौसो रे ,,
राज भी जाहे ने मेवाड़ भी जाहे रे ,,
होल़ बत्ती बालक रांडी थाहे रे ,,
भूरियो दगा माते आवे है् रे ,,
सि़तौड़ वालो़ राजा है् रे ,,
राजा बोलमा बोले है् रे ,,
सि़तौड़ नी धणियाणी है् रे ,,
राटा हैरण माता है् रे ,,
भारी मानता बोले है् रे ,,
मावतड़ा नी हूदी हाथी सडावुं हो रे ,,
एवके हेले तो मेवाड़ थारे खोरे है रे ,,
सि़तौड़ वालो़ राजा बोलमा बोले है् रे ,,
भारी भारी मानता कीदी़ रे ,,
भारी भारी देवता रे ,,
मेवाड़नां देवता हाजर थावे है् रे ,,

देवता वाली फौजे त्यांर करे रे पूरब्रिया राजा
सितौड़ मांये नवलाख देवता रे ,,
ई देवता तो सानी फौज लेजाहे है रे ,,
मेवाड़ नां मानवियांए खबर पड़ी है रे ,,
ई देव तो साना साना जावे है रे ,,
ई देव तो सानी लड़ाई लड़े है रे ,,
पूरब्रियो वेवे थायो रे ,,
नव लाखे देव तो धूलो उड़ावे रे ,,
कांगड़ी ने भाटा उड़े रे ,,
पूरब्रियो नाहवे लागो रे ,,
भूरिया वाली फौजे रे ,,
फौजे पासी फरजी रे ,,
पूरब्रियो हारी गीयो रे ,,
मेवाड़ नो राजा जीती गीयो रे ,,
देवता हेले आयो रे ,,
गीत जातुं मेलो रे ,,

अर्थः—

सब मिल कर कहते हैं—पूर्व देश का सम्राट पूर्व में गोरा (राजा) है,
गोरा (राजा) अदालत करता है,
समुद्र के उस पार,
सब एक समान मिल कर,
क्या विचार-विमर्श करते हैं ?

सब दिल खोलकर बातें करते हैं।
मेरी बात सुनो,
पर्वत-देखने के लिये जाता हूँ।
सेना तैयार करो,
घोड़े के चरवाहों को बुलाओ,
घोड़ों पर (काठी) जीन कसाओ।
महावत को बुलाओ,
मेरी बात सुनो,
हाथी पर अम्बावाड़ी (बैठने की काठी, हौदा),
अम्बावाड़ी चढ़ाओ।
ऊँटों के चरवाहों को बुलाओ,
ऊँटों पर काठी लगाओ।
सेना तैयार करो,
बारह तोपें तैयार करो,
सेना तैयार हो रही है।
सैनिक भरती करो,
आधे गोरे और आधे अन्य।
बिगुल के सहारे,
सेना चलने लगी,
धूल की रज उड़ने लगी,
(जिससे) सूर्य धूंधल में ढक गया।
पूर्व का राजा,
समुद्र के उस पार है,
दौड़ता-धामता हुआ आता है।
समुद्र के किनारे आ गया है।
नावों के नावड़िये (केवट),
किस काम से बैठे हैं ?

नावें तैयार करो ?
पूर्व के राजा की सेना,
आधी नाव में और आधी जहाज में है;
नावों के क्या पैसे लेते हो ?
नाव के नौ सो पैसे लगते हैं।
जहाज के क्या पैसे लगते हैं ?
जहाज के एक हजार पैसे लेता हूँ।
हजार लोगे तो हजार देता हूँ।
नावके नावड़िये,
जल्दी चलना है।
जहाजें तैयार कीं,
थोड़ी २ सेना उतारो,
हाथियों को उतारो।
थोड़े २ घोड़े उतारो।
थोड़े २ ऊँट उतारो,
थोड़े नौकर भी उतारो।
थोड़े गोरे व्यक्तियों को उतारो।
थोड़े गोरे लोगों को उतारो।
हवा के सहारे,
जहाज चलते हैं,
समुद्र-दौड़ता-थामता है,
जहाज दौड़ते थामते हैं।
इस किनारे आ पहुँचते हैं,
ठेठ आ पहुँचते हैं।
हाथी उतारो,
ऊँट उतारो,
घोड़े उतारो,

गोरे लोगों को उतारो,
नौकरों को उतारो,
उतारने के पश्चात,
समुद्र के इस पार,
पड़ाव डालो।
तम्बू खींचे जाते हैं।
खूंटियाँ गाड़ी जाती हैं,
सफेद और नीले डेरे हैं
हाथियों को बांध दो,
घोड़ों को घुड़साल में बांध दो।
बांध लेने के बाद,
हाथियों को वटवृक्ष की शाखाएँ,
वटवृक्ष के नीचे खाने को दो।
घोड़ों को हरे मूंग,
ऊँटों को कड़वे नीम,
सैनिकों को कच्ची भोजन-सामग्री, देने के बाद
गहरी निद्रा में सो जाते हैं।
ठीक मध्य रात्रि होती है।
प्रभात के समय में,
पीले प्रातः काल में,
सब एक साथ कहते हैं,,
(अंग्रेज) गोरा शान्ति के साथ कहता है,
सेना तैयार करो?
बिगुल के सहारे।
अंग्रेज दूर-दर्शक-यंत्र लगाता है,
(उससे) देखता हुआ आगे बढ़ता है,
हाथियों को भेज दो,

तत्पश्चात हाथी घूमते हैं ।
महावत सावधान है ।
घोड़ों की कतारें झूमती हुई आ रही हैं,
घोड़े घूमते हैं तथा मालाएँ चमकती हैं ।
ऊँटों की कतारें आने लगती हैं ।
धूंधली धूल उड़ती है
पड़ाव पर पड़ाव डालता हुआ गोरा आता है
अंग्रेज धोखा देने आ रहा है ।
अंग्रेज मेवाड़ आ पहुँचता है,
दूर-दर्शक-यंत्र से देखता हुआ आता है,
मेवाड़ के महाराणा के पास समाचार पहुँचे ।
किले की सुरक्षा के लिये दुगुने सैनिक नियुक्त करो ।
मेवाड़ का राजा कांपने लगा,
पूर्व का कोई राजा आ रहा है ।
यह राजा तो धोखा देने आरहा है,
चितौड़ पर महाराणा का राज है ।
महाराणा ने तुरंत समाचार मंगवाये,
कोई राजा आ रहा है ।
चित्तौड़ का सभा-मंडप (सभासदों से) भर गया है,
किले का सभा-मंडप भर गया है.
सभा-मंडप में सोलह-बत्तीसा उमराव हैं ।
(महाराणा ने कहा) सरदारों ! मेरी बात सुनो
(आप) मृत्यु की चिन्ता न करो ।
(नहीं तो) राज्य और मेवाड़ दोनों चले जायेंगे,
बालिकायें विधवा हो जायेंगी,
अंग्रेज धोखा देने आ रहा है ।
चित्तौड़ का राजा है,

राजा मनौती लेता है (देवी से प्रार्थना करता है)।
चित्तौड़ की देवी,
हैरण माता है।
बहुत बड़ी मनौती करता है कि महावत सहित हाथी चढाऊँगा।
इस बार चितौड़ तेरी ही शरण में है,
चित्तौड़ का राजा मनौती करता है।
बड़ी बड़ी मनौतियां लेता है-
बड़े बड़े देवताओं की।
मेवाड़ के देवता उपस्थित होते हैं,
देवता अपनी सेना तैयार करते हैं।
चित्तौड़ में नौ लाख देवता हैं,
ये देवता चुप-चाप अपनी सेना लाते हैं,
मेवाड़ के लोगों को समाचार मिलते हैं,
देवता गुप्त रूप से जाते हैं,
और गुप्त युद्ध करते हैं।
पूर्व का राजा व्याकुल हो जाता है,
नौ लाख देवता धूल उड़ाते हैं
कंकर और पत्थर उड़ाते हैं।
पूर्व का गोरा राजा भागने लगा,
अंग्रेजों की सेना,
वापस मुड़ गई,
पूर्व का राजा पराजित हो गया,
मेवाड़ का राजा विजयी हुआ।
देवताओं ने सहायता की।
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः —

पेलेढ़ाल्=परले पार, दूसरे किनारे। दल्=दिल। जोवे=देखने। पाद्दड़े=चरवाहे। पलाणो=सजाओ। धाऽर्जारे=होगई है। जोदा=यौद्धा। बुगेलां=बिगुल।

हमसे=सहारे ! खेहे=धूल की रज । जाज़े=जहाज। नवसे=नौ सो। पोरे=प्रहर, समय । दरपण=कांच, यहाँ दूर दर्शक यन्त्र से अर्थ है। झमके=चमके। दगा= धोखा। कल्ला=किला। दोवड़=दुगुना। दरीखाना=दरबार, सभा। बोलमा बोले= मनौती लेना ।

गीत परिचयः—

अंग्रेज जाति अत्यन्त चतुर और दूरदर्शी है। भारत में व्यापार करने के लिये आई और धीरे २ अपनी कूटनीति से हुकूमत करने लग गई। यह ऐतिहासिक सत्य है। पिछड़ी और अशिक्षित कही जाने वाली भील जाति की दृष्टि कितनी सूक्ष्म और पेनी है; इस गीत से उसका परिचय मिलता है। अंग्रेजों ने राजस्थान पर कैसे अधिकार किया, उसका एक काल्पनिक चित्र इस गीत में खींचा गया है।

गीत

रई ने केवां बोले रे — भूरियुं हुई आवे है
मगरो जोवे आवे रे — ,,
पुसतुं पुसतुं आवे रे — ,,
हे भूरिया पूसी ने हूँ कामे रे — ,,
मगरां मांए ते कूंण मोटो मगरो रे — ,,
मगरा पुसतुं आवे रे — ,,
मगरे मगरे आवे रे — ,,
दरपण देतुं आवे रे — ,,
मगरो जोतुं आवे रे — ,,
कूण है मोटो मगरो रे — ,,
थारे हूँ कांमे है रे — ,,
मारे ते जोवुँ है रे — ,,

आवे तीने आवे रे	भूरियुं हंईं आवे हे
आवे धामा दौड़े रे	"
दरपण देतुं आवे रे	"
भूरा ने मूंडा नुँ हे रे	"
भूरू भूरू देखाए हे रे	"
मगरो मगरो वाजे हे रे	"
मगरां मांए ने कुण मोटो मगरो रे	"
आवू मोटो मगरो रे	"
घुमतुं घुमतुं आवे रे	"
आवू लगानो लीदो रे	"
टट माते गियुं रे	"
फरी हरी ने जुए रे	"
भूरियुं राजुं थायंयु	"
वावन सौरां वावन	"
राजानां हे सौरां वावन	"
वावन रजवाडां वावन	"
सौरां हकरें करे	"
आवू मगरो आवू वाजे हे	"
आवू हकरे गाले हे	"
भूरिया नुं राज करे	"
किनुं राज वाजे	"
हिरोई वानुं राजा	"

भोरूं राजा भोरूं	भूरियुं हंई आवे है
राजा कोड़े जाए	,,
राजा हांमल़ मारी वात रे	,,
सोटुं काम सोटुं	,,
राजाउँ वसन मांगे	,,
भोरूं राजा भोरूं	,,
भूरियाए वसन आले़	,,
भूरियुं राई ने बोले	,,
आबू मगरो आलो़	,,
राजा नटी गीयुं	,,
राजाए भूरियुं भोलवे	,,
मारे खोलु. मांडु	,,
थोड़ी जगा आलो़	,,
मारे झूंपड़ी मांडु	,,
रांजा भोलवाई गियो	,,
जगा आली़ दीदी	,,
भूरियुं कोठी मांडे	,,
बावन राजा माते	,,
नवी कानून काड़े	,,
भूरियुं राज करे	,,
आबु लेई काडियो	,,
गीत जातु मेलो	,,

अर्थ:—

सब एक साथ कहते हैं—अंग्रेज क्यों आता है ?
पर्वत देखने आता है।
पूछता हुआ आता है,
हे अंग्रेज ! पूछने से क्या काम है ?
पहाड़ों में सबसे बड़ा पहाड़ कौनसा है ?
पूछता हुआ आता है।
पहाड़ पर होकर आता है।
कांच से देखता हुआ आता है।
पहाड़ देखता हुआ आता है।
बड़ा पहाड़ कौनसा है ?
तुझे उससे क्या काम है ?
मुझे तो देखना है,
आना है तो आ।
दौड़ता-थामता आता है,
दूर-दर्शक यंत्र से देखता हुआ आता है।
भूरे मूँह वाला है,
(वह) भूरा (गोरा) भूरा दिखाई देता है।
पर्वत, पर्वत कहलाता है,
पर्वतों में बड़ा पर्वत कौनसा है ?
आबू बड़ा पर्वत है।
पूछता हुआ आता है।
आबू के निकट आता है,
ठेठ शिखर पर आता है,
घूम फिर कर देखता है,
भूरिया (गोरा) बड़ा प्रसन्न होता है।
बावन चौराहे हैं,
बावन राजाओ के चौराहे हैं।

वावन रियासतें हैं,
चोराहों पर अधिकार करता है,
आबू पर्वत आबू कहलाता है।
आबू पर भी अधिकार करता है,
अंग्रेज राज्य करना चाहता है।
किस राजा का राज्य कहलाता है ?
सिरोही वाले राजा का राज्य है
राजा भोला है।
(अंग्रेज) राजा के पास जाता है
हे राजा ? मेरी बात सुनो !
एक बहुत छोटा काम है;
राजा से वचन मांगता है,
राजा भोला (सीधा) है।
अंग्रेज को वचन दे देता है।
अंग्रेज रुक कर कहता है।
आबू पहाड़ मुझे दे दो,
राजा ने अस्वीकार कर दिया।
अंग्रेज राजा को (भुलावा) चक्कर देता है,
(अंग्रेज ने कहा—) मुझे एक झोंपड़ी बनानी है,
(अतः) थोड़ी सी जगह दे दो,
झोंपड़ी बनाने के लिए,
राजा चक्कर में आ गया,
और जगह देदी।
अंग्रेज कोठी बनवाता है,
बावन ही राजाओं पर,
नये नियम लगाता है,
अंग्रेज राज्य करता है,

आत्रू ले लेता है।

गीत समाप्त करो।

शब्दार्थः—

भूरियुं=गोरे लोग, अंग्रेज। दरमण=दूर-दर्शक-यंत्र। हक्रे करे=अधिकार में लेना। मोलवे=भूलावा देना, चक्कर देना। खोलुं=घास-फूंस की झोंपड़ी। लेई काड़ियों=ले लिया।

गीत परिचयः—

ठेके की प्रथा के विरुद्ध बहुत प्राचीन काल से आवाज बुलन्द की जाती रही हैं और भील-समाज ने समय समय पर इसके विरुद्ध आन्दोलन किया है। इस गीत में भी ठेके की नीति का विरोध किया गया है और अपना असन्तोष बताया है।

गीत

रई ने केवाँ बोले यो राजा	ठेके मुआल् आल् हैं
ठेके मुआल् आलहै रे यो	,,
भूकियो राजा भूकियो यो	,,
ईडर वालुं राजा यो तो	,,
ठेके मुआल् नहीं लेवो रे यो	,,
लकियां ने कागदियाँ यो	,,
ठेकुँ लीलम थाए यो	,,
गाम गाम कागद् मोकलो यो	,,
यो राजा ठेके मुआल् आले है यो	,,
राजा मानवी हादे यो	,,
मानवी धामा दौड़े यो	,,

ईडर जाई लागां हैं यो   राजा ठेके मुआल् आल हैं
मानवी डोड़ी हाजर थाइयां यो   ,,
बावजी ठेके मुआल् नहीं आलो यो   ,,
बावजी मुआल् नुं ठेकुं नहीं लियां यो   ,,
यो राजा गमेतियाँ कैद करावे यो   ,,
मानवी ऊल्लर करे यो   ,,
राजा गमेती छोड़ी दिदो यो   ,,
गमेती छूटी गिया   ,,
गीत जातुं मेलो   ,,

—:※:—

अर्थ:—

सब एक साथ कहते हैं—यह राजा महुओं का ठेका देता है-
महुओं का ठेका होता है,
यह तो बड़ा भूखा (अत्याचारी) राजा है,
यह तो ईडर का राजा है।
महुओं का ठेका मत लो,
(राजा ने) जगह जगह पत्र लिखे,
ठेका नीलाम हो रहा है।
गाँव-गाँव में पत्र भेजे,
यह राजा महुओं का ठेका दे रहा है।
राजा मनुष्यों को बुलाता है,
लोग दौड़ते-धामते,
ईडर जा पहुँचते हैं।
द्वार पर उपस्थित होते हैं,
(और प्रार्थना करते हैं) महुओं ठेका मत दीजिये,
श्रीमान्! महुओं का ठेका नहीं लेते हैं।
राजा उनके गमेतियों (मुखियों) को गिरफ्तार करा लेता है

लोग हो-हूल्लड़ (शोर) करते हैं।
हे राजा ? हमारे गमेतियों को छोड़ दो।
गेमेती मुक्त हो जाते हैं।
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्द:—

मुआल=महुए के वृक्ष, जिन पर महुआ फल लगता है। भूकियो=अत्याचारी। लीलम=नीलाम। ऊल्लर=हुल्लर=हुल्लड़ या शोर मचाना।

गीत परिचय:—

महाराणा सज्जनसिंहजी ने जब प्रसिद्ध महल सज्जनगढ़ बनवाया तो बहुत नीचे से पानी और पत्थर लेजाना पड़ता था। उसके निर्माण के लिये कारीगरों और मजदूरों को सिपाही घेर कर लाते थे और काम करवाते थे। सिपाहियों के गाली गलोज से ये लोग बड़े दुःखी रहते थे। इस गीत में उसी महल के निर्माण का वर्णन है-

गीत

रई ने केवां बोले रे	पाणी नीलगज माते
कुणे राजा व्राजे रे	,,
राजा सजनहिंगजी व्राजे रे	,,
मगरे मेल मंडावे रे	,,
सजनगढ़ मंडावे रे	,,
हलावटां तेड़ावो रे	,,
कारीगरां तेड़ावो रे	,,
कारीगरां नो घेरो रे	,,
भसतियाँ नो घेरो रे	,,
दनको घेरो पड़े रे	,,

ओड़ां नो है घेरो रे पाणी नोवगज माते
मजूरां नो है घेरो रे ,,
दनको सपाई आवे है ,,
दनकां केलू फोड़े है ,,
सपाई आवे न थारी—मारी करे रे ,,
दनकां मजूर हादे रे ,,
दनको घेरो पाड़े रे ,,
राजा रई ने बोले रे ,,
ऊँसो मेल मंडाओ रे ,,
मेला मांते रेई ने ,,
सीत्तौड़ नो कलो देखाए रे ,,
गीत जातुं मेलो रे ,,

—:※:—

अर्थः—

सब मिल कर कहते हैं—पानी बड़ा दूर है।
कौन राजा है ?
महाराजा सज्जनसिंहजी हैं।
पहाड़ पर महल बनवाते हैं,
शिल्पकार बुलवाते हैं,
कारीगर बुलवाते हैं,
कारीगरों का जमघट,
भिश्तियों का जमघट,
प्रतिदिन जमघट लगता है।
मजदूरों का घेरा है,

ओड़ों का जमघट है।
सर्वत्र सिपाही आता है,
और कवेलु फोड़ता है,
सिपाही आकर तेरी-मेरी (गाली-गलोज) करता है।
प्रतिदिन मजदूरों को बुलाते हैं,
सदैव जमघट मचाते हैं।
महाराणा शान्त भाव से कहते हैं,
बहुत ऊँचा महल बनाओ,
महलों पर खड़े होकर,
चित्तौड़ का किला दिखाई पड़े,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्द:—

नोवगज=नो गज, बहुत दूर। हलावट=शिल्पकार। घेरा=जमघट। ओड़= मजदूर वर्ग की एक जाति विशेष।

गीत परिचय:—

इस गीत में लूट मार, का वर्णन किया गया है और बाद में लूट मार करने वालों के खिलाफ उदयपुर के महाराणा अपनी सेना भेजते हैं, युद्ध होता है और कमजी भाई मारा जाता है किन्तु युद्ध जारी रहता है और सेना परास्त होकर भाग जाती है। यही इस गीत में बताया है।

गीत

कमजी भाई रई ने केवां बोले रे	कमजी बूजड़ा
हकरां मांय हदकड़ी बाज़ी रेई रे	,,
बारे पाडां बोरी बाज़ी रेई रे	,,
सुपन मांये ते दनकुं ऊलक पड़े रे	,,
अड़दी रे सोरी ने अड़दा सोरा रे	,,

गांमां रे लूटे ने आदमी मारे रे — कमजी बूजड़ा
अणां भीलों ते सपन वेवे कीदी रे — ,,
मानवी ते रावजी अरज़ाउ जाए रे — ,,
सपन मांय हींवारी व़ाज़ी रेई रे — ,,
मानवी आवे धामा-दौड़े रे — ,,
मानवी हिंवारी आवी लागां — ,,
हिंवारी रावजी गोकूड़े बटा — ,,
मानवी ते हाथ जोड़ी ने ऊवां — ,,
वावसी मारा म्हें ते फोली खादां — ,,
कां मानवियाँ कणे फोली खादां — ,,
हदकडी ने वोरी नां भीलां खादां — ,,
ई ते रावजी धोला माते कालुं — ,,
ई कागदियां जाए रे धामा दौड़े — ,,
कागदियुँ हलूंवर जाइ लागुं — ,,
कागदियुं दरीखाने जाई खालियु — ,,
दरीखानां मांय होलवत्ती उमराव — ,,
ई उमराव कागद खोले — ,,
यो कागदियु टपर टपर बोले — ,,
मगरां मांय वोरी व़ाजी रेई — ,,
सपन मांय लोक लूटी लिदां — ,,
ई ते भील दनकां रोलां करे — ,,
हिंवारी नुं रावजी कागद मोकले — ,,

सामड़ नुं रावजी कागद मोकले	कमजी बूजड़ा
यो रावजी बोला माते कालुं	,,
यो रावजी बीड़ियुं कागद मोकले	,,
यो कागद जाए रे धामादौड़े	,,
यो कागद उदेपुर जाई लागुं	,,
उदेपुर महाराजा वाजी रेइया	,,
यो कागदियुं दरीखानां जाई मलियुं	,,
यो कागद राजाए हाथां आलो	,,
मेवाड़ मांय सपन वाजी रेई	,,
सपन नां मानवी वेवे थाइयां	,,
मगरां नां ते भील उल्टी गियां	,,
हिंवारी नो रावजी फौज मांगे	,,
सामड़ नुं रावजी फौज मांगे	,,
फौज नहीं मोकल हो तो	,,
भील उल्टी जाही	,,
उदेपुर में राजा सजनहिंगजी	,,
राजा ते धामती फौज मोकले	,,
फौज ते केवडां नी नाले	,,
फौज हलूंवर जाई लागी	,,
हलूंवर नो रावजी रेई ने वोले	,,
सिन्दिया वाली फौज त्यांर करो	,,
या फौजड़ली वुगेलां ने हमसे	,,

हलूंवर नो रावजी फौज़ लावे कमजी बूजड़ा
या फौज पीली ने परवातां ,,
या फौज़ हदकड़ी आवी लागी ,,
आदी ने मजराआं बुगलां वाजे ,,
ई फौजे ते पाल़ बाल़वा लागी ,,
वाल़ती रे जाए ने लूटती जाए ,,
वोरी मांय कमजी ए खबर लागी ,,
कमजी भाई ते रई ने केवां बोले ,,
भाइयां मारा हई हूता हंई बैठा ,,
भाइयां मांरा हदकड़ी वाल़ी दी ,,
आंमल़ा वाल़े सौरे सांगी ढोल ,,
सं गीड़ा ने हमसे भाइला भेल़ा ,,
यो धाड़्ं ढाल़ ने तल़वारा ,,
भाइयां मारा मनसोवा नी वातां ,,
भाइयां मांरा नहीं रइया नो जोगे ,,
भाइयां मारा हदकड़ी वाल़ी दीदी ,,
कमजी भाई ते टमटेरी हणगारे ,,
कमजी भाई नी वइयर वरजां वरजे ,,
कमजी भाई ते लड़वानो हुँसिलो ,,
कमजी भाई नी माता वरजां वरजे ,,
कमजी भाई रे वाड़ा मांय धोल़ी वगड़वे लागी ,,
वाड़ा मांय ते धोल़ियां तड़ुकवे लागी ,,

कमजी भाई खोटा हकन थाइया	कमजी बूजड़ा
कमजी भाई नवलेरी रोवे लागी	,,
कां नवलेरी जीवतो रे आवी	,,
कां रे वइयर नवलेरी जीवतो रे आवी	,,
ई बूजड़ो ते धाड़ा नो मेलनार	,,
ई बूजड़ो ते टोलिया नो रमणार	,,
ई बूजड़ो ते हथैयां बोलावे	,,
ई वार ते जाए रे धामा दोड़े	,,
ई वार ते हदकड़ी जाई लागी	,,
ई वार फौजां मांय ओडाणी	,,
ई तरकां ते सोरां मांय दलियां	,,
कमजी भाई ते होनेरी हरियो	,,
धर सोड़े धर लागे	,,
एके ने हरिये तरकी मारियुं	,,
कमजी भाई तीजोरे सोड़े ने बीजो मारे	,,
कमजी भाई बे ते तरकीं मारियां	,,
कमजी भाई ने पाटां गोली लागी	,,
कमजी भाई जरमर जोला खाये	,,
भाइयां मारा कमजी मराई गियो	,,
भाइयां मारा बूभ ते मराई गियो	,,
भाइयां मारां मारी ने मुओ	,,
बन्दूकां नो भादरवो गरुड़े	,,

तलवारां नी वीजोली ज़ावुके ,,
भालडियाँ नो जरमर मेड़लो वरसे ,,
हदकड़ी मांय मसके रोलु ं लागु ं ,,
सिन्दिया वाली फौज़ नाई गई ,,
गीत जातु ं मेलो ,,

—:❀:—

अर्थः—

सब मिलकर कहते हैं—कमजी दल का प्रधान है
'हकरां' में सदकड़ी गाँव है,
बारा फलों का वोरी गाँव मुख्य है,
सपन में प्रतिदिन डाका पड़ता है, (सपनः—वर्तमान सराड़ा तहसील के चाँवड़, सेंबारी झाड़ोल, केजड़, वीरपुरा, वंडोली आदि गाँवों को मिलाकर जो क्षेत्र है उसको 'सपन' कहते हैं। मेवाड़ के इतिहास में भी यही नाम आया है।

आधे पुरुष तथा आधी महिलाएँ,
गाँव लूट लेते हैं और लोगों को मार देते हैं।
इन भीलों ने तो सपन को परेशान कर दिया है,
लोग रावजी से निवेदन करते हैं।
सपन में सेंवारी (नया नाम–सुभाष नगर) गाँव है,
लोग दौड़ते–धामते आते हैं
लोग सेंवारी आ पहुँचते हैं।
सेंवारी के रावजी झरोखे में बैठे हैं, जनता हाथ जोड़कर खड़ी है,
(निवेदन करती है)–श्रीमान् हमको तो बिल्कुल लूट लिया है।
(रावजी ने कहा)–क्यों ! किसने लूटा है ?
सदकड़ी और वोरी गाँव के भीलों ने लूटा है।

रावजी श्वेत पर काला करते हैं अर्थात् सफेद कागज पर काले अक्षर लिखते हैं किन्तु अक्षर ज्ञान नहीं होने के कारण "धोला माले कालूं" कहते हैं।

वहुत शीघ्रता से पत्र भेंजते हैं,
पत्र सलूम्बर पहुँचता है,
पत्र राजसभा में जाकर खुलता है।
राजसभा में सरदार उमराव वैठे हैं,
सरदार पत्र खोलते हैं,
पत्र को टपर-टपर (ध्वनि में) पढ़ते हैं।
पहाड़ों में चोरी गाँव है,
'सपन' में लोगों को लूट लिया है,
ये भील तो सदा ही उधम करते हैं।
सेंवारी का रावजी पत्र भेंजता है,
चाँवड का रावजी पत्र भेंजता है,
ये रावजी सफेद पर काला (पत्र) लिखते हैं,
ये रावजी वंद लिफाफे में पत्र भेंजते हैं।
यह पत्र शीघ्रता से चलता है,
पत्र उदयपुर जा पहुँचता है,
उदयपुर में महाराणा हैं।
पत्र राज सभा में जाकर मिलता है,
पत्र महाराणा के हाथों में देते हैं।
मेवाड़ में सपन' है,
'सपन' की जनता वड़ी दुःखी हो गई है,
पहाड़ी भील वदल गये हैं;
सेंवारी के रावजी सेना मांगते हैं,
चावंड के रावजी सेना मांगते हैं।
सेना नहीं भेंजोगे तो,

भील बदल जायेंगे ।
उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंहजी,
अतिशीघ्र सेना भेजते हैं ।
सेना केवड़ा की नाल से (होती हुई),
सलूम्बर जा पहँचती है ।
सलूम्बर रावजी शान्ति से कहते हैं—
सिन्धिया वाली सेना तैयार करो ।
यह सेना बिगुलों के साथ,
पीले प्रातः काल में,
सेना दोड़ती धामती आती है,
सदकड़ी आ पहुँचती है,
अर्द्ध रात्रि में बिगुलें बजती हैं,
सेना 'पाल' को जलाती है,
जलाते हुए लूट मचाती है,
बोरी (गांव) में कमजी को समाचार मिला,
कमजी साहस पूर्वक कहता है—
भाइयों ! सोये और बैठे क्यों हो (निष्क्रिय क्यों बैठे हो ?)
भाइयों सदकड़ी जलादी है,
'आमला' वाले चौराहे पर खतरे का ढोल बजता है,
ढोल की आवाज पर सब इकट्ठे हो जाते हैं,
इस दल के पास ढालें और तलवारें हैं,
विचार-विमर्श करते हैं,
भाइयों ? जीवित रहने यगेय नहीं है,
भाइयों ? सदकड़ी जलादी है ।
कमजी भाई अपनी 'टमटेरी' (एक शस्त्र) का शृङ्गार करता है,
कमजी भाई की पत्नि टोंकती है,
कमजी भाई तो लड़ने का उत्साही है,

कमजी भाई की माता मना करती है,

कमजी भाई के बाड़े में गौएँ जोर जोर से रम्भाती है,

(इससे) अपशकुन होते हैं।

कमजी भाई की नवेली रोती है,

(कमजी ने कहा–) क्यों नवेली ? जीवित आ जाऊँगा,

और तुझे 'नवलेरा' पहनाऊँगा।

यह बून्ड़ा के (कमजी) डाकू-दल का प्रधान है,

यह बून्ड़ा तो दलों का खिलाड़ी है.

यह बून्ड़ा शिकारी करता है।

यह दल दौड़ता-थामता जाता है.

नदकड़ी जा पहुँचता है.

सेना के मध्य जा फँसता है.

सैनिकों का चौराहे पर पड़ाव है.

सन्दूक पथरी लेकर आते हैं।

कमजी भाई अपना बहुमूल्य तीर,

जैसा छोड़ता है, वैसा ही लगता है.

एक तीर में ही सैनिक मार दिया गया।

कमजी तीसरा तीर छोड़ कर दूसरे को मारता है,

कमजी भाई सैनिकों को धराशायी कर रहा है.

कमजी भाई के सीने में गोली लग जाती है।

कमजी लड़खड़ाने लगा,

(किसी ने कहा–) भाइयों ! कमजी भाई मारा गया,

भाइयों ! दल का प्रधान मारा गया,

भाइयों ! (वह अनेकों को) मार कर मरा है।

बन्दूकें भाद्रपद मास के बादलों की भांति गरजती है.

तलवारों की बिजली चमकती है.

और भालों की वर्षा होती है.

सदकड़ी में भयंकर युद्ध होता है,
सिन्धिया वाली सेना भाग खड़ी हुई,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

बूभड़ा=दल का प्रधान। हुलूक=चोरी, डाका, उधम। वेवे=परेशान, दुःखी। फोली खादां=लूट लेना। पाल=भीलों की बस्तियां को मिलाकर पाल कहते हैं। सांगी=खतरे का ढोल। तड़के=जोर जोर से रम्भाना। मेलनार=प्रधान। ओडाणी=फँस गई। तरकी=सैनिक। गरूरे=गरजना। जाबुके=चमकना। मसके रोळु =भयंकर युद्ध।

गीत परिचयः—

डूँगरपुर जिले में वाणेश्वरजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। जहां सोम और माही नदियों का संगम होता है। इस स्थान पर प्रतिवर्ष मेला लगता है; जिसमें हजारों यात्रि आते हैं। एक बार मेले के समय यहां झगड़ा खड़ा होगय,ा परिणाम स्वरूप हड़ताल होगई। व्यापारियों ने इस झगड़े को शान्त करवाने के लिए डूँगरपुर, उदयपुर और खैरवाड़ा में प्रार्थना-पत्र दिया। इन तीनों स्थानों से झगड़ा नहीं निपटा तो सलूम्बर रावजी के पास प्रार्थना की और झगड़ा निपटाया गया। इस गीत में इसी का वर्णन है।

गीत

रई ने केवां बोले	वाणिया धरती राड़ो लागो
वेणेसर ने मेले	,,
वे कांटां मांथे	,,
हाटे वांदे पड़ज्यां	,,
वांदों कुण काड़े	,,

वाणिया धरती राड़ो लागो

वे सरसां ने माथे

हाटां वांदे पड़ज्यां ,,

रईने केवां वोले ,,

मेलो वांदे पड़ज्यो ,,

वांदों कुण काड़े रे ,,

डूँगरपर नो रावजी ,,

वो ते वांदों काड़े ,,

वाणियो धामा दौड़े ,,

जाए रे धामा दौड़े ,,

गीयां ठेठा ठेठ ,,

वीड़ियां ने कागदियां ,,

वावजी हाटे वांदे पड़ज्यो ,,

वे कांटा ने मांय वादों पड़ज्यो ,,

मू ते वांदो नी काढूं ,,

वाणियो डाके कागद नांके ,,

डाके धामा दौड़े ,,

उदेपर महाराणो जी ,,

वीते वांदों काड़े ,,

डाके धामा दौड़े ,,

वीड़ियुं ने कागदियुं ,,

आव्युं ठेठा ठेठ ,,

भरज्यां दरीखानां ,,

होलवत्ती उमरांव	वाणिया धरती राड़ो लागो
वीड़ियुं कागद खोले	,,
टपर टपर वांसे	,,
कागदियुं हूँ वोले	,,
वेणीसर नो मेलो	,,
वे कांटा ने माथे	,,
मेलो वांदे पड़ज्यो	,,
हाटे वांदे पड़ज्यो	,,
वांदों तो नहीं निकले	,,
लकियां ने कागदियां	,,
डाक मांय कागद नाको	,,
खेरवाड़ा नी सावणी	,,
वियां भूरज्यो वांदों काड़े	,,
डाके धामा दौड़े	,,
गीयो ठेठा ठेठ	,,
खेरवाड़ा नी सावणी	,,
भूरज्यो कुरसी वैठो	,,
भूरज्यो वंगले वैठो	,,
वीड़ियां ने कागदियां	,,
वीने हाथे जाए	,,
भूरज्युं कागद खोले	,,
टपर टपर वांसे	,,

वाणिया धरती राड़ो लागो

काग़द भूरज्यु वांसे ,,
काग़दियु हूँ बोले ,,
वेणीसर नो मेलो ,,
मेलो वांदे पड़ज्यो ,,
वे कांटा ने माथे ,,
हाट वांदे पड़ज्यो ,,
वांदो थूं काड़जे ,,
वांदो तो नहीं निकले ,,
ने राजा नो है वांदो ,,
डाक मांय काग़द नांके ,,
हलुम्बर है राजा ,,
रावजी वांदो काड़े ,,
वीड़ियु ने काग़दियु ,,
डाके धामा दौड़े ,,
गीयो ठेठा ठेठ ,,
हलूम्बर दरी खानां ,,
होल वची उमराव ,,
वीड़ियु काग़द खोले ,,
काग़दिया मांय हूँ वोले ,,
वेणी सर नो मेलो ,,
मेलो वांदे पड़ज्यो ,,
वे कांटा ने माथे

कीनो कीनो वांदो　　　　वाणिया धरती राड़ो लागो
राजा ने राजा नो वांदों　　　　,,
वांदों निकली गीयो　　　　,,
गीत जातु रे इयु　　　　,,

अर्थः—

सब मिल कर एक साथ कहते हैं—हे वणिक ! धरती पर कलह मच गया है।
बेनेश्वरजी का मेला है,
दौनों (नदियों के) किनारे किनारे।
बाजार में कुछ रूकावट पैदा हो गई हैं।
रूकावट को कौन दूर करेगा ?
दौनों नदियों के किनारे,
वाजार में कलह मच गया है !
शान्ति के साथ कहते हैं,
मेले में कलह मच गया है।
कलह कौन मिटायेगा ?
डूँगरपुर के रावजी,
वे कलह मिटाकर शान्ति स्थापित कर देंगे।
महाजन दौड़ता धामता है,
गन्तव्य स्थान पर पहुँचता है,
वन्द लिफाफे में पत्र देता है;
श्रीमान् ! वाजारों में कलह मचा हुआ है,
दौनों किनारों पर।
रावजी ने कहा—मैं इस झगड़े को नहीं निपटा सकता हूँ।
व्यापारी पत्र डाक में डाल देता है,
डाकदौड़ती धामती जाती है।

उदयपुर के महाराणा साहब,
वे झगड़े का निपटारा कर देंगे।
डाक तेजी के साथ,
निश्चित स्थान पर पहुँच जाती है।
राज-सभा भरी हुई है,
सोलह बत्तीस सरदार हैं,
बन्द पत्र को खोलते हैं।
टपर-टपर पढ़ते हैं।
पत्र क्या बोलता है?
बेनेश्वर का मेला,
दोनों किनारों पर,
मेले में झगड़ा हो गया है,
कलह नहीं मिटा है।
पत्र लिखते हैं,
पत्र डाक में डालते हैं।
खैरवाड़ा की छावनी,
वहाँ अंग्रेज झगड़ा निपटा देगा,
डाकिया दौड़ता चलता है,
गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाता है।
खैरवाड़ा की छावनी में,
अंग्रेज कुर्सी पर बैठता है,
अंग्रेज बंगले में बैठता है।
बन्द पत्र उसके हाथ में जाता है,
वह पत्र खोलता है।
टपर-टपर पढ़ता है।
अंग्रेज पत्र पढ़ता है,
पत्र में क्या लिखा है?

बेनेश्वर में मेला है,
मेले में कलह हो गया है,
दोनों नदियों के तट पर,
बाजार में कलह है,
तू कलह-शान्त कर दे ।
झगड़ा शान्त नहीं होता है,
दोनों राजाओं का झगड़ा है ।
डाक में पत्र डालते हैं ।
सलूम्बर में रावजी है,
वे रावजी कलह शान्त कर देंगे
बंद लिफ़ाफे में पत्र,
पत्र शीघ्रता से जाता है,
निश्चित स्थान पर पहुँच जाता है ।
सलूम्बर की राज-सभा में,
सोलह-बत्तीस सरदार,
पत्र को खोलते हैं,
पत्र क्या बोलता है ?
बेनेश्वर में मेला है,
मेले में झगड़ा हो गया है ।
दोनों नदियों के तट पर,
किस किस का झगड़ा है ?
एक राजा का दूसरे राजा से झगड़ा है,
झगड़ा निपट गया,
गीत समाप्त करो ।

कठिन शब्द:—

राड़ो=कलह, झगड़ा । वे कांटा=दो नदियों का संगम । वांदो=कलह, गड़बड़ी, झगड़ा आदि । हूँ=क्या । भूरज्यो=अंग्रेज ।

गीत परिचयः—

प्रसिद्ध जैन तीर्थ ऋषभदेव के पास पगल्याजी के दर्शनार्थ यात्रियों के समूह बराबर आते हैं। इसी स्थान पर मेला लगता है। प्रस्तुत गीत में इसी मेले का और ऋषभदेवजी की सवारी का वर्णन किया गया है। यह सवारी भगवान आदिनाथजी के जन्मोत्सव के उपलक्ष में निकाली जाती है। दूर दूर से दर्शनार्थी आते हैं और कई दिनों तक भीड़ भाड़ रहती है। गीत में सवारी की धूमधाम का विशेष वर्णन है।

गीत

स्ेत आठम नो मेलो है	रंग पगलां जीरे
बावसी नी असवारी है	,,
हूना सांदी नां जड़िया हाथी निकले है	,,
रूपा नीं गड़जी फूतरी निकले है	,,
हूना रूपां नां गडिया घोड़ा निकले है	,,
हाथी माते लीली-झूलें है	,,
हाथी माते रूपां नां डांडा में झंडो है	,,
भकमा केसरियो झंडो है	,,
घोड़ां माते लीली पीली झूलें हैं	,,
घोड़ा माते होनेरी सोगलो है	,,
केसरिया माते मेगाडम्मर है	,,
केसर अन्तर नां सांटा उड़ता जावे रे	,,
अन्तर नी मेंक उड़े है रे	,,
सुमर हरे ने जै जै बोले है रे	,,

काली रे वरदी नी पलटन निकले है रे रंग पगलांजी रे
धूल वा धणी नी पलटन है रे ”
मोरे ते असवारी ने वांहे पलटन है रे ”
बन्दूक ने सूरी वर्सा आवे है ”
आदा असवार ने आदा पगां आवे है ”
मानवियाँ नो मेलो मसतो आवे है ”
भारी मेलो भारी रे ”
असवारी जाए धामा दौड़े रे ”
उबी रेती रेती जाए रे
बुगलां ने हमसे सवारी जाए ”
घाटी उतार असवारी उतरी है ”
घाटी माते तो खोटा हक्कन थायां है ”
असवारी घाटी उतरी है ”
हक्कन हाउ थायां है ”
असवारी पगलांजी जाती रई रे ”
गीत जातु मेलो रे ”

—:०:—

अर्थः—

चैत्र (कृष्ण) अष्ठमी का मेला है: अत: पगल्याँजी में आनन्द छा गया है।

भगवान की सवारी है,

सोने और चाँदी से जड़े हुए हाथी निकलते हैं,

चाँदी की बनी हुई गुड़ियां निकलती है,

सोने चाँदी के बने हुए घोड़े निकलते हैं।
हाथी पर नीले तथा पीले रंग की झूल हैं,
हाथी पर चाँदी के ध्वज दंड (Pole) पर झंडा है।
भगवा तथा केसरियाँ रंग का झंडा है,
घोड़े पर नीले तथा पीले रंग की झूल हैं।
घोड़े पर सुनहरा छोगा है,
केसरिया जी (की मूर्ति) पर छत्र-चँवर हैं,
केसर एव इत्र की बून्दे पड़ती हैं।
इत्र की सुगन्ध व्याप्त हो रही है,
चँवर डुलाते हुए जय-जयकार करते हैं।
काले रंग की पौशाक पहने सैनिकों की पंक्तियाँ निकलती हैं,
धूलेव (नगर) के स्वामी (केसरियाजी) की सैनिक-वाहिनी है,
आगे सवारी और पीछे सैनिक-वाहिनी हैं।
बन्दूकें, छुरियाँ तथा बर्छियाँ आती हैं।
आधे अश्वारोही है और आधे पैदल हैं।
मनुष्यों का समूह आरहा है,
बड़ा भारी मेला है।
सवारी तेजी से चलती है,
ठहरती ठहरती जाती है।
बिगुल के साथ २ सवारी चलती है।
घाटी के उतार से सवारी जाती है,
घाटी पर अपशकुन होते हैं,
सवारी घाटी के पार उतर जाता है,
शुभ शकुन होते हैं,
सवारी पगल्यांजी पहुँच जाती है,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

मेगा डम्मर=छत्र, चँवर आदि । मेक=महक, सुगन्ध । बांहे=पीछे ।

गीत परिचयः—

चैत्र कृष्णा-अष्टमी को जैनियों के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान केसरियाजी में मेला लगता है और उस दिन भगवान का शानदार श्रृंगार किया जाता है । भील, केसरियाजी को 'कालाजी' के नाम से भी सम्बोधित करते हैं । उस दिन रोशनी आदि का सुन्दर और भव्य प्रदर्शन किया जाता है । इस गीत में उसी का वर्णन किया गया है ।

गीत

स्रेत आठम नो मेलो	रोसनीबावसीमांय रे
हाँसु नवी नवी है	,,
हांसु तार वीज़ली नी है	,,
हांसु कास़ मांय है दीवो	,,
हांसु हाटे ने बजारे	,,
हांसु आरती नी वेलां	,,
मोटी आंगी सोड़े	,,
मेला नो है दाड़ो	,,
बावसी होना नी है आंगी	,,
ईरा जड़ी है आंगी	,,
अड़ी लाख नी है आंगी	,,
आरती वेलां आंगी सड़े है	,,
आथमियां नी वेलां आंगी सड़े है	,,
आरतियां नी वेलां मीमा थाए है	,,

भारी मीमा भारी है — रोसनी बावसी मांय रे
मन्दर मांय आपां जहां — ,,
आंगी नां दरसन करहां — ,,
नीली पीली रोसनी है — ,,
लीली राती हांडी है — ,,
ऐवुं कदी न दीठूं — ,,
नवी नवी है रोसनी — ,,
नवी नवी है कला — ,,
गीत जातुं मेलो — ,,

—:॰:—

अर्थ:—

चैत्र की (कृष्ण) अष्ठमी का मेला है,अत: केसरियाजी में रोशनीहै।
नई नई प्रकार की रोशनी है,
बिजली के तारों की रोशनी है,
काच (लट्टू या बल्ब) के अन्दर दीपक है,
हाट और बाजारों में भी रोशनी है।
आरती के समय,
सबसे बड़ी 'आंगी' (बहुमूल्य रत्न जटित आभूषणों) का शृंगार होता है।
मेले का दिन है,
(अत:) भगवान के सुनहरे रंग की 'आंगी' है,
हीरों से जड़ी हुई 'आंगी' है,
भगवान के ढाई लाख की 'आंगी' है.
आरती के समय 'आंगी' धारण होती है.

सूर्यास्त के समय की बहुत महिमा होती है,
सुन्दर एवं भव्य शोभा है।
मन्दिर में जाकर हम रोशनी देखेंगे,
'आंगी' के दर्शन करेंगे।
नीली तथा पीली रोशनी है,
नीली एवं लाल रंग की चिमनियों में रोशनी है।
ऐसा कभी नहीं देखा,
नई नई तरह की रोशनी है,
नया नया विज्ञान है,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

तार-कास=बिजली के तार। आंगी=केसरियाजी की मूर्ति पर कभी कभी बहुमूल्य रत्नजटित आभूषणों का शृंगार होता है, उन आभूषणों को आंगी कहते हैं। मीमा=महिमा, शोभा। हान्डी=चिमनी, लट्टू। ऐवुं=ऐसा, इस प्रकार का। डीटुं=देखा। कला=यंत्र, विज्ञान।

—:※:—

गीत परिचयः—

प्रसिद्ध जैन तीर्थ केसरियाजी में हजारों और लाखों व्यक्ति यात्रा करने समस्त हिन्दुस्तान से आते हैं। इन यात्रियों को केसरियाजी के पंडे और पुजारी येन केन प्रकारेण ठग लेते हैं; उसी का इस गीत में वर्णन है। यात्री जिस भंडार के मुँह में भेंट डालते हैं; उस मुँह को फूलों से बन्द कर देते हैं और बाद में भेंट की गई रकम को पुजारी-पंडे निकाल लेते हैं। गीत में यात्रियों को सावधानी दी गई है।

गीत

भोळां जातरी भोळां थां मत ठगाजो धूळेव मांय रे
मगरा मांय धूळेवड़ी ,,

भारी देवता भारी   मत ठगाजे धूलेव मांय रे

कालोजा केसरियो   ,,

अणा बोलनुं है देवता   ,,

केसरियो है भगवान   ,,

हागो हाग भगवान   ,,

पटाली मांय भंडारनुं मूंडू   ,,

सप्पा-सोडुं है मूंडू   ,,

भंडार ने मुण्डे फूलां गाले   ,,

रूपियां ठगी ने लेवे   ,,

भंडार नुं नारडूं बंद करी ने रूपिया लिये   ,,

भंडारी है बड्डूं ठगारू   ,,

पुजारी है गणूं ठगारू   ,,

धूलेवना वाणिया है ठगारा   ,,

गरीब जातरी है गरीब   ,,

घणां गामांरा लोक है   ,,

झूटूं बोली ने ठगे है   ,,

पूजारूं ठगे है   ,,

गीत जातु मेलो   ,,

—:&:—

अर्थ:—

हे भोले यात्रियों ! आप धूलेव में ठगा मत जाना

पहाड़ों के बीच में धूलेव है।

बड़ा भारी देवता है,

कालाजी केसरियाजी हैं,
मौन रहने वाला देव है।
केसरिया जी भगवान हैं,
साक्षात ईश्वर ही हैं।
बरामदे में भंडार का मुँह है,
बिल्कुल छोटा मुँह है,
भंडार के मुँह में फूल भरकर,
रुपये रोक लेते है और यात्रियों को ठगते हैं।
भंडार का छेद बंद करके पैसे निकाल लेते हैं,
भंडारी बड़ा ठग है।
पुजारी भी अत्यन्त ठग है,
धूलेव के बनिये ठग हैं,
यात्री बड़े गरीब है,
अनेक स्थानों के यात्री हैं।
झूठ बोलकर ठगते हैं,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

जातरी=यात्री। अण बोलनुं=मौन रहने वाला। पटाली=पटाल, बरामदा, चौक अथवा केन्द्र का बड़ा कमरा। हागो-हाग=साक्षात, प्रत्यक्ष। सप्पा=बिल्कुल ही। नारदूं=मुँह, छेद।

—:※:—

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में केसरियाजी के मंदिर के लिये किसी सेठ द्वारा बनवाये गये किवाड़ों का वर्णन है। वर्णन में सेठ की प्रशंसा है और किवाड़ों के उनके ऊपर हुई कारीगरी का भी उल्लेख है।

कालोजी केसरियो, सेठ क्याँ नुं है रे
लकियां कागद मोकले ,,
कागद धामा दौड़े है ,,
मंदर नो नकसो मांगे है ,,
दरवाजा नो नकसो मांगे है ,,
खड़की नो नकसो मांगे है ,,
बारणां नो नकसो मांगे है ,,
मंदर नी मपती मांगे है ,,
खड़की नी मपती मांगे है ,,
बारणां नी मपती मांगे है ,,
मपती परमाणे कमाड़ गड़ावे ,,
सांदी नां कमाड़ करावे ,,
दरवाजा परवाणे ,,
खड़की परवाणे ,,
सांदी नी वारे हाक मोकलावे ,,
कमाड़ां माते फूतरी ,,
रूपा सांदी ना कमाड़ मोकलावे ,,
कमाड़ां माते पूरी गड़ाई कीदी ,,
कमाड़ां नी पारसल मोकले ,,
रेलगाड़ियां पारसल आवे ,,
पड़ावां पड़ावां पारसल आवे ,,
या पारसल ते मेवाड़ आवी लागी ,,

मेवाड़ नां लोग पूसणां पूसे सेठ क्यां नु ं है रे
या पारसल क्यां जावे क्यां आवे ,,
या पारसल ते केसरिया ने जावे ,,
या पारसाल जाए धामा दौड़े ,,
या पारसल धूलेव जाई लागी ,,
कमाडां नी पारसल वांदी आवे ,,
पारसल माय ते कमाड़ निकले ,,
मंद्र मांय ते कमाड़ वेहाड़े ,,
खड़की परमाणे कमाड़ वेहाड़े ,,
अणे हेठ ते भारी काम कीदु ं ,,
केसरिया नी जै जै बोलावे ,,
गीत जातु ं मेलो ,,

अर्थ:—

कालाजी ॐ केसरिया जी है, सेठ कहाँ का है ?
पत्र लिख कर भेजता है।
पत्र दौड़ता धामता है,
मंदिर का नक़शा मंगाता है,
दरवाजों के नक़शे मंगाता है।
खिड़कियों के नकशे मंगवाता है,
द्वारों के नकशे मंगाता है,

ॐ केसरियाजी को लोग अनेक नामों से पहिचानते हैं। जिस प्रकार केसर अधिक मात्रा में चढ़ने के कारण लोग केसरियाजी कहते हैं, उसी प्रकार मूर्ति का रंग श्याम होने के कारण कुछ लोग 'कालाजी' भी कहते हैं।

मंदिर का नाप मंगाता है,
खिड़कियों का नाप मंगवाता है,
दरवाजों का नाप मंगवाता है।
नाप के अनुसार कपाट बनवाता है,
दरवाजे के बराबर,
खिड़की के बराबर,
चाँदी की बारह सलाखें भेजता है
कपाट पर पुतलियाँ हैं,
चाँदी के कपाट भिजवाता है।
कपाटों पर सूक्ष्म कारीगरी का काम है,
कपाटों की पारसल भेजता है।
रेल गाड़ी में पारसल आती है,
पड़ाव-पड़ाव (स्टेशनों) पर रुकती हुई पारसल आती है,
यह पारसल मेवाड़ में आ पहुँचती है।
मेवाड़ के लोग प्रश्न पूछते हैं,
यह पारसल कहाँ से आरही है और कहाँ जा रही है ?
यह पारसल केसरियाजी जा रही है,
यह पारसल दौड़ती थामती जाती है,
यह पारसल धूलेव जा पहुँचती है
कपाट की पारसल बंधी हुई आती है
पारसल में कपाट निकलते हैं,
मंदिर में कपाट लगाते हैं
खिड़की के अनुसार कपाट बिठाते हैं
इस सेठ ने तो बड़ा भारी काम किया है
केसरियाजी की जय-जय बोलते हैं।

कठिन शब्दः—

कियाँनु=कहाँ का। बारणां=दरवाजे। मपतो=नाप। मांडियां=खुदाना। मोकलावे=भिजवाते है। अगे=इस।

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में एक भील के स्वप्न का वर्णन किया गया है। स्वप्नदर्शी को क्या २ दिखाई देता है; उसी को इस गीत में विस्तृत रुप से दिखाया गया है। दूसरा भील स्वप्न को मिथ्या मान कर उसकी बात मानने से इन्कार करता है।

गीत

नवलो़ वा़ग हल़कारो	धूलेव नां हाट मांय
नवुं देवता नवुं रे	"
देवता हपने आयुं रे	"
दनकुं हपनुँ आवे रे	"
सो़रां भूठी जंजाल़ आवे है	"
भाइयां मारा एक नी मानुं वा़त रे	"
मोए ते भारी हपनुं आवे रे	"
कोक मोटूं देवता वा़जे़ रे	"
मोए ते वा़ग हपने आवे रे	"
मोए ते धोलो़ घोड़ा हपने आवे रे	"
मोए ते हाथी हपने आवे रे	"
सो़रा भूठूं हपनुं आवे रे	"
भाइयां एक ते वा़त रे	"
मोए ते भारी मंदर होएणे आवे रे	"
भाइयां मारा भाटां नी खान हपने आवे रे	"
धोलो़ भाटो हपने आवे रे	"

मोए ते पाणी हपने आवे रे धुलेव नां हाट मांय
मोए ते देवता नी फौज़ हपने आवे रे ,,
मोए ते भारी नेज़ा हपने आवे रे ,,
मोए ते भारी भारी हगरा नजरे आवे रे ,,
मोए ते सेर हपने आवे रे ,,
रूपां नां कमाड़ नजरे आवे रे ,,
हूना नु इंडू नजरे आवे रे ,,
मोए ते हासु हपनु आवे रे ,,
कालु धोलु देवता हपने आवे रे ,,
सोरा झुठू हपनु झुठू रे ,,
भाइयां मारा एक नी मानु वात रे ,,
सोरा नामे लेई बोलाड़ो रे ,,
भाइयां हामलो मारी वात रे ,,
कालोजी केसरियो है रे ,,
इन्दूआँ नु मोटू देव है रे ,,
भाइयाँ मारां काले परगट थाए रे ,,
भाइयां मारा दाड़ो उगी जाए रे ,,
वाग ते फलाई जाहें रे ,,
गीत जातुं मेलो रे ,,

—:※:—

अर्थः—

धूलेव नगर में नया बाग लगाओ– धूलेव (केसरियाजी) नगर में नया नया देव है,

देव स्वप्न में आता है,
प्रतिदिन उसका स्वप्न आता है,
(दूसरे ने कहा–) झूंठा स्वप्न है,
(उसने कहा–) मैं एक भी बात (स्वप्न को असत्य) नहीं मानता ।
मुझे बड़ा भारी स्वप्न आया है,
कोई बहुत बड़ा देवता हैं,
मुझे स्वप्न में बाग दिखाई देता है,
श्वेत रंग का अश्व दिखाई देता है,
हाथी भी दिखाई पड़ते हैं ।
(दूसरे ने कहा–) यह स्वप्न असत्य है ।
(उसने कहा–) हे भाई ! मुझे स्वप्न में बहुत बड़ा मंदिर दिखाई देता है
और पत्थर की खानें दिखाई देती हैं,
सफेद पत्थर दिखाई देते हैं,
पानी दीखता है,
देवता की सेना दिखाई देती है,
मुझे बड़े बड़े ध्वज दिखाई देते हैं,
और विशाल यात्रियों के दल दिखाई देते हैं,
मुझे एक नगर दिखाई देता है,
चाँदी के कपाट दिखाई देते हैं,
सोने का कलश दिखाई देता है,
मुझे तो सच्चा सपना आता हैं,
काला और श्वेत रंग का देव स्वप्न में आता है ।
(दूसरे ने कहा–) बिल्कुल झूंठा स्वप्न है ।
(उसने कहा–)मैं मानने को तैयार नहीं हूं ।
भाइयों मेरी बात सुनो !
काले रंग के केसरियाजी हैं,

हिन्दुओंके बड़े देवता है,
कल प्रकट हो रहे हैं
हे भाइयों ! दिन उदय हो जायेगा अर्थात भाग्य खुल जायेगा
और बाग विकसित हो उठेगा
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

नवलो=नवीन। जंजाल=स्वप्न। होएणे आवे=स्वप्नावस्था में दिखाई पड़ना। नेजां=ध्वज, पताका। हगरा=यात्रियों का समूह। इंडू=शिखर का कलश।

—:※:—

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में एक भील महिला का पति जर्मन के युद्ध में भारत की ओर से गया है। छः वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी उस के पास कोई पैसा प्राप्त नहीं होने पर उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है। अपनी इस विवशता के कारण तथा अपने भरण पोषण हेतु अपने आभूषण तक वह रहन रख देती है। उसे अपने प्रियतम की स्वाभाविक स्मृति हो आती है अन्तोगत्वा वह पुनर्विवाह करने का विचार विवश होकर करती है। यह सब मनाभावना केसरियाजी के मेले में जाने के उत्साह के कारण है।

गीत

विलक ने वलुआं	भम्मर नौकरी मांय रे
धलोवियो है मेलो	,,
केसरिया नो है मेलो	,,
मेलो है हुँसिलो	,,
मानवी तें जाए	,,
मारे मेलें जावुं	,,

भम्मर नोकरी मांय रे

मारे लवरां फाटां

मारे सुनड़ी फाटी ,,

मारे कापड़ी फाटी ,,

मारे घाघरों फाटो ,,

हूँ पेरी ने जाउं ,,

सुड़ली फूटी हायरो टूटो ,,

भूखे मरती दोयरो गेणो मेले ,,

भूखे मरती तेड़ियु गेणो मेले ,,

दन की ओली आवे ,,

जरमर लड़ाई थाए है ,,

स्यार सो वर थाइयां है ,,

रूपिया नहीं मोकले है ,,

हूँ पेरी ने मकलाऊं है ,,

हूँ खाई ने रेऊं है ,,

मूं ते जाती रेऊं है ,,

गीत जातुं मेलो है ,,

—:❀:—

अर्थ:—

विलक और वलुआ (गाँव) है, भँवर (पतिदेव) नौकरी करने गये हैं,

धूलेव का मेला है,

केसरियाजी का मेला है,

बड़ा उत्साह-वर्धक मेला है।

लोग मेले में जाते हैं,
मुझे भी मेले में जाना है।
मेरे वस्त्र फटे हुए हैं,
मेरी चूनड़ी (साड़ी) फट गई है,
मेरी कंचुकी फट गई है,
मेरा घाघरा फट गया है,
क्या पहन कर मेले में जाऊँ ?
चूड़ियाँ और हार टूट गये हैं,
भूख के कारण हाँसली गिरवे रखती है,
भूख के कारण तेड़िया (गले का आभूषण) गिरवे रखती है।
प्रतिदिन (पति की) स्मृति आती है,
जर्मनी में युद्ध हो रहा है, (वहाँ इसका पति भी गया है,)
चार छः वर्ष बीत गये हैं,
किन्तु रुपये नहीं भेजता है।
क्या पहन कर शृंगार करूं ?
क्या खाकर जीवित रहूँ ?
मैं तो अन्यत्र चली जाऊँ अर्थात् पुनर्विवाह करलूं।
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

भम्मर=पति या प्रियतम। लवरां=वस्त्र। कापड़ो=कंचुकी। हायरो, दोयरो=हार, कंठ के आभूषण। मकलाउँ=शृंगार करना अर्थात् प्रसन्न होना। बीजे=अन्यत्र।

—:ॐ:—

गीत परिचयः—

जावर माता के मन्दिर-निर्माण के सम्बन्ध में यह गीत रचा गया है। गीत में बताया गया है कि मन्दिर बनाने के लिये राज्य की ओर से सिपाही, कारीगरों को और मजदूरों को घेर कर ले जाते थे और काम

करवा कर मजदूरी देते थे। काम करने के लिये औजार आदि भी राज्य की ओर से दिये जाते थे। प्रस्तुत गीत में यही बताया गया है।

गीत

जावर माता सेल मंडाए मजूरी कुण जाए रे
सपाई आयु थापड़ा फोड़े ,,
दनकु सपाई आवे है ,,
सपाई आयु थारी मारी करे ,,
सपाई आयु कड़ी दिये ,,
सपाई आयु हांकळी दिये ,,
सपाई आयु आदमी रोके ,,
गाम गाम ना आदमी घेरे ,,
जावु तीते जावु है रे ,,
देशां रे देशां ना है रे ,,
कारीगर बुलावे है रे ,,
भारी मंदर मंडाए है रे ,,
धोला भाटा मांगे है रे ,,
वहियरां ने आदमी हादे रे ,,
पाकां पेटियां आळे है रे ,,
जावर मोटु सेर है रे ,,
माता अम्बा बाजे रे ,,
देवां मांड्लो देवता रे ,,

दुखियां नो दुःख काटे रे मजूरी कुण जाथरे
मारी देवता बाजे रे ,,
मारी मारी डूंगरा जावे है रे ,,
जावुं तीने जावुं है रे ,,
दनका टुकड़ा आले है रे ,,
रोकड़ा टुकड़ा आले है रे ,,
रोती पावड़ा आले है रे ,,
बइरांए हुँडली आले है रे ,,
टांकी हथोड़ा आले है रे ,,
घर घर देवी फरे है रे ,,
दन की डोकरी आवे है रे ,,
मारी देवता बाजे है रे ,,
हिन्दवां नुं देव है रे ,,
मगरां में माता रे है रे ,,
डूंगला दरा में है रे ,,
माता नीसी रेवे है रे ,,
देवियां ने खोड़ा पाड़े है रे ,,
जट ने मन्दर मांडो रे ,,
बीन जातुं मेलो रे ,,

—:※:—

अर्थः—

जावर माता के विशाल मन्दिर का निर्माण होता है—मजदूरी कौन जाता है ?

सैनिक आता है और कवेलु तोड़ता है।
प्रतिदिन सैनिक आता है,
सिपाही तेरी-मेरी (गाली-गलौज) करता है।
सिपाही दरवाजा बंद कर देता है,
सिपाही कुंडी (सांकल) चढ़ा देता है,
सिपाही आदमियों को रोक देता है,
गाँव-गाँव के आदमियों को निकालता है।
जाना तो पड़ेगा ही,
देश-देश के,
कारीगर बुलवाते हैं।
बड़े-बड़े मन्दिर निर्माण होरहे हैं,
सफेद् पत्थर मंगाते हैं,
स्त्रियों और पुरुषों को बुलाते हैं,
भोजन के लिए काफी कच्ची सामग्री देते हैं।
जावर बड़ा भारी नगर है।
देवताओं में श्रेष्ठ देव है,
(वह) दुखियों का कष्ट निवारण करते हैं।
बड़े-बड़े देवता हैं।
अनेक यात्रियों के समूह जाते हैं,
जाना तो है ही,
प्रतिदिन के पैसे देते हैं,
रोकड़ पैसे देते हैं।
गेंती-फावड़े देते हैं,
महिलाओं को टोपली देते हैं,
टांकी, हथौड़े आदि औजार देते हैं।
घर घर में देवी घूमती है,
बुढ़िया (देवी) प्रतिदिन आती है।
बड़े बड़े देवता हैं,

हिन्दुओं के देव हैं ।
पर्वतों में देवी है,
हींगला नामक दर्रे में है,
गुफा के भीतर है ।
देवी तो लोगों को सताती है,
मन्दिर जल्दी बनाओ,
गीत समाप्त करो ।

थापड़ा=१ वेलु । कड़ी=दरवाजा, बाँस अथवा किसी पतली लकड़ी की किंवाड़ियों के अस्थाई द्वार को कड़ी कहते हैं । हांकली=सांकल, कुण्डी । पेटिया=कच्ची भोजन सामग्री । हंगरा=यात्रियों का समूह । साजां=गुफा । खोड़ा=दुःख देना, सताना ।

—:❀:—

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में मेले का उल्लास और मनोरंजन का अच्छा वर्णन है । विशेषकर 'डोलर' के आनन्द का वर्णन किया गया है । इसी के साथ ही साथ डोलर के अकस्मात् टूट जाने से रंग में भंग हो जाता है । परन्तु फिर भी मेले में जाने की उमंग और उसके लिये महिलाओं और पुरुषों के शृंगार की व्यग्रता बड़ी स्वाभाविक और रोचक है ।

गीत

रई ने केवां बोले डोलर कड़का करे
ओगणा वाले सोरे ,,
ओली की आमेली ,,
ओली नो है मेलो ,,
धनजी है गेराइयो ,,
मेला नो हुँसिलो ,,

आपणे मेले जावुं	डोलर कड़का करे
जोड़ी रे जोड़ी नां	,,
सो़रिये आपणे मेले जावुं	,,
पीली़ ने परवाते	,,
सो़री हूँ पेरी ने जाए	,,
भावी वाली़ ख़ूनड़ी	,,
भावी वाली़ घाघरो	,,
ख़ूनड़ी नो रमसो़ल़	,,
घाघरा नो गमरोल़	,,
धनजी है गेराइयो	,,
धनजी केड़े सु़री राखे	,,
धनजी हाथे तल़वार लिये	,,
हाथे डिगिया लेवे	,,
करगाणी नी कोली़	,,
पीली़ ने परवाते	,,
जावे धामा दौड़े	,,
सो़रियां वाली जोड़ी	,,
जोड़ी रे जोड़ीनी	,,
जाए रे धामा दौड़े	,,
गीयां रे ठेठा ठेठ	,,
मसके होली रंमे	,,
दोवड़ गेर रंमे	,,

ढोल कुण्डी नो मड़को — ढोलर-कड़का करे
जोगी गलाल उड़े — ,,
धनजी ढोलर नो हुँसिलो — ,,
ढोलर धनजी वेहे — ,,
सोरा सोरी वेहे — ,,
जोड़ी रे जोड़ी ना डला — ,,
मसके ढोलर हिसे — ,,
थोड़ा ढोलर हिसे — ,,
ढोलरियुं घुमावो — ,,
धनजी गेराइयो हिसे — ,,
ढोलर भागी गइयो — ,,
धनजी मरी गियुं — ,,
मोल्यिां हाथ भागी गइया — ,,
गुड़ली चढ़ी गई — ,,
केगां नहीं वेहां — ,,
धनजी हे गेराइयो — ,,
वो ने मरी गियो — ,,
गीत जातुं मेलो — ,,

अर्थः—

सब मिल कर एक साथ कहते है ढोलर कट कट की आवाज करती है.
ओगणा (ग्राम) के चौराहे पर।

होली के दिन हैं,
होली का मेला लगा है।
धनजी गेराइया (एक युवक) है,
(वह) मेले में जाने का इच्छुक है,
मेला बड़ा उत्साह वर्धक है।
हमें मेले में जाना है,
सबकी समान जोड़ी है,
लड़कियाँ कहतीं हैं—हमें भी मेले में जाना है।
यह लड़की क्या पहन कर जाती है ?
भौजाई वाली चूनड़ी (साड़ी)
भौजाई वाला घाघरा।
चूनड़ी चमकती है,
और घाघरे का घिराव है।
धनजी गेराइया,
वह अपनी कमर में छुरी रखता है,
और हाथ में तलवार लेता है,
तथा हाथ में डंडा भी लेता है,
पीठ पर तरकस रखता है।
पीले प्रातःकाल के समय में,
वे सब दौड़ते धामते जाते हैं,
लड़कियों की टोली है
और सबकी समान जोड़ी है (समवयस्क हैं)
दौड़ते धामते चलते हैं,
गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाते हैं।
अत्यन्त प्रसन्नता के साथ होली खेलते हैं,
दो मंडल बनाकर गैर खेलते हैं
ढोल व नगारों की आवाज होती है।

मीट्टी की गुलाल (धूल) उड़ती है।
धनजी डोलर में झूलने का बड़ा इच्छुक था,
वह डोलर में बैठता है,
अन्य लड़के एवं लड़कियाँ भी बैठती हैं,
बहुत जोर से डोलर झूलती है।
तेज घोड़ों की गति के समान डोलर चलती है,
डोलर फिराते हैं,
धनजी गेराइया झूलता है,
डोलर टूट जाती है,
धनजी की मृत्यु हो जाती है।
लड़कियों के हाथ टूट जाते हैं,
चूड़ियाँ टूट जाती हैं।
(डोलर में) कभी नहीं बैठेंगी,
धनजी गेराइया,
वह तो मर गया,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

कड़का करे=कट कट आवाज करना। ओलृी=होलीं। रमझोल=आभा, चमक। सरी=छुरी। डीणिया=डंडे। मड़कों=आवाज। हिंसे=झूलना। वदी गई=टूट गई।

———

गीत परिचयः—

प्रस्तुत गीत में महाराणा उदयसिंह का शिव-मन्दिर-निर्माण करने की घटना का उल्लेख है। जिसका नाम कमलेश्वर महादेव का मन्दिर है। बादशाह द्वारा चढ़ाई करने पर रक्षार्थ दुर्ग एवं मन्दिर का निर्माण राणा द्वारा होता है और बादशाह मेवाड़ पर चढ़ाई करने में

असफल रहता है। वह मेवाड़ की दुर्गम पहाड़ों में मार्ग नहीं खोज पाता है। इसमें पिछड़ी जातियाँ ईश्वर में कितना अटूट विश्वास करती थी, इसका परिचय मिलता है।

गीत

राई ने केवां बोले ई आवर मगरो वाजी रहयो

बड़ी भाइर ने मांई

कुणे राजा वाजे

राजा उदेहिंगजी है

ई पातसा लड़तु आवे

ई मगरां मगरां आवे

ई लड़ाई करतु आवे

ई आवर मगरे आईतु

ई फरी हरी ने जुए

ई भोली भांइर जुए

हांसु मोटा मोटा मगरा

यो मेरे मेरे फरे

ई तो भारी मगरो वाजे

हाँसु राजाए मादेव हपने आवे

ई तो कमलेसर मादेव

हांसु धोली दाई हपने आवे

हांसु राजा दाई सोड़जे

हांसु राजा गढ़ सणाइजे

राजा थारे आर नी आवे
राजा आवर मगरो माले
राजा थारे आर नी आवे
मेवाड़ जीती जाई
राजा ते ढाई सोड़े
वासरा हूदी ढ़ाई सोड़े
हांसु राजा दूद सोड़े आवर मगरो आजी रइयो
हांसु मादेवजी दनको दूद सोड़े
हांसु कमलनात नु मन्दर
राजा ते कोट सणाड़े
ई राजा पाएग वन्दाड़े
ई राजा सैर वसाड़े
ई राजा बूरज वन्दाड़े
ई राजा वको काटे
ई वातसा मेरे मेरे फरे
वाट ते वन्द देकाए
ई वातसा फरी फरी ने थाकू
ई वातसा आरी गियु
ई वातसा जातु रइयु
ई राजा जीती गियो
गीत जातु मेलो

—:※:—

अर्थः—

सब मिलकर एक साथ कहते हैं, यह आवर पर्वत बहुत बड़ा है
और विस्तृत भाड़ेर क्षेत्र में है।
यहाँ का कौन राजा है ?
महाराणा उदयसिंह हैं।
बादशाह युद्ध करने के लिए आता है,
वह पहाड़ों को पार करता हुआ आता है,
वह युद्ध करता हुआ आता है,
और आवर पर्वत पर आ पहुँचता है।
बादशाह घूम-फिर कर देखता है,
गरीब भाड़ेर-क्षेत्र में,
बड़े-बड़े पहाड़ हैं,
वह आस-पास घूमता है,
यह (आवर) तो बहुत विशाल पर्वत है,
महाराणा को स्वप्न में शिवजी दृष्टि गोचर होते हैं,
यह कमलेश्वर महादेव है।
श्वेत धेनु दिखाई देती है,
हे राजा ! तुम एक गौ अर्पित करो।
और एक गढ़ बनाओ,
हे राजा ? आवर पर्वत में,
तुझे पराजय नहीं मिलेगी,
मेवाड़ विजयी होगा।
राजा गौ समर्पित करता है।
बछड़े सहित गौ देता है,
राजा दूध चढ़ाता है,
शिवजी पर प्रतिदिन दूध चढ़ाता है।
राजा मन्दिर निर्माण करवाता है,

कमलेश्वर महादेव का मन्दिर है।
राजा एक बहुत बड़ी दीवार बनवाता है,
अश्व शाला का निर्माण करवाता है।
नगर बसाता है,
बुर्ज बनवाता है,
राजा बहुत कष्ट सहन करता है।
बादशाह पर्वत का चक्कर लगाता है।
किन्तु मार्ग नहीं मिलता।
बादशाह घूमता-घूमता थक जाता है,
और निराश हो जाता है।
बादशाह चला गया।
महाराणा की विजय हो गई,
गीत समाप्त करो।

कठिन शब्दः—

ई=यह । मगरो=पर्वत । बातसा=बादशाह । मेरे मेरे=चारों ओर । धोली=श्वेत रंग की । दाई=गाय । वासरा=बछड़ा । हूदी=सहित । पाएग=अश्व-शाला । वसाड़े=बसाना । वको=कष्ट । आरी गियु=पराजित हो गया।

—:※:—